लोक शिक्षण संचालनालय, म.प्र. भोपाल
द्वारा वर्ष 2023 के लिए जारी प्रश्न बैंक

GPH®

# प्रश्न बैंक

(रेमेडियल माड्यूल के प्रश्न-उत्तर सहित)

उत्तर सहित

## इतिहास

@anarwah450
Students unity

असली ... पृष्ठ पर G P H देखकर ही खरीदें।

...A PUBLISHING HOUSE, INDORE (M.P.)

जी पी एच®

# प्रश्न बैंक

## इतिहास : कक्षा-11वीं

[समय : 3 घण्टे] प्रश्न-पत्र ब्लूप्रिन्ट (Blue Print of Question Paper) [पूर्णांक : 80

| क्र. | इकाई एवं विषय वस्तु | इकाई पर आवंटित अंक | वस्तुनिष्ठ प्रश्न | अंकवार प्रश्नों की संख्या | | | कुल प्रश्न |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | 1 अंक | 2 अंक | 3 अंक | 4 अंक | |
| 1. | लेखन कला और शहरी जीवन | 12 | 4 | 2 | - | 1 | 3 |
| 2. | तीन महाद्वीपों में फैला हुआ साम्राज्य | 10 | 5 | 1 | 1 | - | [illegible] |
| 3. | यायावार साम्राज्य | 10 | 5 | 1 | 1 | [illegible] | [illegible] |
| 4. | तीन वर्ग | 10 | 5 | 1 | 1 | [illegible] | [illegible] |
| 5. | बदलती हुई सांस्कृतिक परंपराएँ | 12 | 4 | 2 | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| 6. | मूल निवासियों का विस्थापन | 12 | 4 | [illegible] | [illegible] | [illegible] | 3 |
| 7. | आधुनिकीकरण के रास्ते | 10 | 5 | [illegible] | [illegible] | - | 2 |
| 8. | मानचित्र | 04 | [illegible] | [illegible] | [illegible] | 1 | 1 |
| | कुल योग | [illegible] | [illegible] | [illegible] | 12 | 16 | 18+5=23 |

**प्रश्न पत्र निर्माण हेतु विशेष निर्देश-**

- 40% वस्तुनिष्ठ प्रश्न, 40% विषय[illegible]त्मक प्रश्न होंगे।

1. प्रश्न क्रमांक 1 से 5 तक [illegible] विकल्प 06 अंक, रिक्त स्थान 7 अंक, सही जोड़ी 06 अंक, एक वाक्य में उत्तर [illegible] अंक संबंधी प्रश्न होंगे। प्रत्येक प्रश्न पर 1 अंक निर्धारित है।
2. वस्तुनिष्ठ प्रश्नों [illegible] प्रश्नों में आंतरिक विकल्प का प्रावधान होगा। यह विकल्प समान इकाई/उप इकाई [illegible] वाले होंगे। इन प्रश्नों की उत्तर सीमा निम्नानुसार होगी-

| | | |
|---|---|---|
| [illegible] | 02 अंक | लगभग 30 शब्द। |
| [illegible] प्रश्न | 03 अंक | लगभग 75 शब्द। |
| [illegible] णात्मक प्रश्न | 04 अंक | लगभग 120 शब्द। |

3. [illegible] नाई स्तर- 40% सरल प्रश्न, 45% सामान्य प्रश्न, 15% कठिन प्रश्न।

@amarwah450
Subscribe YouTube channel - Amarwah unity

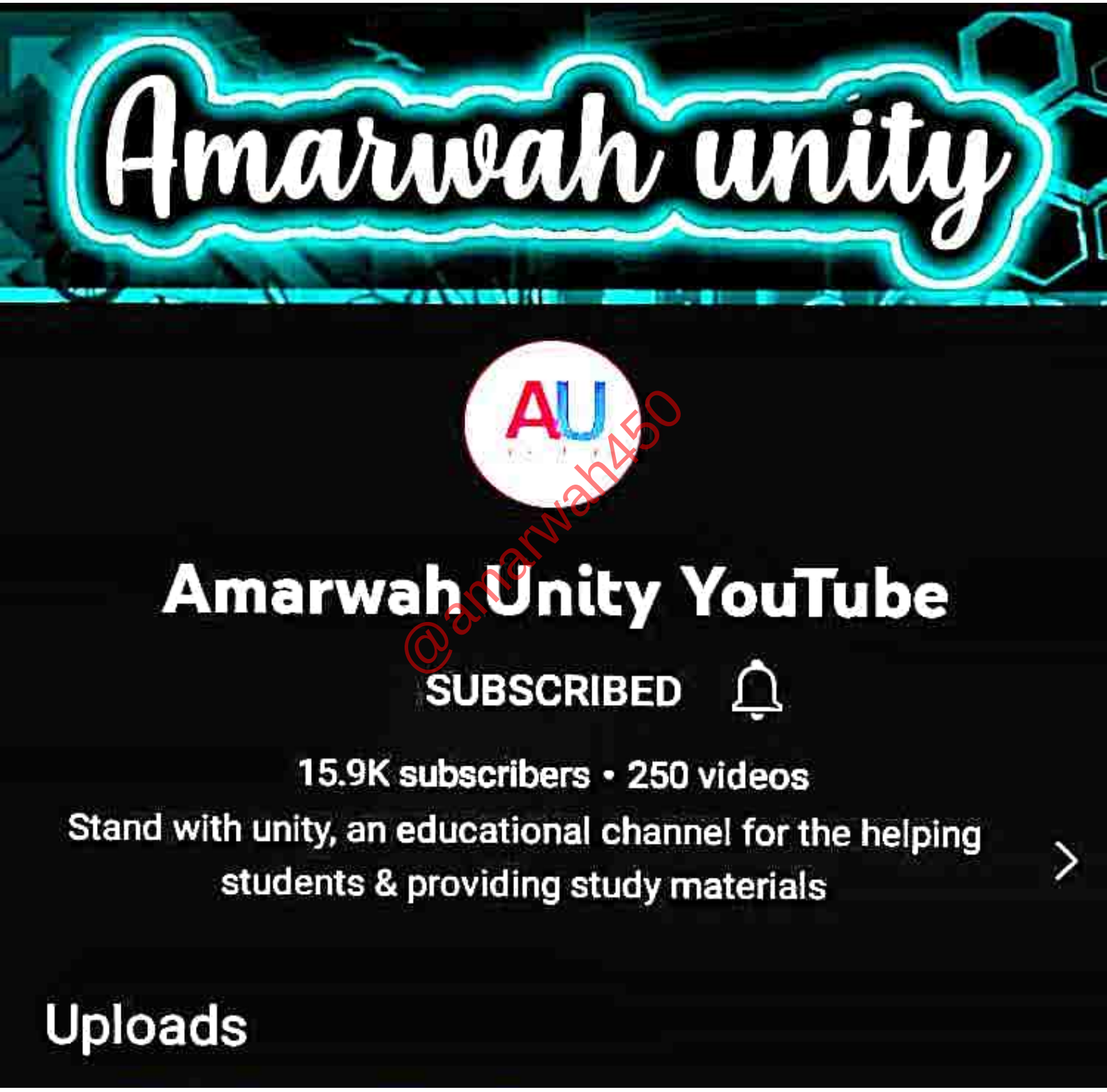
Amarwah unity
AU
Amarwah Unity YouTube
SUBSCRIBED
15.9K subscribers • 250 videos
Stand with unity, an educational channel for the helping students & providing study materials
Uploads
@amarwah450

AU

## Students Unity

public channel

**Description**

Paid promotion available contact 📞📞
@Unity450_bot
Instagram https://instagram.com/amarwah450

Join our PDF Channel https://t.me/amarwah455

Paid promotion available contact :-
@Unity450_bot

t.me/amarwah450

Invite Link

**Notifications**

On

@amarwah450

# इतिहास - 11वीं

## पाठ्यक्रम में से हटाई गई विषय वस्तु

| क्र. | पुस्तक का नाम | खण्ड | कम किये गये अध्याय/ विषयवस्तु का नाम |
|---|---|---|---|
| 1. | विश्व इतिहास के कुछ विषय | अनुभाग एक - प्रारंभिक समाज | विषय-1- समय की शुरुआत से |
| | | अनुभाग दो -साम्राज्य | विषय-4- इस्लाम का उदय और विस्तार (लगभग 570-1200 ई.) |
| | | अनुभाग तीन - बदलती परम्पराएँ | विषय-8-संस्कृतियों का टकराव |
| | | अनुभाग चार - आधुनिकीकरण की ओर | विषय-9-औद्योगिक क्रांति |

## अध्याय-2 लेखनकला और शहरी जीवन

### वस्तुनिष्ठ प्रश्न

**प्रश्न 1. विकल्प पुनकर लिखिए-**

**1. विश्व में शहरी जीवन की शुरुआत सबसे पहले कहाँ हुई थी?**
(अ) चीन में (ब) मेसोपोटामिया में
(स) मिस्र में (द) भारत में

**2. मेसोपोटामिया सभ्यता का विकास कहाँ हुआ?**
(अ) दजला और फरात नदी की घाटी में
(ब) यांग्सी नदी की घाटी में
(स) सिंधु नदी की घाटी में
(द) नील नदी की घाटी में

**3. मेसोपोटामिया काल के मंदिरों की कौन सी विशेषता नहीं थी?**
(अ) मंदिरों की दीवारें भीतर और बाहर की ओर मुड़ी हुई होती थी
(ब) देवता आस्था और शक्ति का प्रतीक होते थे
(स) विजेता राजा मंदिरों को कीमती भेंट अर्पित करता था
(द) मेसोपोटामिया काल में राजा का स्थान मंदिरों से ऊंचा था

**4. वर्काशीर्ष किससे संबंधित था?**
(अ) चित्रकला (ब) मूर्तिकला
(सी) संगीत कला (द) कुछ भी नहीं

**5. मेसोपोटामिया को वर्तमान में किस नाम से जाना जाता हैं?**
(अ) ईरान (ब) इराक
(सी) मिस्र (द) चीन

**6. लेखनकला का आविष्कार सर्वप्रथम कहाँ हुआ?**
(अ) रोमानी में (ब) मिस्र में
(स) मेसोपोटामिया में (द) यूनानियों में

**7. मेसोपोटामिया के लोगों की लिपि किस नाम से जानी जाती है?**
(अ) कीलाकार लिपि (ब) रोमन लिपि
(स) देवनागरी लिपि (द) इनमें से कोई नहीं

**8. मेसोपोटामिया के लोग किस पर लिखा करते थे?**
(अ) पेड़ों के पत्तों पर (ब) ताम्र पत्रों पर
(स) मिट्टी की पट्टिकाओं पर (द) कागज पर

**9. कीलाकार लिपि के अक्षरों को किस वर्ष में पहचाना व पढ़ा गया?**
(अ) 1930 ईस्वी में (ब) 1900 ईस्वी में
(स) 1830 ईस्वी में (द) 1850 ईस्वी में

**10. मेसोपोटामिया की देवी इन्ताना किससे संबंधित थी?**
(अ) वायु (ब) जल (स) प्रेम और युद्ध (द) अग्नि

**उत्तर-** (1)-(ब), (2)-(अ), (3)-(द), (4)-(ब), (5)- (ब), (6)-(स), (7)-(अ), (8)-(स), (9)-(द), (10)- (स)।

**प्रश्न 2. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-**

(1) कुम्हार चाक का प्रयोग सर्वप्रथम ..... मेसोपोटामिया में किया गया था।
(2) राजा जिमरीलिन का राजमहल ..... में स्थित था।
(3) हम्मूराबी ..... का प्रमुख शासक था ।
(4) उर, उरुक, मारी नगरों का संबंध ..... सभ्यता से है।
(5) विश्व की प्रथम कानून संहिता का निर्माण ..... ने कराया था।
(6) मेसोपोटामिया की कीलाकार लिपि को ..... ने सबसे पहले पढ़ा था।
(7) बेबीलोन में हैंगिंग गार्डन का निर्माण ..... के नाम से जाना जाता है।
(8) प्रदर्शिनक प्रणाली ..... सभ्यता से संबंधित है।
(9) सारगोन ..... का शासक था।

@amarwah450

(10) मेसोपोटामिया के चन्द्र देवता ..... नाम से जाने जाते थे।

**उत्तर-** (1) मेसोपोटामिया, (2) अरच्च, (3) बेबिलोनिया, (4) नगर, (5) हम्मूरावी, (6) मेसोपोटामिया, (7) हम्मूरावी, (8) मेसोपोटामिया, (9) अक्कद, (10) ऊर।

**प्रश्न 3. एक शब्द/वाक्य में उत्तर दीजिए-**

(1) मेसोपोटामिया के लोगों का प्रमुख व्यवसाय क्या था?
(2) कुम्हार के चाक का प्रयोग सर्वप्रथम कहाँ हुआ था?
(3) हम्मूरावी कहाँ का शासक था?
(4) मेसोपोटामिया के प्रमुख देवी-देवताओं के नाम बताओ?
(5) मेसोपोटामिया के किस भाग में नगरों का विकास हुआ?
(6) कांसा कौन-कौन से धातुओं का मिश्रण है?
(7) मेसोपोटामिया की सबसे पुरानी भाषा कौनसी थी?
(8) असुरबनिपाल के पुस्तकालय में कितने मूल ग्रंथ हैं?
(9) विश्व को मेसोपोटामिया की सबसे बड़ी देन क्या है?
(10) मेसोपोटामिया में पूजा का केंद्र बिंदु कौन होता था?

**उत्तर-** (1) खेती करना (2) मेसोपोटामिया (4) सूर्य देवता, आकाश देवता (6) तांबा और राँगा (7) सुमेरियन (8) 30,000 (9) किलाक्षर लिपि (10) देवी-देवता।

**प्रश्न 4. सत्य/असत्य बताएँ-**

(1) मेसोपोटामिया की सभ्यता सिंधु नदी के किनारे विकसित हुई थी।
(2) जिगुरात का तात्पर्य मंदिरों से है।
(3) सरगोन बेबीलोन का शासक था।
(4) असुरबनिपाल का पुस्तकालय निनवे में स्थित है।
(5) ऊर नगर का उत्खनन 1830 के दशक में किया गया था।
(6) उसक नगर मेसोपोटामिया के सबसे पुराने मंदिर नगरों में से एक है।
(7) हम्मूरावी की विधिसंहिता के अनुसार कानून अमीर व गरीब सभी के लिए समान था।
(8) मेसोपोटामिया के लोग पहले पत्ते पर लिखा करते थे।
(9) मेसोपोटामिया की लिपि कीलाकार लिपि कहलाती है।
(10) मेसोपोटामिया की प्रथम मातृभाषा सुमेरिया थी।

**उत्तर-** (1) असत्य (2) असत्य (3) असत्य (4) सत्य (5) सत्य (6) सत्य (7) असत्य (8) असत्य (9) सत्य (10) सत्य।

**प्रश्न 5. सही जोड़ी बनाइए-**

| (I) कॉलम-(अ) | कॉलम-(ब) |
|---|---|
| (1) सारगोन | (अ) महाकाव्य |
| (2) हम्मूरावी | (ब) असीरिया |
| (3) हम्मूरावीपाल | (स) बेबीलोन |
| (4) जिमरीलीम | (द) सुमेरिया |
| (5) गिल्गेमिश | (ई) मारी |

**उत्तर-** (1) (द), (2) (स), 3 (ब), 4 (ई), 5 (अ)।

| (II) कॉलम-(अ) | कॉलम-(ब) |
|---|---|
| (1) हम्मूराबी का कानून | (अ) विशाल मंदिर |
| (2) जिगुरात | (ब) प्राचीन भाषा |
| (3) सुमेरियन | (स) विधि संहिता |
| (4) इर | (द) प्रेम और युद्ध |
| (5) इन्नाना | (ई) चन्द्र |

**उत्तर-** (1) (स), (2) (अ), (3) (ब), (4) (ई), (5) (द)।

## अति लघु उत्तरीय प्रश्न

**प्रश्न 1. मेसोपोटामिया शब्द का शाब्दिक अर्थ क्या है?**

**उत्तर-** फारस की खाड़ी के उत्तर में स्थित आधुनिक इराक को प्राचीन काल में 'मेसोपोटामिया' के नाम से जाना जाता था। "मेसोपोटामिया" नाम यूनानी भाषा के शब्दों 'मेसोस' अर्थात् मध्य और 'पोटेमस' अर्थात् नदी से मिलकर बना है। इस प्रकार यूनानी भाषा में 'मेसोपोटामिया' शब्द का अर्थ 'दो नदियों के मध्य का क्षेत्र' है। इन दो नदियों के नाम हैं- दजला और फरात। अतः जो भू-भाग दजला (Tigris) और फरात (Eurphrates) नदियों के बीच में स्थित है, उसे ही 'मेसोपोटामिया' कहते हैं। मेसोपोटामिया को सभ्यता विश्व की प्राचीनतम् सभ्यताओं में से एक है। विश्व में शहरी जीवन की शुरूआत मेसोपोटामिया में ही हुई थी। प्राचीन काल में मेसोपोटामिया अपनी सम्पन्नता, लेखन कला, शहरी जीवन, साहित्य, गणित एवं खगोल विद्या के लिए जाना जाता था। दक्षिणी मेसोपोटामिया में 5000 ई. पू. से बस्तियों का विकास होने लगा था। कालान्तर में इन बस्तियों में से कुछ ने प्राचीन शहरों का रूप ले लिया था। इस क्षेत्र के शहरीकृत दक्षिणी भाग को 'सुमेर' (Sumer) और अक्कद (Akkad) कहा जाता था। 2000 ई. पू. के पश्चात् जब बेबीलोन यहाँ का एक महत्वपूर्ण शहर बन गया तब इस क्षेत्र को बेबीलोनिया कहा जाने लगा।

**प्रश्न 2. मेसोपोटामिया किन दो नदियों के मध्य स्थित है?**

**उत्तर-** मेसोपोटामिया दजला और फरात नदियों के मध्य स्थित है।

**प्रश्न 3. मेसोपोटामिया की खोज कब एवं किसके द्वारा की गई?**

**उत्तर-** 19 वीं सदी के आरम्भ में ही सर लियोनार्ड वूली ने ईरान के अति प्राचीन नगर ऊर के उत्खनन द्वारा कतिपय महत्वपूर्ण अवशेष प्राप्त किये। इस नगर की खुदाई में मिट्टी की तख्तियाँ, इमारतों के खण्डहर, विभिन्न कलात्मक वस्तुएँ तथा शासकों की समाधियाँ आदि प्राप्त हुई। उत्खनन में प्राप्त

@amarwah450

विभिन्न वस्तुओं व शिलालेखों को पढ़ने के फलस्वरूप मेसोपोटामिया की महान सभ्यता मानव प्रकाश में आयी।

**प्रश्न 4. मेसोपोटामिया में अन्य कौन-कौन सी सभ्यताओं का विकास हुआ?**

उत्तर- मेसोपोटामिया में चार सभ्यताओं का विकास हुआ- (i) सुमेरिया, (ii) बेबीलोन, (iii) असीरिया (iv) कैल्डिया।

**प्रश्न 5. कीलाकार लिपि क्या है?**

**उत्तर-** कीलाक्षर लिपि एक अत्यधिक प्राचीन लिपि है। इसके अक्षर देखने में कील जैसे दिखाई पड़ते हैं, इसलिए इस लिपि को 'कीलाक्षर लिपि' के नाम से पुकारते हैं। गीली मिट्टी की ईंटों अथवा पट्टिकाओं पर कठोर कलम या छेनी से टंकित किए जाने के कारण इस लिपि के अक्षरों की आकृति स्वाभाविक रूप से कील जैसी हो जाया करती थी।

**प्रश्न 6. मेसोपोटामिया में पाई गई मिट्टी की पट्टियों की संख्या कितनी थी?**

उत्तर- 1800 ई. पू. के आसपास की कुछ पट्टिकाएँ मिली है इनमें गुणा और भाग की तालिकाएँ, वर्ग तथा वर्गमूल और चक्रवृद्धि ब्याज की सारणियाँ दी गई है। उनमें 2 का वर्गमूल का जो मान दिया गया है। वह 2 के वर्गमूल के वास्तविक मान से थोड़ा सा भिन्न है।

उदाहरण- $1+24/60+51/60^2+10/60^3$

अगर आप इसे हल करे तो इसका उत्तर 1.41421126 होगा जो इसके सही उत्तर 1.41421356 से थोड़ा सा भिन्न है।

**प्रश्न 7. लेखन कला की शुरुआत किस शासक के द्वारा की गई?**

उत्तर- लेखन कला की शुरुआत सुमेर (दक्षिण मेसोपोटामिया की एक प्राचीन सभ्यता थी) में लिखित भाषा का पहली बार आविष्कार 3100 ई. पूर्व में हुआ था।

**प्रश्न 8. हौज क्या था?**

उत्तर- मेसोपोटामिया की सभ्यता में, हौज एक छोटा सा गड्ढा होता था, जो घरों के आंगन में बनाया जाता था, ताकि वर्षा का जल की निकासी के समय बहने वाला पानी हौज में चला जाए और तेज वर्षा होने पर आसपास की कच्ची गलियों में ज्यादा कीचड़ ना हो जाए। हौज में पानी और मल जमा होता था।

**प्रश्न 9. ऊर नगर की खुदाई कब हुई थी इसमें किसके प्रमाण मिले थे?**

उत्तर- ऊर नगर की खुदाई 1920 और 1930 के दशक में सर लियोनार्ड वूली द्वारा की गई। ऊर नगर में टेढ़ी-मेढ़ी व सँकरी नालियाँ पाई गई जिससे यह पता चलता है कि पहिए वाली गाड़ियां वहां के अनेक घरों तक नहीं पहुँचा सकती थी। ऊर में नगरवासियों के लिए एक कब्रिस्तान थी, जिसमें शासकों तथा जन साधारण की समाधियाँ पाई गई।

**प्रश्न 10. स्टेपी क्या है?**

**उत्तर-** स्टेपी यूरेशिया के समशीतोष्ण क्षेत्र में स्थित विशाल घास के मैदानों को कहा जाता है। यहाँ पर वनस्पति जीवन घास फूस और छोटी झाड़ों के रूप में अधिक और पेड़ों के रूप में कम देखने को मिलता है। यह पूर्वी यूरोप में युक्रेन से लेकर मध्य एशिया तक फैले हुए है।

**प्रश्न 11. गिल्गेमिश महाकाव्य से क्या ज्ञात होता है?**

उत्तर- गिल्गेमिश नामक महाकाव्य से यह जानकारी मिलती है कि मेसोपोटामिया के लोगों को अपने नगरों पर गर्व था। ऐसा कहा जाता है कि गिल्गेमिश ने राजा एनमर्कर के पश्चात् अनेक नगरों पर शासन किया था। गिल्गेमिश एक महान वीर था जिसने दूर-दूर के प्रदेशों पर विजय प्राप्त कर अपने शासन का विस्तार कर लिया था।

लेकिन वह अपने एक वीर मित्र की अचानक मृत्यु से बहुत दुखी हो गया और अमरत्व की खोज में निकल गया। उसने दुनिया भर में अमरत्व की खोज की, लेकिन वह सफल न हो सका अन्त में वह अपने नगर उरुक लौट आया। एक दिन वह जब अपने आप को सांत्वना देने के लिए नगर की चारदीवारी के पास भ्रमण कर रहा था, तभी उसकी दृष्टि उन पकी हुई ईंटों पर पड़ी जिनसे उनकी नींव डाली गई थी। वह बहुत भाव विभोर हो गया। यह कहानी यह बताती है कि गिल्गेमिश को अपने नगर में सांत्वना मिलती है, जिसे उसकी प्रजा ने बनाया था।

**प्रश्न 12. मेसोपोटामिया का सबसे पहला ज्ञात मंदिर कौन सा था?**

**उत्तर-** मेसोपोटामिया का सबसे पहला ज्ञात मंदिर एक छोटा सा देवालय था, जो कच्ची ईंटों से बना हुआ था।

**प्रश्न 13. मारी राज्य में कौन-कौन से खानाबदोश समुदाय के लोग आकर बसे थे?**

उत्तर- इस क्षेत्र में रहने वाली महत्त्वपूर्ण जनजातियों में मुंडा और संताल थे, यद्यपि ये उड़ीसा और बंगाल में भी रहते थे। थे। कुछ और दक्षिण में कोरागा, बेतर मारवार और दूसरी जनजातियों की विशाल आबादी थी। खेतिहर और यहाँ तक कि जमींदार बन चुके थे।

**प्रश्न 14. मेसोपोटामिया के शहरीकरण की कोई दो विशेषताएँ बताइए?**

उत्तर- मेसोपोटामिया में शहरीकरण की विशेषताएँ-

(i) इसमें माल की आवाजाही और संचार, मेसोपोटामिया खाद्य में समृद्ध था, लेकिन इसमें खनिज संसाधन कम थे।

@amanvah450

(ii) शिल्प, व्यापार और सेवाओं के अलावा, कुशल परिवहन शहरी विकास के लिए भी महत्वपूर्ण था।

(iii) शहरों में अनाज ले जाने के लिए पशुओं का उपयोग किया जाता था। सबसे सस्ता परिवहन पानी था।

**प्रश्न 15. क्यूनिफॉर्म या कीलाकार का शाब्दिक अर्थ बताइए।**

उत्तर- क्यूनीफॉर्म लेटिन शब्द क्यूनियस जिसका अर्थ खूँटी और फॉर्म जिसका अर्थ आकार है से बना है। इस लिपि का प्रयोग सबसे पहले 30वीं सदी ईसापूर्व में सुमेर सभ्यता में उभरा और इसकी कुछ पूर्वज लेखन विधियों के मानचित्र भी मिले है। सभी समाजों की अपनी भाषा होती है। इन भाषाओं में ध्वनियाँ अपना अर्थ बताती है। इसे मौखिक भावाभिव्यक्ति कहते हैं। लिखना इससे उतना अलग नहीं है जितना हम समझते है। लिखने में उच्चारित ध्वनियों को संकेतों व चिन्हों से प्रकट किया जाता है। मेसोपोटामिया में पहली पट्टिकाएँ (Tablet) मिली है। वे लगभग 3200 ई.पू. की है। इनमें कुछ चित्र व संकेत है और संख्याएँ भी दी है। बैलों, रोटियों व मछलियों आदि की 5000 सूचियां प्राप्त हुई है। दक्षिण शहर उरुक से आने-जाने वाली चीजें है। यह प्रतीत होता है कि वहाँ लेखन कार्य तब शुरू हुआ जब चीजों का हिसाब-किताब लेन-देन का हिसाब रखा जाने लगा।

**प्रश्न 16. जिगुरात किसे कहा जाता था?**

उत्तर- जिगुरात शब्द से तात्पर्य है- 'ऊँचा बना'। वेल्स के अनुसार, "जिगरात ऐसे अनेक मंजिलों वाले भवन को कहते है जिसकी ऊपरी मंजिलें उत्तरोत्तर निचली मंजिलों की अपेक्षा छोटी होती जाती हैं और ऊपर चढ़ने के लिये विशेष सीढ़ियों का प्रबंधन होता है, जो बाहर से स्पष्ट दिखाई पड़ता है। ऐसे मंदिर बहुत दूर से ही दिखाई देने लगते हैं।"

**प्रश्न 17. वार्काशीर्ष के बारे में बताइए।**

उत्तर- वार्काशीर्ष- यह एक स्त्री का सिर था जो 3000 ई.पू. में उरुक नगर में संगमरमर को तराशकर बनाया गया था। इसकी आंखों और भौंहों में नीले लाजवर्त तथा सफेद सीपी और काला डामर की जुड़ाई की गई थी।

**प्रश्न 18. शिमार का शाब्दिक अर्थ बताइए।**

उत्तर- शिमार का आशय है कि सुमेर ईंटों से बने शहरों की भूमि-मेसोपोटामिया में पुरातत्वीय खोज सन् 1840 में हुई। वहाँ एक उरुक व दूसरा मारी में उत्खनन कार्य कई सालों तक चलता रहा। इन उत्खननों से सैकड़ों की तादात में इमारतें, मूर्तियाँ, कब्र, मुद्राएँ, औजार व आभूषण प्राप्त हुए। महत्वपूर्ण बात यह थी कि यहाँ हजारों की संख्या में लिखित दस्तावेजों का भी अध्ययन किया जा सकता है। बाइबिल के प्रथम भाग ओल्ड टेस्टामेंट में भी कई जगह इस जगह का जिक्र है, इसीलिए यूरोपियों के लिये ये काफी महत्वपूर्ण था। ओल्ड टेस्टामेंट की 'बुक ऑफ जेनेसिस' में 'शिमार' (Shimaar) का वर्णन है। जिसका मतलब है 'सुमेर' ईंटों से बनी भूमि। यूरोपीय यात्री व विद्वान मेसोपोटामिया को एक तरह से पूर्वजों की धरती मानते थे। सन् 1873 में ब्रिटिश म्यूजियम द्वारा खोज अभियान किया गया जिसका खर्च एक समाचार पत्र ने उठाया। इस खोज में मेसोपोटामिया के एक पट्टिका की खोज करनी थी जिस पर बाइबिल में जल प्लावन (Flood) का उल्लेख किया।

**प्रश्न 19. मारी और ऊर के बारे में लिखिए।**

उत्तर- मारी- मारी का विशाल राजमहल वहाँ के शाही परिवार का निवास स्थान तो था ही, साथ ही वह प्रशासन और उत्पादन, विशेष रूप से कीमती धातुओं के आभूषणों के निर्माण का मुख्य केन्द्र भी था।

ऊर- यह उन नगरों में से एक था जहाँ सबसे पहले खुदाई की गई थी। ऊर एक ऐसा नगर था जिसके साधारण घरों की खुदाई 1930 के दशक में सुव्यवस्थित ढंग से की गई थी। उसमें टेढ़ी-मेढ़ी व संकरी नालियाँ पाई गई जिससे पता चलता है कि पहिए वाले गाड़ियाँ वहाँ के अनेक घरों तक नहीं पहुँच सकती है। अनाज के बोरे और ईंधन के गट्ठे संभवतः गधे पर लादकर घर तक लाए जाते थे।

घरों के बारे में कई तरह के अंधविश्वास प्रचलित थे। ऊर में नगरवासियों के लिए एक कब्रिस्तान था, जिसमें शासकों तथा जनसाधारण की समाधियाँ पाई गई हैं।

## विश्लेषणात्मक प्रश्नोत्तर

**प्रश्न 1. मेसोपोटामिया की भौगोलिक स्थिति का वर्णन कीजिए।**

उत्तर- मेसोपोटामिया इराक का एक पहाड़ी भाग है। इसके दक्षिण में फारस की खाड़ी है, जो इसे समुद्र के विशाल भाग से संयुक्त करती है। इसके अतिरिक्त इसके दक्षिण पश्चिम में मिस्र ईरान स्थित है। इराक एक भौगोलिक विविधता का देश है। इसके पूर्वोत्तर क्षेत्र में ऊंचे-नीचे, हरे-भरे मैदान है, जो कालान्तर में वृक्षों से आच्छादित पर्वत शृंखलाओं के रूप में फैलते गए। यह क्षेत्र स्वच्छ पानी के झरनों एवं जंगली फूलों से परिपूर्ण है। इस क्षेत्र में पर्याप्त वर्षा भी होती है, जिससे खेती भी अच्छी होती है। इस इलाके में लगभग 7000 ई. पू. से 6000 ई. पू. के मध्य खेती-बाड़ी शुरू हो गई थी। उत्तरी भाग में ऊँची भूमि है, जहाँ स्टेपी-घास के मैदान है; यह क्षेत्र पशुपालन के लिए काफी उपयुक्त है, यहाँ के लोगों की आजीविका के लिए पशुपालन खेती की तुलना में अधिक

@anarvah450

अच्छा साधन है। पूर्वी भाग में दक्षिण मेसोपोटामिया की भाषा में चिन्हों की संख्या सैकड़ों में थी और चिन्ह भी अत्यधिक जटिल थे, इसलिए मेसोपोटामिया की कीलाकार लिपि बहुत कम लोग ही पढ़-लिख सकते थे। ऐसा माना जाता है कि व्यापार तथा लेखन की व्यवस्था सबसे पहले राजा द्वारा ही की गई थी। जीवन, व्यापार और लेखन कला के बीच सम्बन्धों को उरुक के एक प्राचीन राजा 'एनमर्कर' के सन्दर्भ में लिखे गए एक सुमेरियन महाकाव्य में स्पष्ट किया गया है।

**प्रश्न 2. मेसोपोटामिया की मोहरों के बारे में लिखिए।**

**उत्तर- मोहर : एक शहरी शिल्प-कृति-** भारत में, प्राचीनकाल में पत्थर की मोहरें होती थी जिन पर चिन्ह अंकित किए गए होते थे। लेकिन मेसोपोटामिया में, पहली सहस्त्राब्दी ई. पू. के तक पत्थर की बेलनाकार मोहरें, जो बीच में आर-पार छिदी होती थी, एक तीली लगाकर गीली मिट्टी के ऊपर घुमाई जाती थी और इस प्रकार उनसे लगातार चित्र बनता जाता था। ये अत्यंत कुशल कारीगरों द्वारा उकेरी जाती थी और कभी-कभी उनमें ऐसे लेख होते थे, जैसे—मालिक का नाम, उसके इष्टदेव का नाम और उसकी अपनी पदीय स्थिति, आदि। मेसोपोटामिया के लोग मिट्टी की पट्टिकाओं का प्रयोग लिखने के लिए करते थे। लिखने वाला चिकनी मिट्टी को गीलाकर गूंधता था फिर व्याप एक जैसी आकार वाली पट्टिका तैयार करता था। इसका सावधानी पूर्वक निर्माण करता था, ताकि इसे एक हाथ हमें पकड़ सके। पट्टिकाओं को धूप में सूखाया जाता था और वह मिट्टी के बर्तनों की भाँति मजबूत हो जाती थी। जब इन पट्टिकाओं पर लिखा हिसाब-किताब पूर्ण हो जाता तो उसे फेंक दिया जाता था। इन पट्टिकाओं पर सरकंडे की नोंक से नम सतहों पर कीलाकार चिन्ह (Cuneiform) बना होता था। ये पट्टिकाएँ जब सूख जाती तो इन पर नया चिन्ह या लिखाई नहीं की जा सकती थी।

**प्रश्न 3. जिमरीलिन का मारी स्थित राजमहल के बारे में संक्षिप्त परिचय दीजिए।**

**उत्तर-** मेसोपोटामिया में मारी स्थित राजा जिमरीलिन (1810-1760 ई. पू.) का राजमहल शाही परिवार का निवास स्थान था। यह प्रशासन तथा उत्पादन का प्रमुख केंद्र था। इसके अतिरिक्त यह मूल्यवान धातुओं के आभूषणों के निर्माण का भी प्रमुख केंद्र था। मारी स्थित जिमरीलिन का महल अपने समय में इतना अधिक प्रसिद्ध था कि उत्तरी सीरिया का एक छोटा राजा उसे देखने के लिए आया था। वह मारी के राजा जिमरीलिन के शाही मित्र का परिचय-पत्र लाया था। खुदाई में प्राप्त दैनिक सूचियों में ज्ञात होता है कि राजा की भोजन की मेज पर प्रतिदिन अत्यधिक मात्रा में खाद्य पदार्थ रखे जाते थे। इसमें रोटी, माँस, मछली, फल तथा बीयर और शराब सम्मिलित थे। सम्भवतः राजा अपने अन्य मित्रों के साथ भोजन करता था। राजमहल में केवल एक ही प्रवेशद्वार था। यह प्रवेशद्वार उत्तर की ओर बना हुआ था। उसमें बड़े खुले सहन सुंदर पत्थरों से जड़े हुए थे। राजा विदेशी अतिथियों तथा अपने लोगों से सभागृह में मिलता था। वहाँ के भित्तिचित्रों को देखकर आगंतुक आश्चर्य में पड़ जाते थे। यह राजमहल एक विशाल क्षेत्र में था जो 2.4 हेक्टेयर क्षेत्र में फैला हुआ था।

**प्रश्न 4. लेखन कला को विस्तार से समझाइए।**

**उत्तर-** प्रत्येक समाज की अपनी भाषा होती है। इस भाषा के द्वारा कुछ उच्चरित ध्वनियाँ अपना अर्थ बताती हैं। इस प्रकार की अभिव्यक्ति को मौखिक भावाभिव्यक्ति कहा जाता है। लेखन भी भावाभिव्यक्ति का मौखिक साधन है, लेकिन यह थोड़ा सा अलग होता है। लेखन या लिपि में उच्चारित ध्वनियाँ प्रकट होती है, जो दृश्य संकेतों अथवा चिन्हों के तौर पर प्रस्तुत की जाती हैं।

मेसोपोटामिया की परम्परागत कथा में व्यापार व लेखन सर्वप्रथम राजा के द्वारा किया गया शहरी जीवन, लेखन, व्यापार के मध्य संबंधों को उरुक के एक पुराने शासक एनमर्कर (Enmerkar) के विषय में लिखा गया महाकाव्य में स्पष्ट किया गया उरुक अत्यंत सौन्दर्य पूर्ण शहर था इसे शहरी ही कहा जाता था।

सुमेर व्यापार की एक पहली घटना शासक एनमर्कर के साथ जोड़ा जाता है। महाकाव्य में वर्णन है कि उन दिनों व्यापार व लेखन कोई नहीं जानता था। एनमर्कर राजा ने अपने शहर में मंदिर बनाने का काम करवाया व सजाने के लिये बहुमूल्य रत्न पत्थर, धातुएं मँगाना चाहता था। उसने इस कार्य के लिए अपना राजदूत अरट्टा नामक शासक के पास भेजा।

दूत ने राजा के आदेशानुसार रात में चाँद तारों की रोशनी व दिन में सूरज की रोशनी में आगे बढ़ता गया। रास्ते में ऊँचे-नीचे पहाड़ों को लांघता जब वह पहाड़ पर था तब 'सूसा' नगर के लोग छोटे चूहे की तरह लगे अर्थात् नीचे घाटी की सभी चीजें छोटी दिखीं। उसने 6 पर्वत मालाएँ और फिर सात पर्वत पार किये।

दूत अरट्टा के मुखिया से चाँदी व लाजवर्द नहीं ला पाया। उसने इसके लिये उरुक राजा की तरफ से धमकियाँ भी दीं। अंत दूत इतना चकराया कि अपनी बात राजा को व्यक्त नहीं कर पाया।

तब राजा एनमर्कर ने अपने हाथों से चिकनी मिट्टी से पट्टिकाएं तैयार कीं। उस समय शब्द नहीं लिखे जाते थे तब दूत ने अरट्टा को लिखी पट्टिका हाथ में जाकर दी। उच्चारित शब्द कील थे अर्थात् कीलाकार शब्द थे। हालांकि इस घटना को सत्य नहीं कहा जा सकता, लेकिन मान्यताओं के अनुसार व्यापार व लेखन राजा के द्वारा प्रारंभ हुआ।

**प्रश्न 5. मेसोपोटामिय के कृषि व्यवसाय के बारे में लिखिए?**

**उत्तर-** मेसोपोटामिया के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि था। कुम्हार के चाक का प्रयोग इसी सभ्यता में हुआ। मेसोपोटामिया के लोगों का आर्थिक जीवन सम्पन्न और सुखी था। यहां की भूमि उपजाऊ होने के कारण यहाँ के लोगों का प्रमुख व्यवसाय कृषि था। यहां गेहूं, जौ और मक्का प्रमुख रूप से उगाए जाते थे। मेसोपोटामिया के लोगों का दूसरा प्रमुख व्यवसाय पशुपालन था। इनके पालतू पशुओं में गाय, बैल, भेड़ व बकरी आदि प्रमुख थे। यहाँ के लोग सम्भवतः घोड़े से परिचित नहीं थे। मेसोपोटामिया में उद्योग धन्धे उन्नत अवस्था में थे। मेसोपोटामिया के लोग अनेक प्रकार की दस्तकारियाँ भी जानते थे। कपड़ा बुनना उनका मुख्य उद्योग था। सोने, चाँदी, तांबा, कांसा और शीशा आदि धातुओं की अनेक वस्तुं मेसोपोटामिया में बनाई जाती थीं। यहाँ के लोग चाक की सहायता से सुन्दर बर्तन भी बनाते थे। उद्योग-धन्धों के साथ-साथ यहाँ के लोगों का व्यापार भी उन्नत अवस्था में था। यहाँ के लोग विदेशों से भी व्यापार किया करते थे। इनका व्यापार पश्चिम में भूमध्य सागर व पूर्व में सिन्धु नदी तक फैला हुआ था। यहाँ के लोग बिदेशों से सोना, चाँदी, ताँबा तथा बहुमूल्य लकड़ी आदि मँगाते थे और अनाज, आभूषण तथा वस्त्र आदि बिदेशों को भेजते थे।

**प्रश्न 6. मेसोपोटामिया के शहरीकरण का महत्त्व स्पष्ट कीजिए।**

**उत्तर-** (1) शहर और नगरों में लोगों के रहने के साथ-साथ यहाँ की अर्थव्यवस्था में खाद्य, उत्पादन, व्यापार और उत्पादन आदि शामिल है।

(2) शहरीकरण अर्थव्यवस्था में एक मजबूत सामाजिक संगठन होता है।

(3) मेसोपोटामिया के शहरों में लोग लकड़ी, तांबा, राँगा, चाँदी, सोना, सीपी तथा विभिन्न प्रकार की कीमती पत्थरों को तुर्की ईरान अथवा खाड़ी पार देशों से मँगाते थे और इसके बदले में वे कपड़ा, कृषिजन्य उत्पाद काफी मात्रा में निर्यात करते थे।

(4) पुराने मेसोपोटामिया की नहरें और प्राकृतिक जलधाराएँ छोटी-बड़ी बस्तियों के बीच माल के परिवहन का अच्छा मार्ग थी।

(5) मेसोपोटामिया के लोग अनेक देवी-देवताओं की पूजा करते थे। मंदिरों के आसपास कस्बे या शहर बस जाते थे। प्रत्येक नगर में एक मुख्य मंदिर होता था।

**प्रश्न 7. लेखन कला का विकास किस तरह हुआ विस्तार से समझाइए एवं मेसोपोटामिया में बहुत कम लोग पढ़े-लिखे थे इसका क्या कारण था बताइये।**

**उत्तर-** मेसोपोटामिया में खुदाई के बाद जो लिखित पट्टिकाएँ प्राप्त हुई हैं, वे लगभग 3200 ई. पू. की है। उन पट्टिकाओं में चित्र जैसे- चिह्न और संख्याएँ दी गई हैं। वहां बैलों, मछलियों और रोटियों आदि की लगभग पांच हजार सूचियां प्राप्त हुई, जो वहां के दक्षिणी शहर उरुक के मंदिरों में आने वाली और वहां से बाहर जाने वाली चीजों की होंगी।

स्पष्टतः लेखन कार्य तभी शुरू हुआ जब समाज को अपने लेन-देन का स्थायी हिसाब रखने की आवश्यकता पड़ी, क्योंकि शहरी जीवन में लेन-देन अलग-अलग समय पर होते थे। उन्हें करने वाले भी कई लोग होते थे और सौदा भी कई प्रकार के माल के बारे में होता था।

मेसोपोटामिया के लोग मिट्टी की पट्टिकाओं पर लिखा करते थे। लिपिक चिकनी मिट्टी को गीला करता था और फिर उसे गूंथकर और थापकर एक ऐसे आकार की पट्टी का रूप दे देता था, जिसे वह आसानी से अपने एक हाथ में पकड़ सके। वह सावधानीपूर्वक उसकी सतह को चिकना बना लेता था फिर सरकण्डे की तीली की तीखी नोक से वह उसकी नम चिकनी सतह पर कीलाकार चिह्न बना देता था। जब ये पट्टिकाएँ धूप में सूख जाती थी तो पक्की हो जाती थी और वे मिट्टी के बर्तनों जैसी मजबूत हो जाती थी। जब उन पर लिखा हुआ कोई हिसाब असंगत हो जाता था तो उस पट्टिका को फेंक दिया जाता था। इस प्रकार प्रत्येक सौदे के लिए चाहे वह कितना ही छोटा हो एक अलग पट्टिका की आवश्यकता होती थी। मेसोपोटामिया के खुदाई स्थलों पर बहुत-सी पट्टिकाएँ मिली हैं, इसी सम्पदा के कारण आज हम मेसोपोटामिया के विषय में इतना कुछ जानते हैं।

लगभग 2600 ई. पू. के आस-पास वर्ग कीलाकार हो गए और भाषा मछली सुमेरियन थी। उस समय लेखन का प्रयोग हिसाब-किताब रखने के लिए ही नहीं किया जाता था, बल्कि शब्दकोश बनाने, भूमि के हस्तांतरण को कानूनी मान्यता प्रदान करने, राजाओं के कार्यों का वर्णन करने और कानून में उन परिवर्तनों को प्रकट करने के लिए किया जाने लगा।

2400 ई. पू. के पश्चात् कीलाकार अक्षर, संकेत भाषा सुमेरियन का स्थान धीरे-धीरे अक्कादी भाषा ने ले लिया। अक्कादी भाषा में कीलाकार लेखन की परम्परा ईस्वी सन् की प्रथम सदी तक अर्थात् 2000 से अधिक वर्षों तक चलती रही।

**लेखन पद्धति-** जिस ध्वनि के लिए कीलाक्षर या कलाकार चिह्न का प्रयोग किया जाता था वह एक अकेला व्यंजन या स्वर नहीं होता था (जैसे अंग्रेजी वर्णमाला में m या a), लेकिन अक्षर (Syllables) होते थे (जैसे अंग्रेजी में put;, या -la- या -ln-)। इस प्रकार, मेसोपोटामिया के लिपिक को बहुत-से चिह्न सीखने पड़ते थे और उसे गीली पट्टी पर उसके सूखने से पहले ही लिखना होता था। लेखन कार्य के लिए अत्यन्त कुशलता की आवश्यकता होती थी, इसलिए लिखने का कार्य अत्यन्त महत्त्व रखता था।

@amarwah450

**प्रश्न 8. मेसोपोटामिया के शहरीकरण के लिए उत्तरदायी विभिन्न परिस्थितियों के बारे में लिखिए।**

उत्तर- व्यापार के द्वारा ही नगरों में बनने वाला माल ग्रामों में पहुँचता है और ग्रामों से कच्चा माल तथा खाद्यान्न शहरों में पहुँचता है। उदाहरण के लिए मेसोपोटामिया में अच्छी लकड़ी, ताँबा, राँगा, सोना, चाँदी, विभिन्न प्रकार के पत्थर आदि तुर्की ईरान से आयात करते थे। इसके स्थान पर मेसोपोटामिया से कपड़ा तथा कृषि संबंधी उत्पाद अन्य देशों को निर्यात किए जाते थे। शहरी विकास के लिए लेखन कला की अहम् भूमिका रही है। इसका कारण यह है कि हिसाब-किताब की व्यवस्था के बिना व्यापार की किसी प्रकार की प्रगति संभव नहीं है। निस्संदेह लेखन कला के विकास ने मेसोपोटामिया में नगरों के उदय में महत्वपूर्ण योगदान दिया। लेखन कला के साथ-साथ शहरीकरण के लिए सुव्यवस्थित प्रशासनिक व्यवस्था भी अतिआवश्यक है। व्यापार की प्रगति के लिए शांति और सुरक्षा की स्थापना कुशल प्रशासन द्वारा ही संभव है। इस संबंध में उल्लेखनीय है कि प्रारंभिक युग में जीवन निर्वाह के लिए आवश्यक वस्तुओं के अतिरिक्त अन्य वस्तुओं के उत्पादक मुख्य रूप से शासक वर्ग और मंदिरों पर ही निर्भर होते थे। प्रशासक वर्ग केवल कानून और व्यवस्था का संचालन ही नहीं करते थे, अपितु श्रम-विभाजन को भी नियंत्रित करते थे।

निस्संदेह श्रम विभाजन ने ही शहरीकरण की गति को बल दिया। नगरी जीवन और लोगों का एक स्थान पर बसना तभी संभव हो पाता है जब अनेक लोग विभिन्न गैर-खाद्यान्न उत्पादक रोजगारों, उदाहरण के लिए धातुकर्म, मुहर, नक्काशी, प्रशासन, मंदिर सेवा आदि में लगे हुए हों। ऐसी स्थिति में शहरी अर्थव्यवस्था में सामाजिक संगठन का होना नितांत आवश्यक है। इसका कारण यह है कि शहर के निर्माताओं को अपने-अपने उद्योगों के लिए विभिन्न वस्तुओं की आवश्यकता होती है जिन्हें केवल किसी एक स्थान से प्राप्त नहीं किया जा सकता। इसी प्रकार एक ही व्यक्ति सभी प्रकार की वस्तुओं के निर्माण में कुशल नहीं हो सकता। यही कारण है कि औद्योगिक एवं व्यापारिक विकास में श्रम विभाजन का पालन अतिआवश्यक हो जाता है। कुशल परिवहन व्यवस्था भी शहरीकरण के लिए अतिआवश्यक होती है। परिवहन व्यवस्था अच्छी होने पर ग्रामों से पर्याप्त मात्रा में अनाज शहरों में भेजा जा सकता है और शहरों में तैयार वस्तुओं को ग्रामों तक पहुँचाया जा सकता है। मेसोपोटामिया की नहरें तथा प्राकृतिक जल संसाधन छोटी-बड़ी बस्तियों के बीच परिवहन के अच्छे साधन थे। यही कारण है कि उन दिनों फरात नदी व्यापार के विश्व-मार्ग का कार्य करती थी। अतः उपरोक्त विवेचना के आधार पर कहा जा सकता है कि शहरीकरण के विकास में प्राकृतिक उर्वरता और खाद्य उत्पादन के उच्च स्तर के साथ-साथ अनेक अन्य कारण भी उत्तरदायी थे।

**प्रश्न 9. मेसोपोटामिया के शहरी जीवन का वर्णन कीजिए।**

उत्तर- शहरी जीवन की शुरुआत मेसोपोटामिया में हुई थी। यह शहर फरात और दजला दो नदियों के बीच स्थित है। यह प्रदेश आजकल इराक गणराज्य का हिस्सा है। मेसोपोटामिया की सभ्यता अपनी संपन्नता, शहरी जीवन, विशाल एवं समृद्ध साहित्य, गणित एवं खगोल विद्या के लिए प्रसिद्ध है। इसके शहरीकृत दक्षिणी भाग को सुमेर और अक्कद कहा जाता था। 2000 ई.पू. के बाद जब बेबीलोन एक महत्वपूर्ण शहर बन गया तब दक्षिणी क्षेत्र को बेबीलोन कहा जाने लगा।

1100 ई.पू. में जब असीरियाइयों ने उत्तर में अपना राज्य कायम कर लिया तो उस क्षेत्र को असीरिया कहा जाने लगा। उस प्रदेश की प्रथम ज्ञात भाषा सुमेरियन यानी सुमेरी थी। दजला-फरात की घाटी अपनी उर्वरता के लिए प्रसिद्ध थी। यहाँ खाने-पीने की वस्तुएँ बहुतायत में उपलब्ध थीं। खेती के अलावा पशुपालन भी होता था। जिससे उन्हें माँस, दूध, ऊन इत्यादि वस्तुएँ मिलती थीं। नदियों से, वहाँ वे मछलियाँ पकड़कर लाते थे वहीं खजूर जैसे पेड़ों से, फल मिल जाते थे। मेसोपोटामिया में सनाज संगठनों में विभक्त था। हर संगठन का अपना अलग-अलग व्यवसाय था। वहाँ के लोग ईंधन, धातु, लकड़ी और पत्थर से सम्बद्ध थे। माल की आवाजाही के लिए परिवहन की व्यवस्था थी। यहाँ 3200 ई.पू. के आसपास लेखनकला का विकास हुआ था। यहाँ के लोगों की लिपि कीलाकार थी। ये लोग चिकनी मिट्टी का प्रयोग लेखन के लिए करते थे। मेसोपोटामिया में शहर मुख्यतः तीन प्रकार के पाये गये हैं-(i) वैसे शहर जो मंदिर के चारों ओर बसे होते थे, (ii) वैसे शहर जो व्यापारिक केन्द्र के रूप में थे, (iii) तीसरे तरह के शहर मुख्यतः शाही थे। नगरों में समाधि स्थल भी होते थे परन्तु कुछ लोग अपने-अपने घरों में भी शवों को दफना देते थे। नगर के चारों ओर सुरक्षा के लिए प्राचीरें भी हुआ करती थीं।

**प्रश्न 10. मेसोपोटामिया की नगर योजना का वर्णन कीजिए।**

उत्तर- नगर नियोजन- मेसोपोटामिया में महलों और पैतृकों को समर्पित मंदिरों के चारों ओर नगरों का निर्माण होता था, क्योंकि सिंधु सभ्यता में दुर्ग के पूर्वी भाग में नगरों का निर्माण हुआ जो अधिक सुनियोजित एवं ग्रिड प्रणाली में बसाए गए थे। 3500 ईसा पूर्व तक सुमेरिया में केन्द्रीय शासन स्थापित हो गया था उर, उरुक, किश, निप्पुर, लगाश, उम्मा आदि इस सभ्यता के प्रमुख नगर थे। उर के राजा उर एंगर, लगाश के

@amarwah450

Students unity



शासक गुड़िया, किश की शासक (अजगवाक इस सभ्यता के लोकप्रिय शासक थे। इन राजाओं के शासनकाल में कला, साहित्य, व्यापार, आदि के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हुई कालांतर में दो नदियों दजला और फरात के बीच की धरती पर इंसानी सभ्यता के पहले शहर बसे। ईसा पूर्व चौथी सदी से करीब 3,000 सालों तक मेसोपोटामिया की सभ्यता के सबूत मिलते हैं। ईसा पूर्व पहली सदी आते आते वहां बेबीलोन और निनवे जैसे कई शहर बस चुके थे।

**प्रश्न 11. आप कैसे सिद्ध करेंगे कि खानाबदोश, पशुचारक शहरी जीवन के लिए खतरनाक थे? कारण सहित स्पष्ट कीजिए।**

**उत्तर-** मेसोपोटामिया का इतिहास इस बात का प्रमाण है कि इसके पश्चिमी मरुस्थल से यायावर समूहों के कई झुण्ड उसके उपजाऊ एवं संपन्न मुख्य भूमि प्रदेश में आते रहते थे। ये पशुचारक गर्मी के मौसम में अपनी भेड़-बकरियों को इस उपजाऊ क्षेत्र के बोए हुए खेतों में ले जाते थे। अनेक बार ये यायावर समूह गड़रियों, फसल काटने वाले मजदूरों अथवा भाड़े के सैनिकों के रूप में इस उपजाऊ प्रदेश में आते थे और स्थायी रूप से इसे ही अपना निवास स्थान बना लेते थे। ये खानाबदोश, अक्कदी, ऐमोराइट, असीरियाई और आर्मीनियन जाति के लोग ही थे।

पशुचारक अपने पशुओं तथा उनके उत्पादों जैसे-पनीर, चमड़ा, मांस आदि के बदले अनाज और धातु के औज़ार आदि लेते थे। बाड़े में रखे जाने वाले पशुओं के गोबर से बनी खाद ... को उपजाऊ बनाती थी, इसलिए यह खाद किसानों ... बहुत उपयोगी होती थी, किन्तु यदा-क... पशुचारकों तथा गड़रियों के बीच ... ऐसा होता था कि पशुचारक ... पानी पिलाने के लिए बोए ... कर ले जाते थे। परिणामत ... पहुँचाती थी। यहाँ तक कि ... फसल बर्बाद हो जाती थी। मारी के अ... ज़ाहिर होता है कि सिंचाई वाले क्षेत्रों में पशुचारकों ... आगमन पर नजर रखी जाती थी। निःसंदेह चरवाहे कभी उपयोगी साबित हो सकते थे तो कभी हानिकारक भी। यदि शहरी लोगों के साथ पशुचारकों का संबंध दोस्ताना नहीं होता तो वे आवागमन के प्रमुख रास्तों को भी हानि पहुँचा सकते थे। इसके अतिरिक्त कभी-कभी खानाबदोश पशुचारक लूट-मार की गतिविधियों में भी लिप्त हो जाते थे। यहाँ तक कि वे किसानों के गाँवों पर हमला कर देते थे और उनका इकट्ठा किया गया अनाज आदि लूटकर ले जाते थे।

उपलब्ध साक्ष्यों से यह भी स्पष्ट होता है कि ये यायावर पशुचारक घास के मैदानों में अथवा सड़क के किनारे तंबुओं में रहा करते थे। वे प्रायः राहजनी के कार्यों में लिप्त रहते थे। मारी राज्य में कृषक व पशुचारक दोनों निवास करते थे। फिर भी मारी नगर के राजा इन पशुचारक समूहों की गतिविधियों के प्रति अत्यधिक सावधान थे। पशुचारकों को राज्य में चलने फिरने की तो अनुमति थी, किन्तु उनकी गतिविधियों पर कड़ी नजर रखी जाती थी। इस प्रकार मेसोपोटामिया का समाज और वहाँ की संस्कृति भिन्न-भिन्न समुदायों के लोगों व संस्कृतियों के लिए खुली थी। निःसंदेह विभिन्न जातियों तथा समुदायों के लोगों के आपसी मेल-जोल से वहाँ सभ्यता में जीवन्तता आ गई थी।

**प्रश्न 12. मेसोपोटामिया में किन-किन संस्थाओं का अस्तित्व रहा होगा, अपने विचार स्पष्ट कीजिए।**

**उत्तर-** मेसोपोटामिया में शहरी जीवन लगभग 5000 ई. पूर्व से शुरू होने के बाद दक्षिणी मेसोपोटामिया में बस्तियों का विकास होना आरंभ हो गया था। कालान्तर में यहाँ अनेक मध्य नगरों का निर्माण हुआ जिनमें उरुक, ... बेबीलोन व मारी प्रमुख नगर थे। दक्षिणी मेसोपो... बस्तियों में से कुछ ने प्राचीन शहरों ... इन शहरों की स्थिति के ... (i) मंदिर के चारों ओर विक... व्यापार के केन्द्र के रूप में ... (iii) शाही शहर।

... आने वाली नई संस्थाएँ- शहरी ... बाद मेसोपोटामिया में निम्नलिखित नयी ... में आईं (1) मंदिर, (2) सामुदायिक मुखियाओं ... उदय, (3) सेना, (4) सामाजिक संस्थाएँ, (5) व्यापार केन्द्र, (6) लेखन कला, (7) विद्यालय।

**1. मंदिर-** शहरी जीवन शुरू होने के पश्चात् मेसोपोटामिया में सर्वप्रथम अस्तित्व में आयी संस्था मंदिर थी। बाहर से आकर बसने वाले लोगों ने मंदिरों का निर्माण या पुनर्निर्माण करना प्रारंभ कर दिया। सर्वप्रथम ज्ञात मंदिर एक छोटा सा देवालय था, जो कच्ची ईंटों से निर्मित था। यहाँ स्थित मंदिर विभिन्न प्रकार के देवी-देवताओं के निवास स्थान थे जैसे चन्द्रदेवता 'उर' तथा प्रेम व युद्ध की देवी इन्नाना। इन मंदिरों का निर्माण ईंटों से किया जाता था तथा समय के अनुसार इनका आकार बढ़ता चला गया। मंदिर में स्थित देवता पूजा का केन्द्र बिन्दु होता था। यहाँ के लोगों के व्यक्तिगत रूप से पूजे जाने वाले देवता उनके खेतों, मत्स्य क्षेत्रों व पशुधन के स्वामी माने जाते थे। फलस्वरूप लोग इन्हें प्रसन्न करने के लिए दही व मछली आदि लाते थे। धीरे-धीरे मंदिरों ने अपने क्रियाकलाप बढ़ा दिए और मुख्य शहरी संस्था का रूप ले लिया।

**2. सामुदायिक मुखियाओं का उदय-** जब किसी क्षेत्र में

Join Telegram Channel - @amarwah450
@amarwah450

विभिन्न समुदायों के मध्य लम्बे समय तक युद्ध चलता था जो पराजित लोगों को गिरफ्तार कर अपने साथ ले जाते थे। ऐसे लोगों को वे नौकर या चौकीदार बनाकर रखते थे। परन्तु युद्ध में विजयी होने वाले ये मुखिया लोग स्थायी रूप से समुदाय के मुखिया नहीं रह पाते थे। एक लम्बे समय पश्चात् इन लोगों ने अपने-अपने समुदायों के कल्याण पर भी ध्यान देना प्रारंभ कर दिया फलस्वरूप नयी संस्थाएं व परिपाटियाँ स्थापित हो गईं। इन विजेता मुखियाओं ने मंदिरों में देवी-देवताओं के समक्ष बहुमूल्य भेंटें अर्पित करना प्रारंभ कर दिया। उन्होंने मंदिरों की व्यवस्था के लिए मंदिर में आने वाले चढ़ावे का हिसाब-किताब रखने की प्रभावी व्यवस्था की। इस व्यवस्था ने राज्य को उच्च स्थान प्रदान करवाया और समुदाय पर उसका पूर्ण नियंत्रण स्थापित हो गया।

**3. सेना-** मेसोपोटामिया के विभिन्न क्षेत्रों में मुखियाओं ने ग्रामीणों को अपने पास बसने के लिए प्रोत्साहन प्रदान किया। जिससे कि वे आवश्यकता पड़ने पर तुरंत अपनी सेना एकत्रित कर सकें। मेसोपोटामिया के उरुक नगर के उत्खनन से सशस्त्र वीरों एवं उनसे हताहत हुए शत्रुओं के चित्र प्राप्त हुए हैं जिनसे सेना रखने संबंधी जानकारी मिलती है।

**4. सामाजिक संस्थाएँ-** मेसोपोटामिया के नगरों की सामाजिक व्यवस्था में एक उच्च वर्ग का उदय हो चुका था। समाज की अधिकांश धन संपदा पर इसी वर्ग का अधिकार था। समाज में एकल परिवार को ही आदर्श माना जाता था। पिता ही परिवार का मुखिया होता था। कन्या की माता-पिता की सहमति से ही कन्या का विवाह किया जाता था। विवाह की रस्मों के पूर्ण होने के पश्चात् वर-वधू पक्ष में उपहारों का आदान-प्रदान होता था। पिता का घर, पशुधन, खेत आदि उसके पुत्रों को प्राप्त होते थे। पुत्री को दान-दहेज के रूप में गृहस्थी की सामग्री प्राप्त होती थी।

**5. व्यापार केन्द्र-** मेसोपोटामिया की सभ्यता में कई व्यापार केन्द्र भी थे, जिनके मारी नगर प्रमुख था। यहाँ से होकर लकड़ी, ताँबा, रांगा, तेल, मदिरा आदि वस्तुएँ तुर्की, सीरिया व लेबनान आदि देशों को निर्यात की जाती थीं।

**6. लेखन कला-** मेसोपोटामिया की सभ्यता की विश्व को एक महत्वपूर्ण देन लिपि का आविष्कार है जिसे कीलाकार लिपि के नाम से जाना जाता था। यहाँ के लोग मिट्टी की पट्टिकाओं पर कीलाकार चिन्ह बनाकर लिखते थे। इन्हीं पट्टिकाओं पर विभिन्न प्रकार का हिसाब-किताब रखा जाता था।

**7. विद्यालय-** मेसोपोटामिया में विद्यालयों के प्रमाण मिले हैं जहाँ विद्यार्थी पुरानी लिखित पट्टिकाओं को पढ़ते एवं उनकी नकल करते थे। यहाँ कुछ विद्यार्थियों को साधारण प्रशासन का हिसाब-किताब रखने वाले लेखाकार न बनाकर, ऐसा प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति बनाया जाता था, जो अपने पूर्वजों द्वारा प्राप्त बौद्धिक उपलब्धियों को आगे बढ़ा सके। इन सभी संस्थाओं में से मंदिर, व्यापार एवं लेखन राजा की पहल पर निर्भर थे।

**प्रश्न 13. ओल्ड टेस्टमेंट में मेसोपोटामिया से संबंधित कौन-कौन सी कहानियाँ मिलती हैं? बताइए।**

उत्तर- कहानियों में हमें मेसोपोटामिया की सभ्यता की झलक मिलती है-

(1) ईसाइयों के पवित्र ग्रंथ बाइबिल के प्रथम भाग ओल्ड टेस्टामेंट की बुक ऑफ जेनेसिस में शिमार अर्थात् सुमेर के विषय में बताया गया है कि वहां ईंटों से बने शहर हैं। यूरोप के पादरी एवं विद्वान मेसोपोटामिया को अपने पूर्वजों की भूमि मानते थे। जब इस क्षेत्र में पुरातत्वीय खोज की शुरुआत हुई तो ओल्ड टेस्टामेन्ट के शाब्दिक सत्य को सिद्ध करने का प्रयत्न किया गया।

(2) बाइबिल में जल प्लावन की कहानी का उल्लेख मिलता है। बाइबिल के अनुसार यह जल प्लावन पृथ्वी पर संपूर्ण जीवन को नष्ट करने वाला था, किन्तु ईश्वर ने जल प्लावन के पश्चात् भी जीवन को पृथ्वी पर सुरक्षित बनाए रखने के लिए 'नोआ' नामक एक मनुष्य का चयन किया। नोआ ने एक बहुत बड़ी नाव बनाई और उसमें समस्त जीव जन्तुओं का एक-एक जोड़ा रख लिया। जब पृथ्वी पर जल प्लावन की घटना घटित हुई तो नावों में रखे गए सभी जोड़ों को छोड़कर सब कुछ नष्ट हो गया। इसी प्रकार की एक कहानी मेसोपोटामिया के परंपरागत साहित्य में भी पायी जाती है। इस कहानी के मुख्य पात्र को जिउसूद्र अथवा उतनापिष्टिम कहा जाता था।

(3) मेसोपोटामिया की परम्परागत कथाओं के अनुसार उरुक के शासक एनमर्कर ने ही मेसोपोटामिया में सर्वप्रथम लेखन व व्यापार की शुरुआत की थी। एक परंपरागत कथा के अनुसार उरुक के राजा एनमर्कर ने अपने राज्य के एक सुन्दर मंदिर को सुसज्जित करने के लिए बहुमूल्य लाजवर्द तथा अन्य बहुमूल्य रत्न धातुएँ लाने के लिए अपने एक दूत को 'अरट्टा' नामक राज्य के शासक के पास भेजा परन्तु जब दूत अपनी बात को अरट्टा राजा को नहीं समझा पाया और अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो पाया तो राजा एनमर्कर ने अपने हाथ से चिकनी मिट्टी की पट्टिका बनाई और उस पर शब्द लिख दिए। उसने यह पट्टिका अरट्टा के राजा को प्रदान की। ये शब्द कीलाकार शब्द थे। इस कहानी से यह पता चलता है कि एनमर्कर ने मेसोपोटामिया में सर्वप्रथम लेखन व व्यापार की शुरुआत की थी। यहाँ के लोग मिट्टी की पट्टिकाओं पर लिखा करते थे। उनकी लिपि कीलाकार लिपि कहलाती थी।

(4) गिल्गेमिश नामक महाकाव्य से यह जानकारी मिलती है कि मेसोपोटामिया के लोगों को अपने नगरों पर गर्व था। ऐसा

@amarwah450

कहा जाता है कि गिल्गेमिश ने राजा एनगरकर के पश्चात् अनेक नगरों पर शासन किया था। गिल्गेमिश एक महान वीर था जिसने दूर दूर के प्रदेशों पर विजय प्राप्त कर अपने शासन का विस्तार कर लिया था। लेकिन वह अपने एक वीर मित्र की अचानक मृत्यु से बहुत दुखी हो गया और अमरत्व की खोज में निकल गया। उसने दुनिया भर में अमरत्व की खोज की, लेकिन वह सफल न हो सका। अन्त में वह अपने नगर उरुक लौट आया। एक दिन वह जब अपने आप को सांत्वना देने के लिए नगर की चारदीवारी के पास भ्रमण कर रहा था तभी उसकी दृष्टि उन पकी हुई ईंटों पर पड़ी जिनसे उनकी नींव डाली गई थी। वह बहुत भाव विभोर हो गया। यह कहानी यह बताती है कि गिल्गेमिश को अपने नगर में सांत्वना मिलती है, जिसे उसकी प्रजा ने बनाया था।

प्रश्न 14. विश्व के मानचित्र में निम्नलिखित को दर्शाइये (कोई चार)- 1. ईरान, 2 फरात नदी, 3. इराक, 4 रोम, 5. सीरिया।

उत्तर-

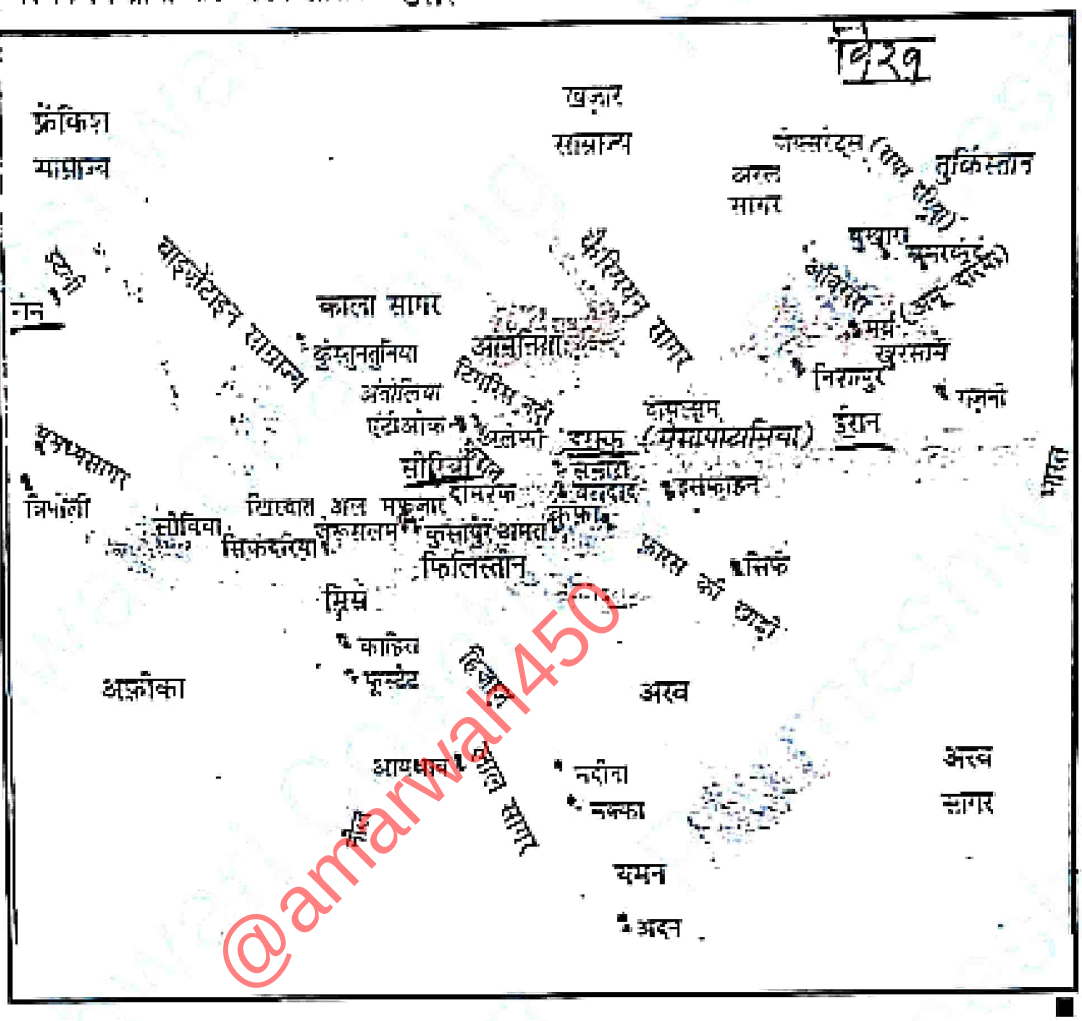


@amarwal1450

## अध्याय-3 तीन महाद्वीपों में फैला हुआ साम्राज्य

### वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए -

1. पैपाइस क्या है?
(अ) एक पौधा (ब) धातु
(स) औजार (द) बर्तन

2. रोमन साम्राज्य में सैनेट क्या था?
(अ) धनी वर्ग (ब) गरीब वर्ग
(स) सेना का समूह (द) इनमे से कोई नहीं

3. रोमन साम्राज्य कौन-कौन से महाद्वीपों में फैला था?
(अ) यूरोप (ब) उत्तरी अफ्रीका
(स) पश्चिमी एशिया (द) इनमें से सभी

4. रोमन साम्राज्य के लोगों की भाषा क्या थी?
(अ) यूनानी (ब) लातिनी
(स) अ व ब दोनों (द) इनमें से कोई नहीं

5. रोमन साम्राज्य में सेनेट के शासन का अंत कब हुआ?
(अ) 509 ई.पू. (ब) 27 ई.पू.
(स) 28 ई.पू. (द) 300 ई.पू.

6. रोमन सम्राट कॉस्टेंटाईन द्वारा प्रचलित सोने के सिक्कों को किस नाम से जाना था।
(अ) सॉलिडस (ब) दीनारियस
(स) लीरा (द) इनमें से कोई नहीं

7. रोमन सम्राट कॉस्टेंटाईन ने ईसाई धर्म कब अपनाया था?
(अ) 306 ई. (ब) 312 ई. (स) 324 ई. (द) 337 ई.

8. रोमन साम्राज्य में किस शासक के काल को शान्ति के लिए याद किया जाता है?
(अ) आगस्टस (ब) जूलियस सीजर
(स) कांस्टेंटाईन (द) इनमें से कोई नहीं

विभिन्न समुदायों के मध्य लम्बे समय तक युद्ध चलता था जो पराजित लोगों को गिरफ्तार कर अपने साथ ले जाते थे। ऐसे लोगों को वे नौकर या चौकीदार बनाकर रखते थे। परन्तु युद्ध में विजयी होने वाले ये मुखिया लोग स्थायी रूप से समुदाय के मुखिया नहीं रह पाते थे। एक लम्बे समय पश्चात् इन लोगों ने अपने-अपने समुदायों के कल्याण पर भी ध्यान देना प्रारंभ कर दिया फलस्वरूप नयी संस्थों व परिपाटियाँ स्थापित हो गई। इन विजेता मुखियाओं ने मंदिरों में देवी-देवताओं के समक्ष बहुमूल्य भेंटें अर्पित करना प्रारंभ कर दिया। उन्होंने मंदिरों की व्यवस्था के लिए मंदिर में आने वाले चढ़ावे का हिसाब-किताब रखने की प्रभावी व्यवस्था की। इस व्यवस्था ने राज्य को उच्च स्थान प्रदान करवाया और समुदाय पर उसका पूर्ण नियंत्रण स्थापित हो गया।

**3. सेना-** मेसोपोटामिया के विभिन्न क्षेत्रों में मुखियाओं ने ग्रामीणों को अपने पास बसने के लिए प्रोत्साहन प्रदान किया। जिससे कि वे आवश्यकता पड़ने पर तुरंत अपनी सेना एकत्रित कर सकें। मेसोपोटामिया के उरुक नगर के उत्खनन से सशस्त्र वीरों एवं उनसे हताहत हुए शत्रुओं के चित्र प्राप्त हुए हैं जिनसे सेना रखने संबंधी जानकारी मिलती है।

**4. सामाजिक संस्थाएँ-** मेसोपोटामिया के नगरों की सामाजिक व्यवस्था में एक उच्च वर्ग का उदय हो चुका था। समाज की अधिकांश धन संपदा पर इसी वर्ग का अधिकार था। समाज में एकल परिवार को ही आदर्श माना जाता था। पिता ही परिवार का मुखिया होता था। कन्या की माता-पिता की सहमति से ही कन्या का विवाह किया जाता था। विवाह की रस्मों के पूर्ण होने के पश्चात् वर-वधू पक्ष में उपहारों का आदान-प्रदान होता था। पिता का घर, पशुधन, खेत आदि उसके पुत्रों को प्राप्त होते थे। पुत्री को दान-दहेज के रूप में गृहस्थी की सामग्री प्राप्त होती थी।

**5. व्यापार केन्द्र-** मेसोपोटामिया की सभ्यता में कई व्यापार केन्द्र भी थे, जिनके मारी नगर प्रमुख था। यहाँ से होकर लकड़ी, ताँबा, रांगा, तेल, मदिरा आदि वस्तुएँ तुर्की, सीरिया व लेबनान आदि देशों को निर्यात की जाती थी।

**6. लेखन कला-** मेसोपोटामिया की सभ्यता की विश्व को एक महत्वपूर्ण देन लिपि का आविष्कार है जिसे कीलाकार लिपि के नाम से जाना जाता था। यहाँ के लोग मिट्टी की पट्टिकाओं पर कीलाकार चिन्ह बनाकर लिखते थे। इन्ही पट्टिकाओं पर विभिन्न प्रकार का हिसाब-किताब रखा जाता था।

**7. विद्यालय-** मेसोपोटामिया में विद्यालयों के प्रमाण मिले हैं जहाँ विद्यार्थी पुरानी लिखित पट्टिकाओं को पढ़ते एवं उनकी नकल करते थे। यहाँ कुछ विद्यार्थियों को साधारण प्रशासन का हिसाब-किताब रखने वाले लेखाकार न बनाकर, ऐसा प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति बनाया जाता था, जो अपने पूर्वजों द्वारा प्राप्त बौद्धिक उपलब्धियों को आगे बढ़ा सके। इन सभी संस्थाओं में से मंदिर, व्यापार एवं लेखन राजा की पहल पर निर्भर थे।

**प्रश्न 13. ओल्ड टेस्टमेंट में मेसोपोटामिया से संबंधित कौन-कौन सी कहानियाँ मिलती हैं? बताइए।**

**उत्तर-** कहानियों में हमें मेसोपोटामिया की सभ्यता की झलक मिलती है-

(1) ईसाइयों के पवित्र ग्रंथ बाइबिल के प्रथम भाग ओल्ड टेस्टामेंट की बुक ऑफ जेनेसिस में शिमार अर्थात् सुमेर के विषय में बताया गया है कि वहां ईंटों से बने शहर हैं। यूरोप के पादरी एवं विद्वान मेसोपोटामिया को अपने पूर्वजों की भूमि मानते थे। जब इस क्षेत्र में पुरातत्वीय खोज की शुरुआत हुई तो ओल्ड टेस्टामेन्ट के शाब्दिक सत्य को सिद्ध करने का प्रयत्न किया गया।

(2) बाइबिल में जल प्लावन की कहानी का उल्लेख मिलता है। बाइबिल के अनुसार यह जल प्लावन पृथ्वी पर संपूर्ण जीवन को नष्ट करने वाला था, किन्तु ईश्वर ने जल प्लावन के पश्चात् भी जीवन को पृथ्वी पर सुरक्षित बनाए रखने के लिए 'नोआ' नामक एक मनुष्य का चयन किया। नोआ ने एक बहुत बड़ी नाव बनाई और उसमें समस्त जीव जन्तुओं का एक-एक जोड़ा रख लिया। जब पृथ्वी पर जल प्लावन की घटना घटित हुई तो नावों में रखे गए सभी जोड़ों को छोड़कर सब कुछ नष्ट हो गया। इसी प्रकार की एक कहानी मेसोपोटामिया के परंपरागत साहित्य में भी पायी जाती है। इस कहानी के मुख्य पात्र को जिउसूद्र अथवा उतनाविष्टिम कहा जाता था।

(3) मेसोपोटामिया की परम्परागत कथाओं के अनुसार उरुक के शासक एनमर्कर ने ही मेसोपोटामिया में सर्वप्रथम लेखन व व्यापार की शुरुआत की थी। एक परंपरागत कथा के अनुसार उरुक के राजा एनमर्कर ने अपने राज्य के एक सुन्दर मंदिर को सुसज्जित करने के लिए बहुमूल्य लाजवर्द तथा अन्य बहुमूल्य रत्न धातुएँ लाने के लिए अपने एक दूत को 'अरट्टा' नामक राज्य के शासक के पास भेजा परन्तु जब दूत अपनी बात को अरट्टा राजा को नहीं समझा पाया और अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो पाया तो राजा एनमर्कर ने अपने हाथ से चिकनी मिट्टी की पट्टिका बनाई और उस पर शब्द लिख दिए। उसने यह पट्टिका अरट्टा के राजा को प्रदान की। ये शब्द कीलाकार शब्द थे। इस कहानी से यह पता चलता है कि एनमर्कर ने मेसोपोटामिया में सर्वप्रथम लेखन व व्यापार की शुरुआत की थी। यहाँ के लोग मिट्टी की पट्टिकाओं पर लिखा करते थे। उनकी लिपि कीलाकार लिपि कहलाती थी।

(4) गिल्गैमिश नामक महाकाव्य से यह जानकारी मिलती है कि मेसोपोटामिया के लोगों को अपने नगरों पर गर्व था। ऐसा

@amarwan450

ता जाता है कि गिलगेमिश ने राजा एनमकर के पश्चात् नेक नगरों पर शासन किया था। गिलगेमिश एक महान वीर । जिसने दूर दूर के प्रदेशों पर विजय प्राप्त कर अपने शासन ा विस्तार कर लिया था। किन वह अपने एक वीर मित्र की अचानक मृत्यु से हुत दुखी हो गया और मरत्व की खोज में निकल गया। उसने दुनिया र में अमरत्व की खोज की, लेकिन वह सफल न हो सका। अन्त में वह अपने नगर उरुक लौट आया। एक दिन वह जब अपने आप को सांत्वना देने के लिए नगर की चारदीवारी के पास भ्रमण कर रहा था तभी उसकी दृष्टि उन पकी हुई ईंटों पर पड़ी जिनसे उनकी नींव डाली गई थी। वह बहुत भाव विभोर हो गया। यह कहानी यह बताती है कि गिलगेमिश को अपने नगर में सांत्वना मिलती है, जिसे उसकी प्रजा ने बनाया था।

प्रश्न 14. विश्व के मानचित्र में निम्नलिखित को दर्शाइये (कोई चार)- 1. ईरान, 2 फरात नदी, 3. इराक, 4 रोम, 5. सीरिया।

उत्तर-

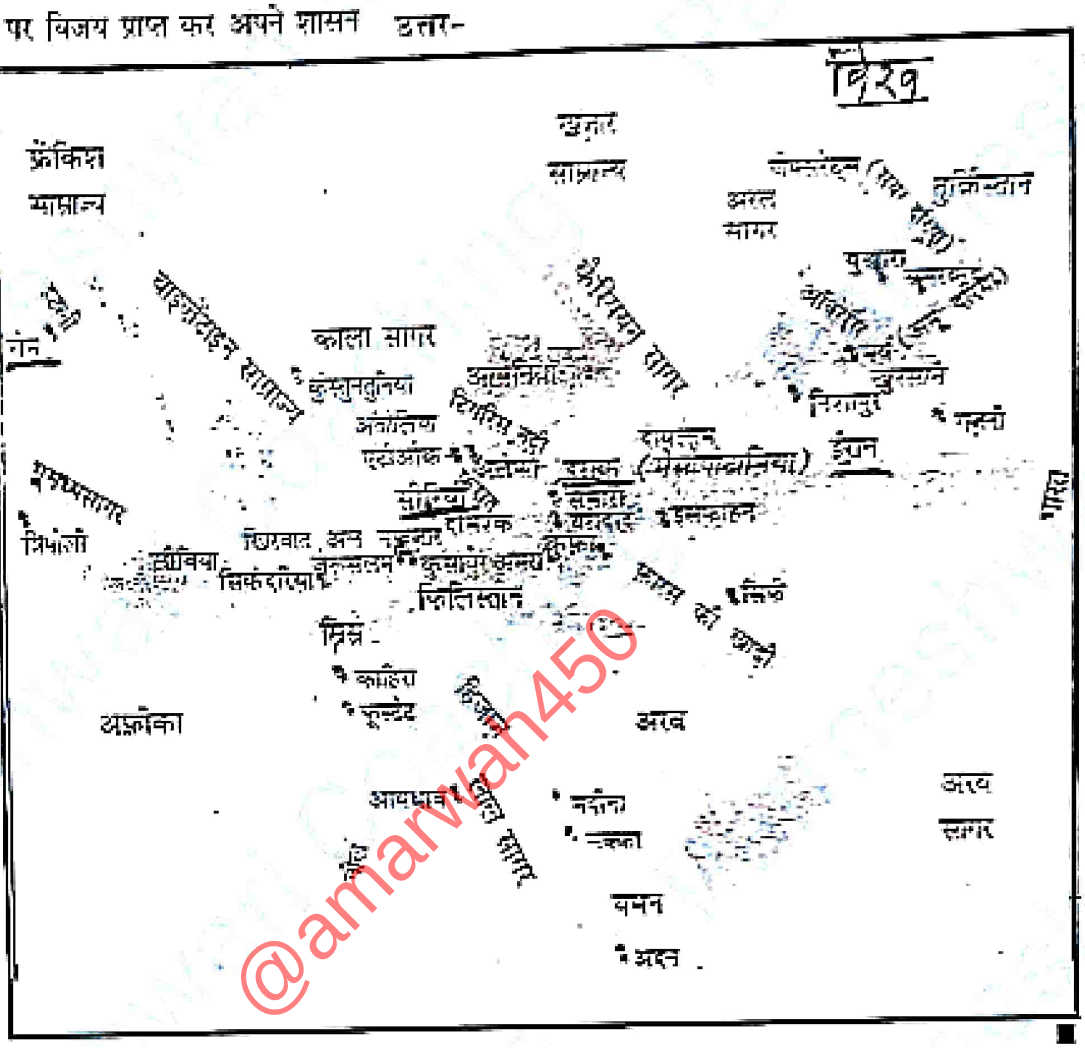


@amarvan450

## अध्याय-3 तीन महाद्वीपों में फैला हुआ साम्राज्य

### वस्तुनिष्ठ प्रश्न

**प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए -**

**1. पैपाइस क्या है?**
(अ) एक पौधा (ब) धातु
(स) औजार (द) बर्तन

**2. रोमन साम्राज्य में सैनेट क्या था?**
(अ) धनी वर्ग (ब) गरीब वर्ग
(स) सेना का समूह (द) इनमें से कोई नहीं

**3. रोमन साम्राज्य कौन-कौन से महाद्वीपों में फैला था?**
(अ) यूरोप (ब) उत्तरी अफ्रीका
(स) पश्चिमी एशिया (द) इनमें से सभी

**4. रोमन साम्राज्य के लोगों की भाषा क्या थी?**
(अ) यूनानी (ब) लातिनी
(स) अ व ब दोनों (द) इनमें से कोई नहीं

**5. रोमन साम्राज्य में सैनेट के शासन का अंत कब हुआ?**
(अ) 509 ई.पू. (ब) 27 ई.पू.
(स) 28 ई.पू. (द) 300 ई.पू.

**6. रोमन सम्राट कॉस्टेटेटाईन द्वारा प्रचलित सोने के सिक्कों को किस नाम से जाना था।**
(अ) सॉलिडस (ब) दोनारियस
(स) लीरा (द) इनमें से कोई नहीं

**7. रोमन सम्राट कॉस्टेटेटाईन ने ईसाई धर्म कब अपनाया था?**
(अ) 306 ई. (ब) 312 ई. (स) 324 ई. (द) 337 ई.

**8. रोमन साम्राज्य में किस शासक के काल को शान्ति के लिए याद किया जाता है?**
(अ) आगस्टस (ब) जूलियस सीजर
(स) कांस्टेटेटाईन (द) इनमें से कोई नहीं

9. किस रोमन सम्राट ने कुस्तुनतुनिया को रोमन साम्राज्य की राजधानी बनाया था?
(अ) आगस्टस (ब) जूलियस सीजर
(स) कास्टेटाईन (द) इनमें से कोई नहीं

10. रोमन साम्राज्य के राजनीतिक इतिहास में प्रमुख खिलाड़ी कौन थे?
(अ) सम्राट (ब) अभिजात वर्ग सीनेट
(स) सेना (द) उपरोक्त सभी

उत्तर- (1) (अ), (2) (अ), (3) (द), (4) (ब), (5) (ब), (6) (अ), (7) (ब), (8) (अ), (9) (स), (10) (ब)।

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(1) रोम साम्राज्य में प्रचलित चांदी के सिक्के को ..... कहा जाता था।
(2) आगस्टस ..... शासक का दत्तक पुत्र था।
(3) रोमन समाज में ..... परिवार का प्रचलन था।
(4) रोमन साम्राज्य में सैनिकों को न्यूनतम ..... वर्ष तक सेवा करनी पड़ती थी।
(5) भू-मध्य सागर को रोमन साम्राज्य का ..... कहा जाता था।
(6) स्पेन ..... व्यापार के लिए प्रसिद्ध था।
(7) आगस्टस ..... ई.पू. में रोम का शासक बना।
(8) सॉलिडस नाम का सोने का सिक्का ..... ग्राम शुद्ध सोने का बना था।
(9) रोमन साम्राज्य को मोटे तौर पर ..... चरणों में बांटा जा सकता है।
(10) रोमन साम्राज्य में गणतंत्र की वास्तविक सत्ता, ..... नामक निकाय में निहित थी।

उत्तर- (1) दीनारियस, (2) सैनेट, (3) एकल परिवार, (4) 25 वर्ष, (5) हृदय, (6) जैतून उत्पाद, (7) 27 ई. पूर्व से 14 ई. पूर्व तक, (8) 4.5, (9) दो चरणों, (10) सीनेट।

प्रश्न 3. सही जोड़ी बनाइये-

| कॉलम-(अ) | कॉलम-(ब) |
|---|---|
| (1) सैनेट | (अ) अश्वारोही |
| (2) ऑगस्टस | (ब) पहाड़ी की चोटी पर बसे गाँव |
| (3) नाइट वर्ग | (स) रोमन साम्राज्य का हृदय |
| (4) कैस्टेला | (द) सोने का सिक्का |
| (5) एम्फोरा | (ई) जूलियस सीजर का दत्तक पुत्र |
| (6) भूमध्य-सागर | (फ) सुगंधित राल |
| (7) सॉलिडस | (ग) रोमन साम्राज्य की राजधानी |
| (8) दीनारियस | (ह) मटके या कंटेनर |
| (9) फ्रैंकिन्सेंस | (ज) चांदी का सिक्का |
| (10) कुस्तुनतुनिया | (क) धनी वर्ग की संस्था |

उत्तर- (1) (क), (2) (ई), (3) (ज), (4) (ग), (5) (ह), (6) (स), (7) (द), (8) (ज), (9) (फ), (10) (ग)।

प्रश्न 4. एक शब्द/वाक्य में उत्तर दीजिए-

(1) पैपाइरस क्या है?
(2) रोमन साम्राज्य की उत्तरी सीमा का निर्धारण किन नदियों के द्वारा होता था?
(3) सॉलिडस क्या है?
4 डेसल 20. क्या है?
(5) सैनेट क्या है?
(6) सेंट आगस्टीन कौन थे?
(7) प्रिंसिपेट की स्थापना किसने की?
(8) रोमन समाज के परिवार की मुख्य विशेषता क्या थी?
(9) पोम्पेई क्या है?
(10) टिबेरियस कौन था?

उत्तर- (1) एक सरकण्डे जैसा पौधा जो नील नदी के किनारे उगा करता था। (2) राइन, डैन्यूब। (3) सोने का सिक्का। (4) स्पेन में उत्पादित जैतून का तेल ले जाने वाला कंटेनर। (5) धनी परिवार की संस्था। (6) उत्तरी अफ्रीका के हिप्पो नामक नगर के बिशप थे। (7) आगस्टस। (8) कुलीन, अभिजात वर्ग के लोग। (9) पोम्पेई एक मदिरा व्यापारी का भोजन कक्ष था। (10) विशाल यहूदी विद्रोह और रोमन सेनाओं का जेरुसलम पर कब्जा था।

प्रश्न 5. सत्य/असत्य लिखिए-

(1) रोमन समाज में संयुक्त परिवार का प्रचलन था।
(2) सॉलिडस सोने का सिक्का था।
(3) ऑगस्टस जूलियस सीजर का दत्तक पुत्र था।
(4) रोमन समाज में दासों के प्रति अच्छा व्यवहार किया जाता था।
(5) पोम्पेई एक नगर था।
(6) भू का सागर को रोमन साम्राज्य मध्य-हृदय कहा जाता था।
(7) ऑक्टेवियन ऑगस्टस नाम से रोमन का सम्राट बना।
(8) रोमन सैनिकों को न्यूनतम वर्ष तक सेवा करनी पड़ती थी।
(9) रोमन साम्राज्य में वास्तविक सत्ता सैनेट में निहित थी।
(10) रोमन साम्राज्य के राजनीतिक इतिहास में चार मुख्य खिलाड़ी थे।

उत्तर- (1) असत्य, (2) सत्य, (3) असत्य, (4) असत्य, (5) असत्य, (6) सत्य, (7) सत्य, (8) असत्य, (9) सत्य, (10) असत्य।

@amarwan450

## अति लघु उत्तरीय प्रश्न

**प्रश्न 1. एम्फोरा क्या है?**

**उत्तर-** रोम साम्राज्य में शराब, जैतून का तेल व अन्य तरल पदार्थों की ढुलाई जिन मटकों या कन्टेनरों में होती थी, उन्हें एम्फोरा कहा जाता था?

**प्रश्न 2. गृह युद्ध क्या है?**

**उत्तर-** गृह युद्ध एक ही राष्ट्र के अन्दर संगठित गुटों के बीच में होने वाले युद्ध को कहते हैं। कभी-कभी गृह युद्ध ऐसे भी दो देशों के युद्ध को कहा जाता है जो कभी एक देश के भाग रहे हो। गृह युद्ध में लड़ने वाले गिरोहों के ध्येय भिन्न प्रकार के होते हैं।

**प्रश्न 3. एकाश्म क्या है?**

**उत्तर-** एकाश्म- इसका तात्पर्य एक बड़ी चट्टान का टुकड़ा होता है, परन्तु इसका प्रयोग यहाँ पर मानव इकाइयों के लिए किया गया है। जब हम कहते हैं कि समाज अथवा सांस्कृतिक एकाश्म है तो उस उसका अर्थ है कि उसमें विविधता की कमी है और उनमें आंतरिक एकरूपता है।

**प्रश्न 4. रोमन समाज की एक प्रमुख विशेषता लिखिए।**

**उत्तर-** रोमन समाज की प्रमुख विशेषता एकल परिवार का होना थी?

**प्रश्न 5. वर्ष वृतांत से आप क्या समझते हैं?**

**उत्तर-** समकालीन व्यक्तियों द्वारा लिखा गया उस काल का इतिहास वर्ष वृतांत कहलाता था। यह प्रतिवर्ष लिखा जाता था।

**प्रश्न 6. रोमन साम्राज्य की प्रमुख भाषा कौन-सी थी?**

**उत्तर-** रोमन साम्राज्य की प्रमुख भाषाएँ थी-
(i) लातिन (ii) यूनानी।

**प्रश्न 7. बहुदेववाद क्या है?**

**उत्तर-** यूनान व रोमवासियों की पारम्परिक धार्मिक संस्कृति बहुदेववादी थी। ये लोग अनेक पंथों एवं उपासना पद्धतियों में विश्वास रखते थे। जूपिटर, मिनर्वा, मार्स व जूनो जैसे अनेक देवी-देवताओं की पूजा करते थे। सम्पूर्ण साम्राज्य में हजारों मन्दिर व मठ बने हुए थे।

**प्रश्न 8. इक्वाइट्स क्या है?**

**उत्तर-** अश्वरोही (इक्वाइट्स) या नाइट वर्ग परम्परागत रूप से दूसरा सबसे अधिक शक्तिशाली और धनवान समूह था। मूल रूप से वे ऐसे परिवार थे जिसकी संपति उन्हें घुड़सेना में भर्ती होने की औपचारिक योग्यता प्रदान करती थी, इसलिए इन्हें इक्वाइट्स कहा जाता था।

**प्रश्न 9. रोमन शहरों की दो विशेषताएँ लिखिए।**

**उत्तर-** रोम के शहरी जीवन की दो विशेषताएँ-
(i) प्रत्येक शहर में सार्वजनिक स्नानगृह होता था।
(ii) लोगों को उच्च स्तर के मनोरंजन उपलब्ध थे।

**प्रश्न 10. बलात् भर्ती सेना क्या है?**

**उत्तर-** बलात् सेना- फारस के राज्य की सेनाएँ बलात् भर्ती वाली थी। इसका अर्थ है कि राज्य के कुछ वयस्क पुरुषों को अनिवार्य रूप से सैनिक सेवा करनी पड़ती थी।

**प्रश्न 11. सॉलिडस किस धातु से निर्मित सिक्का था तथा इसे किसने प्रचलित किया था?**

**उत्तर-** सॉलिडस रोमन सम्राट कॉस्टेनाइट द्वारा चलाया गया सोने का सिक्का था जिसका वजन 4.5 ग्राम होता था।

**प्रश्न 12. फ्रैंकिन्सेंस क्या है?**

**उत्तर-** फ्रैंकिन्सेंस- एक यूरोपीय नाम जो वास्तव में सुगंधित राल है। इसका प्रयोग धूप अगरबत्ती, इत्र बनाने के लिए किया जाता था। इसे बोसवेलिया पेड़ से प्राप्त किया जाता था। इस पेड़ के तने में बड़ा छेद कर इसके इस को बहने दिया जाता था और रस सूखने पर राल प्राप्त किया जाता था। फ्रैंकिन्सेंस की सबसे उत्कृष्ट किस्म की राल अरब प्रायद्वीप से आती थी।

**प्रश्न 13. कैस्टेला क्या है?**

**उत्तर-** स्पेन में उत्तरी क्षेत्र बहुत कम विकसित था और इसमें अधिकतर केल्टिक-भाषी किसानों की आबादी थी, जो पहाड़ियों की चोटियों पर बसे गांवों में रहते थे। इन गांवों को कैस्टेला कहा जाता था।

**प्रश्न 14. रोमन साम्राज्य में गणतंत्र से क्या अभिप्राय था?**

**उत्तर-** रोमन साम्राज्य के सन्दर्भ में रिपब्लिक (गणतन्त्र) एक ऐसी शासन व्यवस्था थी जिसमें वास्तविक सत्ता सैनेट के पास होती थी। इसमें धनिक वर्ग के लोगों का बोलबाला था। गणतन्त्र को सैनेट के माध्यम से संचालित किया जाता था। रोम में गणतंत्र 509 ई. पू. से 27 ई. पू. तक चला।

**प्रश्न 15. रोमन साम्राज्य को कितने चरणों में बाँटा जा सकता है नाम लिखिए।**

**उत्तर-** रोमन साम्राज्य को मुख्य दो चरणों में बांटा है
(i) पूर्ववर्ती (ii) परवर्ती।

## लघु उत्तरीय प्रश्न

**प्रश्न 1. ऋतु प्रवास क्या है?**

**उत्तर-** ऋतु प्रवास से तात्पर्य है ऊँच पहाड़ी क्षेत्रों और नीचे के मैदानी इलाकों में भेड़-बकरियों तथा अन्य जानवरों को चराने के लिए चरागाहों की खोज में ग्वालों तथा चरवाहों का मौसम के अनुसार वार्षिक आवागमन।

**प्रश्न 2. रोमन साम्राज्य के भू-मध्य सागर तटों पर स्थापित तीन बड़े शहरी केन्द्रों के नाम लिखिए।**

**उत्तर-** रोमन साम्राज्य के भू-मध्य सागर तटों पर स्थापित बड़े शहरी केन्द्रों के नाम- (i) कार्थेज (iii) सिकन्दरिया (iii) एंटिऑक।

@amarwal450

**प्रश्न 3. रोमनवासियों के तीन बड़े देवी-देवताओं के नाम लिखिये।**

**उत्तर-** रोमन साम्राज्य के तीन बड़े देवी-देवताओं के नाम- (i) जूपिटर (ii) जूनो (iii) मिनर्वा।

**प्रश्न 4. रोमन साम्राज्य किन तीन महाद्वीपों में फैला हुआ था नाम लिखिए?**

**उत्तर-** तीन महाद्वीपों में फैला हुआ साम्राज्य इस्लाम का उदय और विस्तार-लगभग 570-1200 ई. और पश्चिम में साम्राज्य निर्माण के विविध प्रयत्न होते रहे। छटी शती ई. तक ईरानियों ने असीरिया के साम्राज्य के अधिकांश भाग पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया था।

**प्रश्न 5. रोमन साम्राज्य के राजनीतिक इतिहास के तीन प्रमुख खिलाड़ी कौन थे? नाम लिखिए।**

**उत्तर-** रोमन साम्राज्य के राजनीतिक इतिहास के तीन प्रमुख खिलाड़ियों के नाम- (i) सम्राट (ii) सैनेट (iii) सेना।

**प्रश्न 6. पोम्पेई नगर पर टिप्पणी लिखिए।**

**उत्तर-** शोधकर्ताओं का मानना है कि पोम्पेई नगर छठी या सातवीं शताब्दी में स्थापित हुआ था। चौथी शताब्दी में वह रोम के प्रभुत्व के नीचे आया और 80 ई. पू. में वह एक रोमन कॉलोनी बन गया। जब तक इस नगर का विनाश हो चुका था, 160 साल बाद, इसकी आबादी 11000 आकलन की गयी थी और इस नगर में जटिल पानी की व्यवस्था, एक अखाड़ा, व्यायामशाला और एक बंदरगाह था। उस विस्फोट ने पोम्पेई को नष्ट किया और उसके सारे निवासियों को राख के टन के नीचे दफन कर दिया। मौलिक रूप से विनाश का सबूत प्लिनी द यंगर के खत से आया जिसने उस विस्फोट को दूर से देखा और अपने चाचा के मृत्यु को वर्णन करते हुए यह खत लिखा।

**प्रश्न 7. रोमन साम्राज्य की स्रोत सामग्री कितने भागों में विभाजित की जा सकती है नाम लिखिए।**

**उत्तर-** रोमन साम्राज्य की स्रोत सामग्री निम्न भागों में विभाजित की जा सकती है- (i) पाठ्य सामग्री (ii) प्रलेख अथवा दस्तावेज (iii) भौतिक अवशेष।

**प्रश्न 8. रोमन साम्राज्य की भौगोलिक स्थिति का वर्णन कीजिए।**

**उत्तर- रोमन साम्राज्य की भौगोलिक स्थिति एवं विस्तार-** रोम साम्राज्य का भूमध्य सागर और उसके आसपास उत्तर तथा दक्षिण में स्थित सभी प्रदेशों पर नियंत्रण था। उत्तर में इस साम्राज्य की सीमा दो महान नदियाँ राइन व डैन्यूब बनाती थी। साम्राज्य की दक्षिणी सीमा सहारा नामक एक विशाल मरुस्थल से बनती थी। इस प्रकार रोमन साम्राज्य एक विशाल क्षेत्र में फैला हुआ था।

**प्रश्न 9. रोमन सम्राट कॉन्सटैनटाइन ने मौद्रिक प्रणाली में कौन-कौन से परिवर्तन किये?**

**उत्तर-** कॉन्स्टैनटाइन ने अपने शासन काल के दौरान अपनी शासन प्रणाली में निम्नलिखित परिवर्तन किए- सम्राट कॉन्स्टैनटाइन ने कुस्तुनतुनिया नगर का निर्माण करवाया एवं इसे अपने साम्राज्य की दूसरी राजधानी बनाया। यह राजधानी नगर तीनों ओर से समुद्र से घिरा हुआ था। इन्होंने सॉलिड्स नामक एक नया सोने का सिक्का चलाया जो 4.5 ग्राम विशुद्ध सोने से निर्मित था।

**प्रश्न 10. रोमन वासियों की धार्मिक संस्कृति पर टिप्पणी लिखिए।**

**उत्तर-** (1) रोमन लोग बहुदेववादी थे। ये लोग अनेक पंथों एवं उपासना पद्धतियों में विश्वास रखते थे।

(2) ये लोग जूपीटर, मिनर्वा, जूनो, मार्स आदि अनेक देवी देवताओं की पूजा किया करते थे।

(3) इन्होंने देवी-देवताओं की पूजा के लिए अनेक मन्दिरों, मठों और देवालयों का निर्माण किया।

(4) रोमन साम्राज्य का एक अन्य प्रमुख धर्म यहूदी धर्म था। यह धर्म भी एकाश्म अर्थात् विविधताहीन नहीं था। इसका तात्पर्य था कि परवर्ती पुराकाल के यहूदी धर्म में बहुत-सी विविधताएँ विद्यमान थीं।

(5) चौथी व पाँचवीं सदी में रोमन साम्राज्य का ईसाईकरण एक क्रमिक तथा जटिल प्रक्रिया के रूप में हुआ था।

(6) चौथी शताब्दी में भिन्न-भिन्न धार्मिक समुदायों के मध्य की सीमाएँ कठोर एवं गहरी नहीं थीं जितनी कि बाद में शक्तिशाली बिशपों की कट्टरता के कारण हो गईं।

**प्रश्न 11. परवर्ती पुराकाल से क्या आशय है?**

**उत्तर-** परवर्ती पुराकाल शब्द का प्रयोग रोम साम्राज्य के उद्‌भव, विकास एवं पतन के इतिहास की उस अन्तिम अवधि का वर्णन करने के लिए किया जाता है, जो सामान्यतः चौथी से सातवीं शताब्दी तक की थी।

**प्रश्न 12. रोमन समाज में महिलाओं की स्थिति पर टिप्पणी लिखिए।**

**उत्तर-** रोमन समाज में विवाह का स्वरूप ऐसा होता था कि पत्नी अपने पति को अपनी सम्पत्ति हस्तान्तरित नहीं करती थी। महिला का दहेज वैवाहिक अवधि के दौरान उसके पति के पास अवश्य चला जाता था, परन्तु विवाह के पश्चात् भी महिला, अपने पिता की उत्तराधिकारी बनी रहती थी। अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् वह उसकी सम्पत्ति की मालिक बन जाती थी। महिलाओं को सम्पत्ति के स्वामित्व व संचालन में व्यापक कानूनी अधिकार प्राप्त थे। इसमें कोई संदेह नहीं कि

@amarwah450

रोमन साम्राज्य में महिलाओं पर उनके पति अक्सर हावी रहते थे। महान कैथोलिक बिशप ऑगस्टीन ने लिखा है कि उनकी माता की उनके पिता द्वारा नियमित रूप से पिटाई की जाती थी और जिस छोटे से नगर में वे बड़े हुए वहाँ की अधिकतर पत्नियाँ इसी तरह पिटाई से अपने शरीर पर लगी खरोंचे दिखाती रहती थी।

**प्रश्न 13. रोमन साम्राज्य में दासों के प्रति व्यवहार की विवेचना कीजिए।**

**उत्तर-** दासों के प्रति व्यवहार- कुछ ही समय बाद के शासक ल्यूसियस पेडेनियस सेकंडस का उसके एक दास ने कत्ल कर दिया। कत्ल के पश्चात्, पुराने रिवाज के अनुसार यह आवश्यक था कि एक ही छत के नीचे रहने वाले प्रत्येक दास को फाँसी दे दी जाए। परन्तु बहुत से निर्दोष लोगों को बचाने के लिए भीड़ एकत्र हो गई और दंगे शुरू हो गए। सैनेट भवन को घेर लिया गया, हालांकि सैनेट भवन में अत्यधिक कठोरता का विरोध किया जा रहा था, परंतु अधिकांश सदस्यों ने परिवर्तन किए जाने का विरोध किया। जो सैनेटर फाँसी देने के पक्ष में थे, उनकी बात मानी गई। परन्तु पत्थर और जलती हुई मशालें लिए भारी भीड़ ने इस आदेश को कार्यान्वित किए जाने से रोका। नीरो ने अभिलेख द्वारा इन लोगों को फटकार लगाई, उन सारे मार्गों पर सेना लगा दी गई जहाँ सैनिकों के साथ दोषियों को फाँसी पर चढ़ाने के लिए ले जाया जा रहा था।

**प्रश्न 14. रोमन समाज की साक्षरता की स्थिति का वर्णन कीजिए।**

**उत्तर-** रोमन साम्राज्य में साक्षरता की स्थिति-रोमन साम्राज्य में कामचलाऊ साक्षरता की स्थिति थी। साम्राज्य के विभिन्न भागों में साक्षरता की दरें भी भिन्नता लिए हुए थीं। कई शहरों में बहुत अधिक साक्षरता थी। वहीं दूसरी ओर साम्राज्य के कई शहरों में साक्षरता बहुत कम देखने को मिलती थी। उदाहरण के रूप में, रोम के पोम्पेई नगर में कामचलाऊ साक्षरता व्यापक रूप से विद्यमान थी। वहीं मिस्र में इसकी दर बहुत कम थी। मिस्र से प्राप्त अभिलेख हमें यह जानकारी प्रदान करते हैं कि अमुक व्यक्ति 'क' अथवा 'ख' भी पढ़ या लिख नहीं सकता था। लेकिन यहाँ भी कई वर्गों में साक्षरता बहुत अधिक थी। ऐसे वर्गों में सैनिक, सैनिक अधिकारी एवं सम्पदा [illegible] प्रबन्धक आदि प्रमुख थे।

**प्रश्न 15. रोमन साम्राज्य की व्यापारिक स्थिति [illegible] कीजिए?**

**उत्तर-** इंडो-रोमन व्यापार संबंध (मसाला व्यापार और धूप सड़क भी देखें) यूरोप और भूमध्य सागर में भारतीय उपमहाद्वीप और रोमन साम्राज्य के बीच व्यापार था। एशिया माइनर और मध्य पूर्व के माध्यम से ओवरलैंड कारवां मार्गों के माध्यम से व्यापार, हालांकि बाद के समय की तुलना में एक रिश्तेदार चाल में, लाल सागर और मानसून के माध्यम से दक्षिणी व्यापार मार्ग का विरोध किया, जो आम युग की शुरुआत के आसपास शुरू हुआ (सीई) शासनकाल के बाद ऑगस्टस और उसकी 30 ई.पू. में मिस्र की विजय।

सत्य असल पक्का यथार्थ सच्चा दक्षिणी मार्ग ने प्राचीन रोमन साम्राज्य और भारतीय उपमहाद्वीप के बीच व्यापार को बढ़ाने में मदद की, रोमन राजनेताओं और इतिहासकारों ने रोमन पत्नियों को रेशम खरीदने के लिए चांदी और सोने के नुकसान को कम करने का रिकॉर्ड बनाया है, और दक्षिणी मार्ग ग्रहण और फिर पूरी तरह से विकसित हुआ दबा देना ओवरलैंड व्यापार मार्ग।

**प्रश्न 16. रोमन साम्राज्य की सामाजिक श्रेणियों का वर्णन कीजिए?**

**उत्तर-** रोमन साम्राज्य (27 ई.पू. 476 (पश्चिम); 1453 (पूर्वी) यूरोप के रोम नगर में केन्द्रित एक साम्राज्य था। इस साम्राज्य का विस्तार पूरे दक्षिणी यूरोप के अलावा उत्तरी अफ्रीका और अनातोलिया के क्षेत्र थे। फारसी साम्राज्य इसका प्रतिद्वंदी था जो फरात नदी के पूर्व में स्थित था। रोमन साम्राज्य में अलग-अलग स्थानों पर लातिनी और यूनानी भाषाएँ बोली जाती थी और सन् 130 में इसने ईसाई धर्म को राजधर्म घोषित कर दिया था।

यह विश्व के सबसे विशाल साम्राज्यों में से एक था। यूँ तो पाँचवी सदी के अन्त तक इस साम्राज्य का पतन हो गया था और इस्तांबुल (कॉन्स्टेंटिनोपल) इसके पूर्वी शाखा की राजधानी बन गई थी पर सन् 1453 में उस्मानों (ऑटोमन तुर्क) ने इस पर भी अधिकार कर लिया था। यह यूरोप के इतिहास [illegible] संस्कृति का एक महत्वपूर्ण अंग है।

**प्रश्न 17. रोमन साम्राज्य के पतन की [illegible] विवरण दीजिए?**

**उत्तर-** रोमन साम्राज्य [illegible] साम्राज्य के पतन की प्रक्रिया छठी [illegible] गयी थी। साम्राज्य का पश्चिमी [illegible] के कारण राजनैतिक रूप से वि[illegible] आक्रमण उत्तर की ओर से जर्मन [illegible]थ, सैंडल, लोंबार्ड आदि में किए थे। इन्होंने [illegible]ज्य के सभी बड़े प्रान्तों पर अपना नियन्त्रण स्थापित [illegible]र अपने-अपने राज्य स्थापित कर लिये थे। इनमें से सबसे महत्वपूर्ण राज्य स्पेन के विसिगोथों का राज्य, गॉल में फ्रैंकों का राज्य तथा इटली में लोंबार्डों का राज्य था।

533 ई. में सम्राट जस्टीनियन ने अफ्रीका को वैंडलों के नियन्त्रण से मुक्त करवा लिया। उसने इटली को भी मुक्त

@anarwah450
Students unity

@amarwah450



करवाकर उस पर पुनः अधिकार कर लिया। इस घटनाक्रम से रोमन साम्राज्य को बहुत अधिक क्षति पहुँची और राज्य छिन्न-भिन्न हो गया। इससे लोम्बार्डों के आक्रमणों के लिए मार्ग प्रशस्त हो गया। सातवीं शताब्दी के आरम्भिक दशकों में रोम व ईरान के मध्य पुनः युद्ध छिड़ गया। ईरान के ससानी शासकों ने मिस्र सहित समस्त पूर्वी प्रान्तों पर आक्रमण कर दिया जो रोमन साम्राज्य के लिए घातक सिद्ध हुआ। तत्पश्चात् 642 ई. में पूर्वी रोमन और ससानी राज्यों के एक बड़े भाग पर अरबों ने अधिकार कर लिया। इस तरह रोमन साम्राज्य का पूर्ण रूप से पतन हो गया।

प्रश्न 18. दिए गए मानचित्र में निम्न स्थलों को पहचान कर उनके नाम लिखिए- 1. कैस्पियन सागर 2. फारस की खाड़ी 3. लाल सागर 4. काला सागर 5. डेन्यूब नदी 6. भू-मध्य सागर 7. रोम 8. राइन नदी।

उत्तर- निम्न मानचित्र में देखिए-

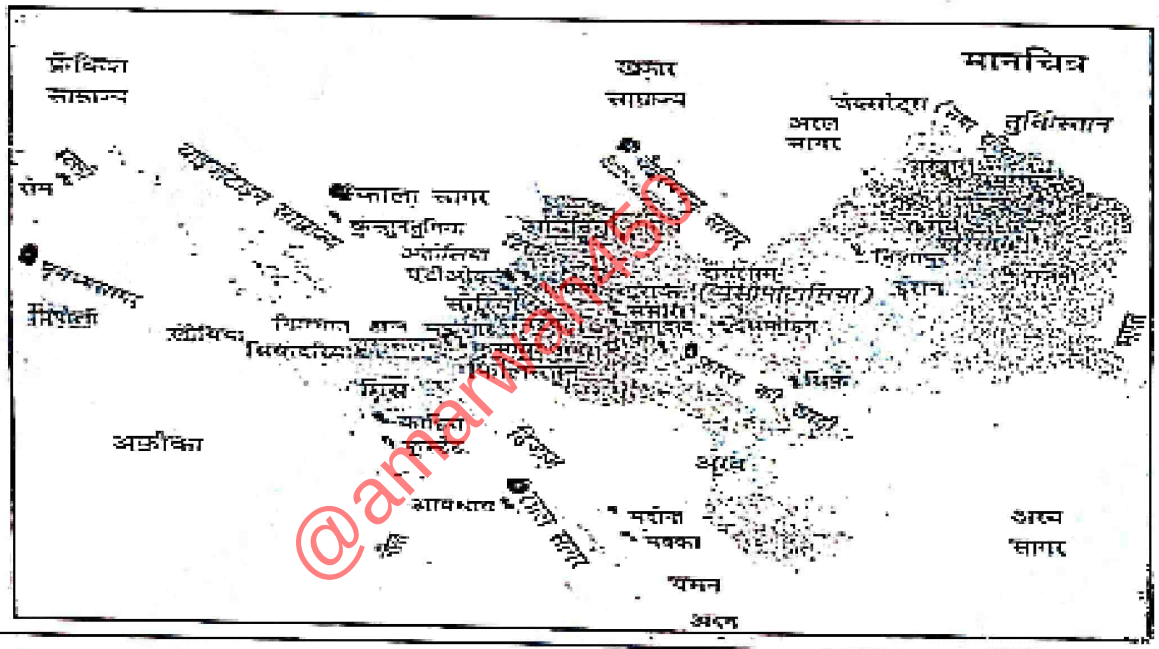




@amarwah450

## अध्याय-5 यायावर साम्राज्य

### वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनिए-

1. तेमुजिन (चंगेजखान) का जन्म किस वर्ष हुआ?
(अ) 1162 ई. लगभग (ब) 1206 ई. लगभग
(स) 1227 ई. लगभग (द) 1220 ई. लगभग

2. चंगेजखान की मृत्यु कब हुई?
(अ) 1230 ई. (ब) 1240 ई. (स) 1280 ई. (द) 1227 ई.

3. मंगोल सेना की सबसे बड़ी इकाई में कितने सैनिक शामिल थे?
(अ) 100 (ब) 1000 (स) 10,000 (द) 1,00,000

4. चंगेजखान की माता का नाम क्या था?
(अ) ओलुनईके (ब) फातिमा (स) रजिया (द) रुबिना।

5. चंगेजखान की विधि संहिता को किस नाम से जाना जाता था?
(अ) उलुस (ब) यासा (स) याम (द) यारा

6. कुबलईखान कौन था?
(अ) चंगेजखान के पिता (ब) चंगेजखान का पुत्र
(स) चंगेजखान का पोता (द) चंगेजखान का मित्र

7. किस सन् में तेमुजिन को चंगेजखान यानी मंगोलों का सार्वभौमिक शासक घोषित किया गया?
(अ) 1203 ई. (ब) 1204 ई.
(स) 1205 ई. (द) 1206 ई.

Students unity

8. बोघूरचू कौन था?
(अ) चंगेजखान के पिता (ब) चंगेजखान का पुत्र
(स) चंगेजखान का मित्र (द) चंगेजखान का पोता
9. शुंग राजवंश का आधिपत्य चीन के किस भाग पर था?
(अ) उत्तरी चीन (ब) पश्चिमी चीन
(सी) दक्षिणी चीन (द) पूर्वी चीन
10. मोन्के कौन था?
(अ) चंगेज खान के पिता (ब) चंगेज खान का पुत्र
(स) चंगेज खान का मित्र (द) चंगेज खान का पोता
उत्तर- (1)-(अ), (2)-(द), (3)-(स), (4)-(अ), (5)- (द), (6)-(स), (7)-(द), (8)-(स), (9)- (10)- (द)।

प्रश्न 2. रिक्तस्थानों की पूर्ति कीजिए-
(1) चंगेजखान के पिता येसूजेई ..... कबीले के मुखिया थे।
(2) मंगोल सरदारों की सभा को ..... कहा जाता था।
(3) गजन खान पहला इलखानी-शासक था जिसने धर्म परिवर्तन कर ..... धर्म ग्रहण किया।
(4) बर्बर शब्द यूनानी भाषा के ..... शब्द से उत्पन्न हुआ है।
(5) चंगेजखान ने ..... सन् में यास को किरिलताई में लागू किया।
(6) ख्वारिज्म के सुल्तान ..... को चंगेजखान प्रचंड कोप का भाजक बनना पड़ा जब उसने मंगोल दूतों का वध कर दिया।
(7) चंगेजखान ने संकेत दिया था कि उसका तीसरा पुत्र ..... उसका उत्तराधिकारी होगा।
(8) सन् 1260 में महान खान के रूप में ..... का राज्यारोहण हुआ।
(9) ..... ने 1526 ई. में भारत में मुगल साम्राज्य की नींव रखी।
(10) मंगोल शासकों के फारसी इतिहासकार ..... ने 1220 ई. में चंगेजखान की बुखारा की विजय का वृतांत दिया है।
उत्तर- (1) कियात, (2) परिषद, (3) इस्लाम, (4) बारबरोस, (5) 1206, (6) सुल्तान मोहम्मद, (7) ओगोदेई, (8) कुबलाई खान महानद, (9) बाबर, (10) जुवैनी।

प्रश्न 3. सही जोड़ी बनाइए-

| कॉलम-(अ) | कॉलम-(ब) |
|---|---|
| (1) 1227 ई. | (अ) चीन में यूआन राजवंश का अंत |
| (2) 1260 ई. | (ब) ख्वारिज्म का सुल्तान |
| (3) 1368 ई. | (स) चंगेजखान की मृत्यु |
| (4) जहीरुद्दीन बाबर | (द) कुबलाईखान का राज्यारोहण |
| (5) सुल्तान मोहम्मद | (ई) भारत में मुगल साम्राज्य के संस्थापक |
| (6) यास | (फ) तेमुजिन की पत्नी |
| (7) ओगोदेई | (ग) चंगेजखान के पिता |
| (8) बोरटे | (ह) घुमक्कड़ |
| (9) येसूजेई | (इ) चंगेजखान की विधि संहिता |
| (10) 1227 ई. | (ज) चंगेजखान का पुत्र एवं उत्तराधिकारी |

उत्तर- (1) (स), (2) (द), (3) (अ), (4) (ई), (5) (ब), (6) (इ), (7) (ज), (8) (फ), (9) (ग), (10) (ह)।

प्रश्न 4. एक शब्द/वाक्य में उत्तर दीजिए-
(1) चंगेज खान के पिता किस कुल से संबंधित थे?
(2) किसने स्वयं को गुरेगेन? की उपाधि से विभूषित किया।
(3) सुनहरा गिरोह का गठन किसने किया?
(4) चंगेजखान की विधि संहिता को किस नाम से जाना जाता है?
(5) गजनखान की मृत्यु कब हुई?
(6) चंगेजखान की मृत्यु के बाद हम मंगोल साम्राज्य को कितने चरणों में विभाजित कर सकते हैं?
(7) किस मंगोल राजकुमार ने राज्याभिषेक के बाद अपनी राजधानी कराकोरम में प्रतिष्ठित की थी?
(8) किस मंगोल शासक को स्वतंत्र मंगोलिया राष्ट्र में एक महान राष्ट्रनायक के रूप में सम्मानित किया जाता है?
(9) अपने प्रारंभिक स्वरूप में यास को क्या लिखा जाता था जिसका अर्थ था विधि, आज्ञप्ति व आदेश?
(10) मंगोल साम्राज्य की स्थापना किसके नेतृत्व में हुई?
उत्तर- (1) बोरजिगिद (2) दामाद-शाही (3) जोची (4) यास (5) 1304 (6) दो भागों (7) अंगोदेई (8) चंगेजखान (9) यसाक (10) चंगेजखान।

प्रश्न 5. सत्य/असत्य लिखिए-
(1) तैमूर ने स्वयं को चंगेजखानी परिवार के दामाद के रूप में प्रस्तुत किया।
(2) ओगोदेई ने सुनहरा गिरोह का गठन किया।
(3) मंगोलों की देखरेख में रेशम मार्ग पर व्यापार और भ्रमण अपने शिखर पर पहुंचा।
(4) मंगोल सैनिकों की सबसे बड़ी इकाई एक लाख सैनिकों की थी।
(5) मंगोल सैनिकों ने युद्ध अभियानों में बर्फ में जमी हुई नदियों का राजमार्ग की तरह प्रयोग किया।
(6) बातू चंगेजखान का पुत्र था।
(7) बर्बर शब्द यूनानी भाषा के बारबरोस से उत्पन्न हुआ है।
(8) चंगेजखान का मंगोल साम्राज्य यूरोप और एशिया महाद्वीप तक विस्तृत था।
(9) तेमुजिन को 1227 ई. में चंगेजखान यानी मंगोलों का सार्वभौमिक शासक घोषित किया गया।

@amarwal1450

(10) चंगेजखान का पोता कुबलई खान कृषकों और नगरों के रक्षक के रूप में उभरा।

उत्तर- (1) सत्य (2) असत्य (3) सत्य (4) असत्य (5) असत्य (6) असत्य (7) सत्य (8) सत्य (9) असत्य (10) सत्य।

## अति लघु उत्तरीय प्रश्न

**प्रश्न 1. नोयान क्या है?**

उत्तर- चंगेज खान ने अपने चार पुत्रों चोची, चघताई, ओगोदई, और तोलोए के नेतृत्व में नयी सैन्य टुकड़ियों का गठन किया, जिसे 'नोयान' कहा जाता था। नोयान के कप्तान महत्वपूर्ण व्यक्ति होते थे, जिनका चयन विशेष प्रक्रिया के तहत किया जाता था।

**प्रश्न 2. कुरिलताई क्या है तथा इसमें किस प्रकार के निर्णय लिए जाते थे?**

उत्तर- 'कुरिलताई' मंगोल सरदारों की एक सभा है। इसमें दो महत्वपूर्ण निर्णय लिए जाते हैं:

(i) कुरिलताई ने उत्तराधिकार से संबंधित निर्णय लिए।

(ii) कुरिलताई ने साम्राज्य के और विस्तार के संबंध में भी निर्णय लिए।

**प्रश्न 3. चंगेजखान के पिता का नाम क्या था तथा यह किस कबीले के मुखिया थे?**

उत्तर- चंगेजखान के पिता का नाम येसूजेई था, यह कियात कबीले का मुखिया था।

**प्रश्न 4. चीन की महान दीवार का निर्माण क्यों किया गया था?**

उत्तर- चीन की महान दीवार का निर्माण चीनी शासक द्वारा अपने लोगों को मंगोलिया की खानाबदोश जनजातियों के खतरे से बचाने के लिए किया गया था।

**प्रश्न 5. पैजा तथा जेरेज क्या है? यह किन-किन भाषाओं में जारी किए गए?**

उत्तर- सुरक्षित यात्रा के लिए यात्रियों को पास जारी किए जाते थे जिसे फारसी भाषा में पैजा तथा मंगोल भाषा में जेरेज कहा जाता है। यह फारसी तथा मंगोल भाषा में होते हैं।

**प्रश्न 6. बाज नामक कर का क्या महत्व था?**

उत्तर- मंगोल शासन के दौरान संचार और आवागमन के साधनों के विकास पर आवश्यक ध्यान दिया गया, जिसके परिणामस्वरूप व्यापारी गण सरलता से एक स्थान से दूसरे स्थान तक आ जा सकते थे। यात्रियों की सुरक्षित यात्रा के लिए, यात्रियों को पास जारी किये जाते थे, इन्हें फारसी में 'पैजा' और मंगोल भाषा में 'जेरेज' कहा जाता था। यात्रा-पास की सुविधा का उपभोग करने के लिए व्यापारियों से 'बाज' नामक कर लिया जाता था। इस कर को अदा करने का अभिप्राय यह था कि अदाकर्ता मंगोल शासक की सत्ता को स्वीकार करते थे।

**प्रश्न 7. कुबकुर क्या है?**

उत्तर- चंगेज खान दूरदर्शी था, दूरवर्ती क्षेत्रों में सम्पर्क बनाए रखने हेतु संचार पद्धति की आवश्यकता थी। इस पद्धति को याम (हरकारा) पद्धति कहा जाता है।

इस व्यवस्था में निश्चित दूरी पर बनाई सैनिक चौकियों में शक्तिशाली घुड़सवार संदेश वाहक होते थे जो सूचनाओं का आदान-प्रदान करते थे। ये संदेशवाहक सूचनाओं को तेज गति से एक चौकी से दूसरी चौकी में पहुंचाते थे।

हरकारा पद्धति (याम) के संचालन के लिए राज्य के कर लिया जाता था। जिसे 'कुबकुर' कहा जाता था। इसमें मंगोल यायावर अपने पशु समूहों का दसवाँ भाग देते थे। यह पद्धति साम्राज्य के लिए काफी उपयोगी थी।

**प्रश्न 8. कौन सा शासक कृषकों और नगरों के रक्षक के रूप में उभरा तथा वह चंगेजखान से किस प्रकार सम्बन्धित था?**

उत्तर- चंगेज खान का पोता कुबलई खान कृषकों और नगरों के रक्षक के रूप में उभरा। वह चंगेजखान का पोता था।

**प्रश्न 9. मंगोलों के सैन्य अभियान से रेशम मार्ग के व्यापार पर क्या प्रभाव पड़ा?**

उत्तर- मंगोल के सैन्य अभियान से यूरोप और चीन के भू-भाग आपसी संपर्क में आए। फलस्वरूप दोनों भागों के संबंध गहरे हो गए। मंगोलों की देखरेख में रेशम मार्ग का व्यापार अपने शिखर पर पहुँच गया।

**प्रश्न 10. मंगोल कौन थे?**

उत्तर- मंगोल यायावरी समाज से सम्बन्धित थे। मंगोल विविध जनसमुदायों के एक समूह का नेतृत्व करते थे। मंगोल भाषाई समानता के आधार पर पूर्व में तातार, खितान खितान और मंचू लोगों से तथा पश्चिम में तुर्की कबीलों से परस्पर सम्बद्ध थे। इनमें से कुछ मंगोल पशुपालक थे तथा कुछ शिकारी संग्राहक थे। पशुपालक मंगोल घोड़ों, भेड़-बकरियों और ऊँटों को पालते थे।

इन मंगोलों का यायावरीकरण मध्य एशिया के हरे-भरे मैदानों (स्टेपीज) में हुआ। जो वर्तमान में आधुनिक मंगोलिया राज्य के अन्तर्गत आता है। प्राकृतिक दृष्टि से इस क्षेत्र का परिदृश्य अत्यन्त मनोरम था। इस क्षेत्र के पश्चिमी भाग में अल्ताई पहाड़ों की बर्फीली चोटियां थीं तथा दक्षिण में गोबी का शुष्क मरुस्थल फैला हुआ था।

**प्रश्न 11. यायावर समाज के ऐतिहासिक स्रोत कौन-कौन से हैं?**

उत्तर- यायावर समाज के ऐतिहासिक स्रोत निम्न है-

(1) यात्रा वृतांत नगरीय साहित्यकारों के दस्तावेज। कुछ निर्णायक स्रोत हमें चीनी, मंगोली, फारसी और अरबी भाषा में भी उपलब्ध है।

@amarwah450

(2) हम चीनी, मंगोलियाई, फारसी, अरबी, इतालवी, लैटिन, फ्रेंच और रूसी स्रोतों से पारगमन मंगोल साम्राज्य के बारे में सबसे महत्वपूर्ण जानकारी पाते हैं।

**प्रश्न 12. बर्बर शब्द का अर्थ स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर- बर्बर बारबेरियन (अंग्रेजी) शब्द, यूनानी भाषा में बारबारोस शब्द से बना है, इसका तात्पर्य गैर यूनानी लोगों से है। जिनकी भाषा यूनानियों को 'बर-बर' के समान लगती थी। यूनानियों का मानना था कि बर्बर बच्चों की तरह हैं जिनकी बोलने, सोचने की क्षमता नहीं होती। यह आलसी, विलासी, डरपोक थे। रोमवासियों ने बर्बर शब्द का प्रयोग जर्मन, जनजाति गॉल व हूण से किया है। चीनियों ने बर्बर शब्द का प्रयोग स्टेपी प्रदेश के बर्बरों के लिए किया। इसका कोई सकारात्मक अर्थ नहीं है।

**प्रश्न 13. उलुसों का गठन किस प्रकार हुआ?**

उत्तर- उलुस का गठन कर चंगेज ने विजित क्षेत्रों का भार अपने चारों पुत्रों को सौंपा। उलूस शब्द किसी एक निश्चित भू-भाग का प्रतीक नहीं था, क्योंकि चंगेज की साम्राज्य सीमा निर्धारित नहीं हुई थी। वह अभी और अधिक विजय करना चाहता था। उलूस का अर्थ था दूरस्थ सीमा जिसका निर्धारण नहीं हुआ था। उसने बड़े पुत्र जोची को रूस का स्टेपी प्रदेश दिया था जो कि सुदूर पश्चिम तक फैला हुआ था

1236-42 ई. जोगी के पुत्र बातू ने रूस, पोलैण्ड, व हंगरी पर आक्रमण किया था। उसका दूसरा पुत्र चघताई को तूरान स्टेपी क्षेत्र प्राप्त हुआ। चघताई ने पश्चिम की ओर बढ़ते हुए सीमाओं का विस्तार किया।

चंगेज का तीसरा पुत्र ओगोदेई ने महा खान की उपाधि प्राप्त किया था। उसने काराकोरम को राजधानी बनायी। उसने 1227 से 1241 ई. तक शासन किया। सबसे छोटे पुत्र तोलोए को मंगोलिया (पैतृकभूमि) प्राप्त हुई।

चंगेज खान ने अपने चारों पुत्रों को एकजुट बनाए रखने के लिए अलग-अलग उलूसों का मालिक बनाया था, ताकि साम्राज्य सुचारु रूप से चलता रहे। उसने हर राजकुमार को सैन्य टुकड़ी (तामा) दिया। ये टुकड़ी उलूसों में रहती थी।

**प्रश्न 14. स्टेपी क्षेत्रों की पुरानी दशमलव पद्धति क्या थी?**

उत्तर- चंगेज खान अपने संघ में जनजातीय समूहों की पहचान को भी खत्म करना चाहता था। उसने सेना का संगठन स्टेपी प्रदेश की दशमलव प्रणाली पर किया था। कुल, कबीले व सैनिक दशमलव पद्धति में बांटे गए थे। इस व्यवस्था में सेना को दस, सौ, हजार व दस हजार की इकाइयों में बाँटा गया था। कुल व कबीले के सदस्यों का संगठन एक में ही था। विद्रोह की संभावना इन्हीं वजहों से होती रहती थी।

**प्रश्न 15. अपने प्रारंभिक स्वरूप में यास को क्या कहा जाता था तथा इसका क्या अर्थ था?**

उत्तर- यास चंगेज खान की विधि संहिता थी। मौलिक रूप में यास को यसाक लिखा जाता था जिसका अर्थ था विधि अज्ञप्ति व आदेश। वर्तमान शोध के आधार पर यह माना जाता है कि यास का सम्बन्ध प्रशासनिक विनियमों से था, जैसे आखेट, सैन्य और डाक प्रणाली का संगठन। ऐसा माना जाता है कि चंगेज खान ने 1206 ई. में किरिलताई में इसे लागू किया था। तेरहवीं शताब्दी शताब्दी के मध्य तक यास काफी महत्वपूर्ण बन गया था और इसे चंगेज खान की विधि संहिता के तौर पर माना जाने लगा।

## लघु उत्तरीय प्रश्न

**प्रश्न 1. विजित लोगों को नवीन यायावर शासकों से लगाव नहीं था क्यों? स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर- विजित लोगों को अपने नये यायावर शासकों से कोई लगाव नहीं था स्पष्ट है :

(i) नव विजित क्षेत्रों के अनेक नगर नष्ट कर दिए गए थे।

(ii) कृषि-भूमि को क्षति पहुंची थी।

(iii) व्यापार चौपट हो गया था।

(iv) दस्तकारियाँ अस्त-व्यस्त हो गई थी।

**प्रश्न 2. हरकारी पद्धति क्या है? स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर- मंगोलों ने अपने साम्राज्य के दूरवर्ती क्षेत्रों में परस्पर संपर्क बनाए रखने के लिए एक विशेष संचार पद्धति को अपनाया, जिसे हरकारा पद्धति (याम) के नाम से जाना जाता है। चंगेज खान दूरदर्शी था, दूरवर्ती क्षेत्रों में सम्पर्क बनाए रखने हेतु संचार पद्धति की आवश्यकता थी। इस पद्धति को याम (हरकारा) कहा जाता है।

इस व्यवस्था में निश्चित दूरी पर बनाई सैनिक चौकियों में शक्तिशाली घुड़सवार संदेश वाहक होते थे जो सूचनाओं का आदान-प्रदान करते थे। ये संदेशवाहक सूचनाओं को तेज गति से एक चौकी से दूसरी चौकी में पहुंचाते थे।

हरकारा पद्धति (याम) के संचालन के लिए राज्य से कर लिया जाता था जिसे 'कुबकुर' कहा जाता था। इसमें मंगोल यायावर अपने पशु समूहों का दसवाँ भाग देते थे। यह पद्धति साम्राज्य के लिए काफी उपयोगी थी।

**प्रश्न 3. मंगोल इतिहास में सन् 1206 ई. क्यों महत्वपूर्ण है?**

उत्तर- 1206 ई. में तेमुजिन ने शक्तिशाली जमूका और नेमन लोगों को निर्णायक रूप से परास्त किया। इस विजयों के परिणामस्वरूप तेमुजिन स्टेपी क्षेत्र की राजनीति का सबसे प्रभावशाली और शक्तिशाली व्यक्ति बन गया। 1206 ई. में.

@amarwah450

students unity



उसको इस प्रतिष्ठा को मंगोल सरदारों की एक परिषद् (कुरिलताई) ने मान्यता प्रदान की और उसे 'चंगेज खान' (समुद्री खान अथवा सार्वभौम खान) की उपाधि से सम्मानित किया गया तथा उसे मंगोलों का महानायक घोषित किया गया। 1206 ई. में मंगोलों का 'खान' बनने के बाद चंगेज खान ने अधीनस्थ जनजातियों को अपनी प्रजा के रूप में परिवर्तित करके अपनी स्थिति को और अधिक मजबूत कर लिया। उसने कबीलाई संघों को अपनी विजयी सेना के रूप में परिवर्तित कर दिया।

**प्रश्न 4. चंगेजखान की सफलता के तीन कारण लिखिए।**

**उत्तर-** चंगेज खान ने अपने जीवन का अधिकांश समय युद्धों में व्यतीत किया और वह मृत्युपर्यन्त युद्धों में ही लगा रहा। वह अत्यन्त साहसी व सूझ-बूझ वाला व्यक्ति था। उसकी उपलब्धियाँ आश्चर्यचकित कर देने वाली थीं। उसने अपनी अद्भुत संगठन प्रतिभा का परिचय देते हुए पशुपालक और शिकार-संग्राहक कबीलों को वफादार व कुशल सैनिकों में बदल दिया। उसकी सफलताएँ उसकी सूझ-बूझ पर आधारित थीं, जिनका वर्णन निम्नांकित है-

(1) स्टेपी प्रदेश की भौगोलिक स्थिति घुड़सवारी के अनुकूल थी अतः तेज गति के घोड़े तैयार किए गए, इन पर घुड़सवारी कर अचानक शत्रुओं पर आक्रमण करना, ताकि शत्रु आश्चर्य में पड़ जाए।

(2) घुड़सवारों से वे सीमावर्ती भू-मार्गों की जानकारी लेते रहते थे, मौसम का भी पता करते, जिससे युद्ध लड़ने में आसानी हो।

(3) शीत ऋतु में ही मंगोल अभियान करते, ताकि बर्फ जमी रहे और नदियों का प्रयोग मार्गों के रूप में किया जा सके।

(4) चंगेज खान ने अपनी सेना में तुर्कों को भी शामिल किया, मंगोलों की भाँति तुर्क भी अच्छे घुड़सवार थे।

(5) जंगलों में शिकारी संग्राहकों व पशुचारकों ने अच्छी तीरंदाजी सीखी हुई थी, इन कुशल तीरंदाजों को चंगेज खान ने सेना की एक टुकड़ी में सम्मिलित किया, ताकि घुड़सवारी करते हुए तीर चलाकर युद्धों में, आगे बढ़ा जा सके।

(6) नेफ्था बमबारी व घेराबन्दी यंत्रों के महत्व को चंगेज खान अच्छे से समझता था। उनके अभाव में दुर्गों व प्राचीरों से आच्छादित किलों में घुसना संभव न था।

(7) चंगेज खान के इंजीनियरों ने हल्के चल-उपस्कर तैयार किए थे। जिससे अभियानों में सफलता प्राप्त की जा सकें।

(8) एक प्रभावशाली रणनीति भी तैयार की जाती थी।

**प्रश्न 5. तैमूर ने अपने आपको किस उपाधि से विभूषित किया था तथा क्यों?**

**उत्तर-** चौदहवीं शताब्दी के अंत में एक अन्य राजा तैमूर जो एक विश्वव्यापी राज्य की आकांक्षा रखता था, ने अपने को राजा घोषित करने में संकोच का अनुभव किया, क्योंकि वह चंगेज खान का वंशज नहीं था। जब उसने अपनी स्वतंत्र संप्रभुता की घोषणा की तो अपने को चंगेज़ खानी परिवार के दामाद के रूप में प्रस्तुत किया।

**प्रश्न 6. बाबर चंगेजखान से किस प्रकार संबंधित था तथा भारत में उसने किस साम्राज्य की नींव रखी?**

**उत्तर-** बाबर तैमूर लंग और चंगेज खान के पोते का बेटा था. बता दें कि मुगल दो महान शासक वंशों के वंशज थे। माँ की ओर से वे चीन और मध्य एशिया के मंगोल शासक चंगेज खान के उत्तराधिकारी थे। पिता की ओर से वे ईरान, इराक और तुर्की के शासक तैमूर के वंशज थे। हालांकि मुगल अपने को मुगल या मंगोल कहलवाना पसंद नहीं करते थे। ऐसा इसलिए था, क्योंकि चंगेज खान से जुड़ी यादें सैंकड़ों व्यक्तियों के नरसंहार से संबंधित थी, साथ ही उन्हें तैमूर के वंशज होने पर भी काफी गर्व था, क्योंकि तैमूर ने ही 1398 में दिल्ली पर कब्जा कर लिया था।

**प्रश्न 7. चंगेजखान के शासन में नागरिक प्रशासक किस प्रकार महत्वपूर्ण थे? स्पष्ट कीजिए।**

**उत्तर-** चंगेज खान खानाबदोश समाज से थे। क्षमता के आधार पर उसने एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की। उनके साम्राज्य में समाज के विभिन्न क्षेत्रों के लोग शामिल थे और वे सभ्य लोग थे। इतने विविध समाज पर शासन करना कोई आसान काम नहीं था। इसलिए उन्होंने नागरिक प्रशासन की देखभाल के लिए सभ्य समाज के लोगों को नियुक्त किया। अधिकारी नागरिक प्रशासन से संबंधित थे और योग्यता के आधार पर नियुक्त किए गए थे। आदिवासियों या धार्मिक समानता को नागरिक प्रशासन में नियुक्त करते समय उन्हें कोई श्रेय नहीं दिया गया। मंगोल साम्राज्य की नींव को और मजबूत करने में नागरिक प्रशासन ने उत्कृष्ट भूमिका निभाई। उन्होंने प्रशासन से संबंधित अपनी नीतियों को बदलने के लिए मंगोल शासकों को भी प्रभावित किया। उन्होंने चंगेज खान को 'यान प्रणाली के महत्व' के बारे में भी अवगत कराया जैसा कि चीन में चलन किया जाता है।

**प्रश्न 8. गजन खान ने अपने भाषण में कृषकों के बारे में क्या विचार व्यक्त किए तथा क्यों?**

**उत्तर- गजन खान का भाषण-** गजन खान (1295-1304) इस्लाम में परिवर्तित होने वाला पहला इल-खानीद शासक था। उन्होंने मंगोल-तुर्की खानाबदोश कमांडरों को निम्नलिखित भाषण दिया, एक भाषण जो संभवतः उनके फ़ारसी वज़ीर रशीदुद्दीन द्वारा तैयार किया गया था और मंत्री के पत्रों में शामिल था:

@amarwah450

'मैं फारसी किसानों के पक्ष में नहीं हूं। यदि उन सब को लूटने का कोई प्रयोजन है, तो ऐसा करने की शक्ति मुझ से बढ़कर और कोई नहीं है। आइए हम सब मिलकर उन्हें लूटें। लेकिन अगर आप भविष्य में अपनी सेनाओं के लिए अनाज और भोजन इकट्ठा करने के बारे में निश्चित होना चाहते हैं, तो मुझे आपके साथ कठोर होना चाहिए। आपको कारण सिखाया जाना चाहिए। यदि आप किसानों का अपमान करते हैं, उनके बैल और बीज ले जाते हैं और उनकी फसलों को जमीन में रौंद देते हैं, तो आप भविष्य में क्या करेंगे?... आज्ञाकारी किसानों को विद्रोही किसानों से अलग किया जाना चाहिए।

**प्रश्न 9. चंगेजखान के प्रारंभिक जीवन पर प्रकाश डालिए।**

**उत्तर-** चंगेज खान सबसे महान मंगोल था जिसने खानाबदोश साम्राज्य की नींव रखी। मंगोलों को एकजुट करने में उनका योगदान बहुत बड़ा था। उनके प्रयासों के कारण ही एक विशाल मंगोल साम्राज्य की स्थापना हुई। उनका जन्म वर्ष 1162 में हुआ था। उनका जन्म ओनोन नदी के पास हुआ था। उनके पिता का का नाम येसुसेई था, जो कियत जनजाति के मुखिया थे। उनकी मां ओल्यून-एके ओरनगेरट जनजाति की थीं। उनका मूल नाम टेमुजिन था। वह एक बहादुर आदमी के रूप में बड़ा हुआ। उसने एक शक्तिशाली सेना का गठन किया जिसने उसे एक विशाल साम्राज्य की नींव रखने में मदद की। उनकी मुख्य उपलब्धियां उत्तरी चीन की विजय, कारा केतो की विजय आदि थी। 1219 से 1222 सीई की अवधि के दौरान मंगोल सेना ने बुखारा, समरकंद, बाल्क, मर्व, निशापुर और हेरात पर कब्जा कर लिया। चंगेज ने न केवल विशाल साम्राज्य का निर्माण किया, बल्कि साम्राज्य के नागरिक प्रशासन को बेहतर बनाने में भी बहुत योगदान दिया।

**प्रश्न 10. तैमूर ने स्वयं को राजा घोषित करने में संकोच का अनुभव क्यों किया तथा स्वतंत्र संप्रभुता की घोषणा किस प्रकार की?**

**उत्तर-** तैमूर विश्वव्यापी राज्य की आकांक्षा रखने वाला एक महत्वाकांक्षी राजा था। उसे अपने को राजा घोषित करने में इसलिए संकोच था, क्योंकि वह चंगेज खान का वंशज नहीं था, लेकिन जब उसने अपनी स्वतंत्र संप्रभुता की घोषणा की तो उसने आप को चंगेज खानी परिवार के दामाद के रूप में प्रस्तुत किया।

**प्रश्न 11. चंगेजखान का विश्व इतिहास में स्थान प्रतिपादित कीजिए।**

**उत्तर-** चंगेजखान ने ही प्रसिद्ध मंगोल साम्राज्य की नींव डाली, जिसकी पूरी दुनिया के 22 फीसदी इलाके पर कब्जा था, चंगेजखान के बारे में यह भी मशहूर है कि वह चीन की दीवार को पार कर बीजिंग को लूटना और अपने जीवन के आखिरी समय में इस्लाम धर्म स्वीकार करना चाहता था। उसकी मृत्यु 1227 में हुई थी।

**प्रश्न 12. चंगेजखान का स्वतंत्र मंगोलिया राष्ट्र के इतिहास में क्या स्थान है? स्पष्ट कीजिए।**

**उत्तर- चंगेज खान और मंगोलों का विश्व इतिहास में स्थान-** आज के सभ्य समाज में चंगेज खान को एक विध्वंसक विजेता और शासक के रूप में देखा जाता है; जिसने अनेक नगरों को ध्वस्त किया और हजारों निर्दोष लोगों को मौत की नींद सुला दिया। तेरहवीं शताब्दी में चीन, ईरान और पूर्वी यूरोप के नगरों के लोग मंगोलों को भय और घृणा की दृष्टि से देखते थे, लेकिन फिर भी मंगोलों के लिए चंगेज खान अब तक का सबसे महान शासन था जिसने मंगोलों को संगठित किया और उन्हें दीर्घकालीन कबीलाई लड़ाइयों एवं चीनियों के शोषण से मुक्त कराया था। इसके अतिरिक्त, उसने एक विशाल व समृद्ध पारमहाद्वीपीय साम्राज्य स्थापित किया और व्यापार के रास्तों व बाजारों को पुनर्स्थापित किया। उसके इस साम्राज्य में विभिन्न मतों एवं आस्थाओं वाले लोग सम्मिलित थे। यद्यपि मंगोल शासक स्वयं भी विभिन्न आस्थाओं और धर्मों-शमन, बौद्ध, ईसाई और इस्लाम से सम्बन्ध रखने वाले थे; फिर भी उन्होंने अपने व्यक्तिगत मत को कभी भी सार्वजनिक नीतियों पर नहीं थोपा। मंगोल शासकों ने सभी जातियों और धर्म के लोगों को अपने यहाँ प्रशासकों और सैनिक के रूप में भर्ती किया। मंगोलों ने बहुजातीय, बहुभाषी और बहुधार्मिक शासन की स्थापना करके आगामी शासकों के लिए एक आदर्श प्रस्तुत किया था।

मंगोलों की बहुजातीय, बहुभाषी और बहुधार्मिक चरित्र की स्पष्टता इस विवरण से उजागर होती है- "एक फ्रेन्सिसकन भिक्षु, रूब्रुक निवासी विलियम को फ्रांस के सम्राट लुई IX ने राजदूत बनाकर महान खान मोंके के दरबार में भेजा। वह 1254 ई. में मोंके की राजधानी काराकोरम पहुंचा और वहाँ वह लोरेन, फ्रांस की एक महिला पकेट (Paquette) के सम्पर्क में आया जिसे हंगरी से लाया गया था। यह महिला राजकुमार की पत्नियों में से एक पत्नी की सेवा में नियुक्त थी जो नेस्टोरियन ईसाई थी। वह दरबार में एक फारसी जौहरी ग्वीयोम बूशेर के सम्पर्क में आया, जिसका भाई पेरिस के 'ग्रेन्ड पोन्ट' में रहता था। इस व्यक्ति को सर्वप्रथम रानी सोरगकतानी ने और उसके उपरान्त मोंके के छोटे भाई ने

@amarwah450

अपने पास नौकरी में रखा। विलियम ने यह देखा कि विशाल दरबारी उत्सवों में सर्वप्रथम नेस्टोरियन पुजारियों को उनके चिन्हों के साथ तथा इसके उपरान्त मुसलमान, बौद्ध और ताओ पुजारियों को महान खान को आशीर्वाद देने के लिए आमंत्रित किया जाता था।....' यह विवरण 13वीं शताब्दी के मध्य में मंगोलों द्वारा स्थापित 'पैक्स मंगोलिका' के बहुजातीय, बहुभाषी और बहुधार्मिक चरित्र को स्पष्ट करता है।

दशकों के रूसी नियंत्रण के बाद वर्तमान में मंगोलिया एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में अपनी पहचान बना रहा है। मंगोलिया के चंगेज खान को एक महान राष्ट्र-नायक का स्थान प्रदान किया गया है, जिसका सार्वजनिक रूप से सम्मान किया जाता है और उनकी उपलब्धियों का वर्णन गर्व के साथ किया जाता है।

**प्रश्न 13. यास क्या था? यास के महत्व में परिवर्तन के क्या कारण थे?**

**उत्तर-** यास या यसाक एक प्रकार से चंगेज खान की विधि संहिता थी, जिसका शाब्दिक अर्थ होता था- 'विधि' या आज्ञप्ति या आदेश। वास्तव में यसाक का सम्बन्ध प्रशासनिक विधियों से है, जैसे-आखेट का व्यवस्थापन करना, सेना को संगठित करना, डाक व्यवस्था का निर्माण करना आदि।

उनके वंशज बाद के मंगोलों पर चंगेज खान के कठोर नियमों को अपनी प्रजा पर लागू नहीं कर सकते थे। इसका कारण यह था कि वे अब स्वयं काफी सभ्य हो चुके थे और अनेक सभ्य जातियों के लोगों पर उनका राज्य स्थापित हो चुका था। नि:संदेह चंगेज खान के वंशजों को विरासत के रूप में जो कुछ भी मिला वह महत्वपूर्ण था, लेकिन उनके सामने एक समस्या थी। उन्हें अब एक स्थानबद्ध समाज में अपनी धाक जमानी थी। इस बदले हुए समय में वे वीरता की वह तस्वीर पेश नहीं कर सकते थे जैसी कि चंगेज खान ने की थी। इस प्रकार यास का संकलन चंगेज खान की स्मृति के साथ गहराई से जुड़ा था।

**प्रश्न 14. यायावर साम्राज्य से आप क्या समझते हैं?**

**उत्तर-** यायावर मुख्य रूप से घुमक्कड़ लोग होते हैं जो बहुत से परिवारों के समूह में संगठित होते हैं तथा जिनका आर्थिक जीवन सापेक्षिक रूप से एक ही प्रकार का और राजनैतिक संगठन भी प्रारम्भिक व्यवस्था से मिलता-जुलता है। दूसरी ओर साम्राज्य शब्द भौतिक अवस्थितियों को प्रकट करता है, जिसने उनके जटिल सामाजिक व आर्थिक ढाँचे में स्थिरता प्रदान की है और एक सुपरिष्कृत प्रशासनिक व्यवस्था के द्वारा एक विस्तृत भूभागीय क्षेत्रों में सुचारु रूप से शासन किया। इसलिए चंगेज़ खान द्वारा निर्मित साम्राज्य को यायावर साम्राज्य की संज्ञा दी गई है।

**प्रश्न 15. चंगेजखान द्वारा अपनाई गई संचार प्रणाली क्या थी? इसकी मुख्य विशेषताएँ बताइए।**

**उत्तर-** चंगेज खान ने एक फुर्तीली संचार (हरकारा) पद्धति अपना रखी थी जिससे राज्य के दूर स्थित स्थानों में आपसी संपर्क बना रहता था। अपेक्षित दूरी पर सैनिक चौकियाँ बनाई गई थीं। इन चौकियों में स्वस्थ एवं शक्तिशाली घोड़े तथा घुड़सवार तैनात रहते थे। ये घुड़सवार संदेशवाहक का काम करते थे। इस संचार पद्धति के संचालन के लिए मंगोल यायावर अपने घोड़ों अथवा पशुओं का दसवाँ भाग प्रदान करते थे। इसे 'कुबकुर' कर कहते थे। यायावर लोग यह कर अपनी इच्छा से प्रदान करते थे। इससे उन्हें अनेक लाभ प्राप्त होते थे। चंगेज खान की मृत्यु के पश्चात इस हरकारा पद्धति (याम) में और भी सुधार लाये गये। इस पद्धति से महान खानों को अपने विस्तृत साम्राज्य के सुदूर स्थानों में होने वाली घटनाओं पर निगरानी रखने में सहायता मिलती थी।

**प्रश्न 16. मंगोल वंश का संक्षिप्त परिचय दीजिए।**

**उत्तर-** मंगोल वंश का संस्थापक चंगेज खान था। उसके अनेक बच्चे थे। परंतु उसके वंश को उसकी पटरानी बोरटे के गर्भ से पैदा हुए उसके चार पुत्रों ने आगे बढ़ाया। इनके नाम थे जोची, चघताई, ओगोदाई तथा तोलोए चंगेज खान का सबसे बड़ा पुत्र जोची था। उसके पास अपार शक्ति थी। परंतु उसके यहाँ कोई शूरवीर पैदा नहीं हुआ। जोची के पुत्र बातू ने ओगोदेई के वंश को समर्थन देने से इंकार कर दिया। अतः शक्ति तोलोए परिवार के हाथों में आ गई। इस बात ने मोंके कुबलई के लिए सत्ता के द्वार खोल दिए।

**प्रश्न 17. मंगोल किस क्षेत्र के निवासी थे, इस क्षेत्र का परिदृश्य कैसा था?**

**उत्तर-** मंगोल मध्य एशिया के स्टेपी क्षेत्र के निवासी थे। यह प्रदेश आज के आधुनिक मंगोलिया राज्य का भू-भाग था। उस समय इस क्षेत्र का परिदृश्य आज जैसा ही मनोरम था। यह प्रदेश लहरदार मैदानों से घिरा था। इसके पश्चिमी भाग में अल्ताई पहाड़ों की बर्फीली चोटियाँ थीं, जबकि दक्षिणी भाग में गोबी का शुष्क मरुस्थल फैला था। इसके उत्तर और पश्चिम के क्षेत्र का ओनोन एवं सेलेंगा नदियाँ और बर्फीली पहाड़ियों से निकले सैकड़ों झरने सींचते थे।

@amarwah450

पशुपालन के लिए यहाँ पर हरी-भरी घास के मैदान थे। अनुकूल ऋतुओं में यहाँ प्रचुर मात्रा में छोटे-मोटे शिकार उपलब्ध हो जाते थे। स्टेपी क्षेत्र में तापमान सारा साल लगभग एक समान रहता था। शीत ऋतु के कठोर और लंबे मौसम के बाद छोटी एवं शुष्क गर्मियों की अवधि आती थी। चारण क्षेत्र में साल की कुछ सीमित अवधियों में ही कृषि करना संभव था।

**प्रश्न 18. चार 'उलुस' का गठन किस प्रकार हुआ, इन उलुस का संक्षिप्त परिचय दीजिए।**

**उत्तर-** चंगेज खान ने चार उलुसों का गठन करके अपने नवविजित क्षेत्रों के शासन का दायित्व अपने चार पुत्रों-जोची, चघताई, ओगोदेई और तोलोए को सौंप दिया था। मूलतः 'उलुस' शब्द का अर्थ किसी निश्चित भू-भाग से नहीं था। निःसंदेह चंगेज खान का जीवन अभी निरंतर विजयों और साम्राज्य की सीमाओं को विस्तृत करने के दौर से गुजर रहा था, उसके साम्राज्य की सीमा निरंतर अत्यन्त परिवर्तनशील थीं। इसी क्रम में उसने अपने ज्येष्ठ पुत्र जोची को रूसी-स्टेपी प्रदेश दिया था, जिसका विस्तार सुदूर पश्चिम तक विस्तृत था, लेकिन उसकी दूरस्थ सीमा (उलुस) निर्धारित नहीं थी। चंगेज खान ने अपने दूसरे पुत्र चघताई को तूरान का स्टेपी क्षेत्र एवं पामीर के पहाड़ का उत्तरी क्षेत्र प्रदान किया था। संभवतः चघताई के पश्चिम की ओर बढ़ते रहने के साथ-साथ उसके अधिकार क्षेत्र की सीमाओं का विस्तार होता गया होगा। चंगेज खान ने अपने जीवनकाल में अपने सरदारों को यह संकेत दिया था कि उसका तीसरा पुत्र ओगोदेई महान खान की उपाधि के साथ उसका उत्तराधिकारी बनेगा। ओगोदेई ने अपने राज्याभिषेक के बाद अपनी राजधानी कराकोरम में स्थापित की, उसने 1227 ई. से 1241 ई. तक शासन किया। चंगेज खान के सबसे छोटे पुत्र तोलोए को मंगोलिया की पैतृक भूमि प्राप्त हुई। चंगेज खान यह चाहता था कि उसके चारों पुत्र मिल-जुलकर साम्राज्य पर शासन करें। इसी के अनुरूप उसने अपने चारों पुत्रों को अलग-अलग उलुसों का स्वामी बना दिया। इसके साथ ही उसने शासन को सुचारु रूप से चलाने के लिए प्रत्येक राजकुमार को अलग-अलग सैन्य टुकड़ियाँ (तामा) प्रदान की, जो सम्बन्धित उलुस में रहती थीं। इसके अतिरिक्त चंगेज खान ने दूरदर्शिता का परिचय देते हुए सरदारों की परिषद् अर्थात् 'किरिलताई' का गठन किया। चंगेज खान द्वारा स्थापित की गई किरिलताई का प्रमुख उद्देश्य राज्य के कार्यों में परिवार के सदस्यों की भूमिका को निर्धारित करना था। इसके अतिरिक्त परिवार या राज्य से सम्बन्धित सभी महत्वपूर्ण मुद्दों जैसे सैन्य अभियानों का आयोजन, लूट में प्राप्त माल का विभाजन, चारागाह भूमि और उत्तराधिकार आदि पर निर्णय किरिलताई में सामूहिक रूप से लिया जाता था।

**प्रश्न 19. मंगोल (चंगेजखान) की सेना ने एक विशाल एवं संगठित सेना का रूप कैसे धारण किया स्पष्ट कीजिए?**

**उत्तर-** मंगोल जनजातियों के एकीकरण तथा विभिन्न लोगों के विरुद्ध अभियानों से चंगेज खान की सेना में अनेक नए सैनिक शामिल हो गए। ये सैनिक विविध जातियों से संबंध रखते थे। इस प्रकार मंगोल सेना ने एक विशाल एवं संगठित सेना का रूप धारण कर लिया।

**प्रश्न 20. यायावरों द्वारा नव विजित प्रदेशों में भारी पारिस्थितिक विनाश क्यों हुआ?**

**उत्तर-** यायावर आक्रमणों से अस्थिरता फैली। इस कारण ईरान के शुष्क पठार में भूमिगत नहरों का मरम्मत कार्य नियमित रूप से न हो सका। परिणामस्वरूप मरुस्थल का विस्तार होने लगा जिससे भारी पारिस्थितिक विनाश हुआ।

**प्रश्न 21. मंगोलों द्वारा किए गए विनाश का आकलन इतिहासकारों ने किस प्रकार लगाया है?**

**उत्तर- मंगोलों द्वारा किए गए विनाश का आकलन-** चंगेज खान के अभियानों के विषय में प्राप्त समस्त विवरण इस पर सहमत है कि जिन नगरों ने प्रभुत्व स्वीकार नहीं किया उन पर अधिकार जमाने के बाद वहां रहने वाले बहुत से लोगों को उसने मौत के घाट उतार दिया। इनकी संख्या बहुत चौंका देने वाली है। 1220 ई. में निशापुर पर आधिपत्य करने में 17,47,000 जबकि 1222 ई. हिरात पर आधिपत्य करने में 16,00,000 और 1256 में बगदाद पर आधिपत्य करते समय 8,00,000 लोगों का वध किया गया। छोटे नगरों में सापेक्षिक रूप से कम नरसंहार हुआ। नासा में 70,000 बैहाक जिले में 70,000 और कुहिस्तान प्रांत के तून नगर में 12,000 लोगों को अपने जीवन से हाथ धोना पड़ा।

मध्यकालीन इतिवृत्तकारों ने मृतकों की संख्या का अनुमान कैसे लगाया?

इलखानों के फारसी इतिवृत्तकार जुवैनी ने बताया कि मर्व में 13,00,000 लोगों का वध किया। उसने इस संख्या का अनुमान इस प्रकार लगाया कि तेरह दिन तक 1,00,000 शव प्रतिदिन गिनने में आते थे।

**प्रश्न 22. चंगेजखान के वंशज धीरे-धीरे पृथक समूहों में क्यों बँट गए कारण स्पष्ट कीजिए?**

**उत्तर-** तेरहवीं शताब्दी के मध्य तक मंगोल शासक चंगेज खान के पुत्रों में अपने पिता की सम्पति को आपस में मिल-बाँटकर उपयोग करने के स्थान पर व्यक्तिगत राजवंश स्थापित करने की भावना अधिक प्रबल हो गयी थी। प्रत्येक मंगोल राजवंश अपने-अपने क्षेत्रीय राज्य, जिसे 'उलुस' कहा जाता था, का स्वामी हो गया। इसी के परिणामस्वरूप चंगेज खान

@amanwan450

के वंशजों के मध्य महान पद एवं उत्तम चारागाही भूमि की प्राप्ति के लिए प्रतिस्पर्धा लगी रहती थी, जिससे उनका अलग-अलग वंश समूहों में विभाजन हो गया। चीन एवं ईरान दोनों पर अपना साम्राज्य स्थापित करने के लिए आए चंगेज़ खान के सबसे छोटे पुत्र तोलूई के वंशजों ने इल-खानी व युआन वंशों की स्थापना की। चंगेज़ के सबसे बड़े पुत्र जोची ने 'सुनहरा गिरोह (Golden Hawde) का गठन कर रूस के स्टेपी क्षेत्र पर साम्राज्य स्थापित किया। चंगेज़ के सबसे बड़े पुत्र जोची ने 'सुनहरा गिरोह' (Golde Horde) को गठन कर रूस के स्टेपी क्षेत्र पर साम्राज्य स्थापित किया। चंगेज़ के दूसरे पुत्र चघताई के वंशजों में तूरान के स्टेपी प्रदेश पर साम्राज्य स्थापित किया, जो आजकल तुर्किस्तान कहलाता है। मंगोल शासक चंगेज खान के वंशज का अलग-अलग वंश समूहों में बँट जाना इस बात का संकेत है कि उनके पिछले परिवार से जुड़ी स्मृतियों एवं परम्पराओं के सामंजस्य में परिवर्तन आना प्रारम्भ हो गया था। स्पष्टतः यह सब एक ही कुल के सदस्यों में परस्पर प्रतिस्पर्धा के परिणामस्वरूप हुआ।

**प्रश्न 23. मंगोलों द्वारा विजित राज्यों के नागरिक प्रशासक कभी-कभी खानों की नीति को प्रभावित करने में सफल हुए उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।**

**उत्तर-** मंगोल शासक चंगेज खान ने अपने शासनकाल के दौरान अपनी प्रशासनिक व्यवस्था में विजित राज्यों से नागरिक प्रशासकों को भर्ती किया था। इसी बात का अनुकरण उसके वंशजों ने किया। इससे मंगोल प्रशासन को बहुत अधिक लाभ प्राप्त हुआ। इनको कभी-कभी एक स्थान से दूसरे स्थान पर भी भेज दिया जाता था। जैसे चीनी सचिवों का ईरान और ईरानी सचिवों का चीन में स्थानांतरण। इस तरह इन प्रशासकों ने दूरस्थ राज्यों को संगठित करने में सहायता की। इसके अतिरिक्त इन नागरिक प्रशासकों के प्रभाव से खानाबदोशों द्वारा की जाने वाली स्थानीय लोगों से लूटपाट में कमी आई। ये अपने शासकों के लिए कर भी एकत्रित करते थे। इन नागरिक प्रशासकों में से कुछ प्रशासक बहुत अधिक प्रभावशाली थे। कभी-कभी ये मंगोल शासकों की नीतियों को भी प्रभावित करने में सफल हो जाते थे।

1230 के दशक में चीनी मंत्री ये-लू-चुत्साई ने मंगोल शासक ओगोदेई की लूटमार करने की प्रवृत्ति को बदल दिया था। गजनखान के लिए उसके वजीर रशीदुद्दीन ने एक भाषण लिखा था। इस भाषण द्वारा खान को किसानों को सताने की बजाए उनकी रक्षा करने की बात कही थी।

**प्रश्न 24. दिए गए मानचित्र में निम्नलिखित को दर्शाइए-**
**(i) अरब सागर (ii) काराकोरम (iii) तिब्बत (iv) चीन**

**उत्तर-** निम्न मानचित्र को देखिए-

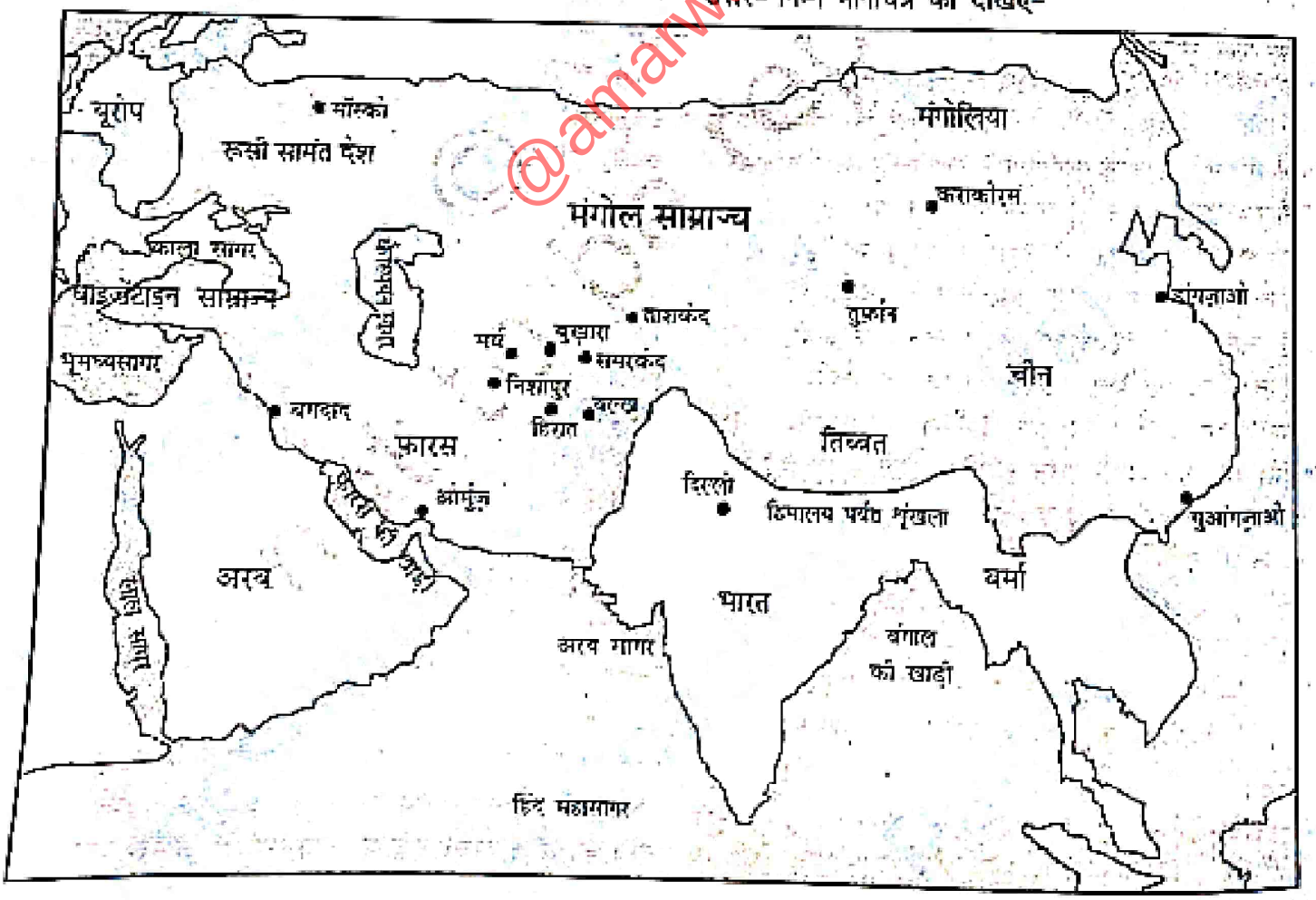

# अध्याय-6 तीन वर्ग

## वस्तुनिष्ठ प्रश्न

**प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए-**

**1. फ्यूड शब्द का अर्थ क्या है?**

(अ) जमीन का टुकड़ा (ब) राजा
(स) सैनिक (द) दुर्ग

**2. मार्टिन लूथर किंग कौन थे?**

(अ) राजा (ब) धर्म सुधारक
(स) पोप (द) सामंत

**3. कुशल अश्व सैनिक किसे कहते थे?**

(अ) बैरन (ब) नाइट
(स) सर्फ (द) मोंक

**4. फीफ क्या था-**

(अ) कर (ब) नदी
(स) नगर (द) इनमें से कोई नहीं

**5. तृतीय वर्ग में कौन आता था?**

(अ) पादरी (ब) किसान
(स) जमींदार (द) राजा

**उत्तर-** 1 (अ), 2 (ब), 3 (ब), 4 (द), 5 (ब)।

**प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-**

(1) टैली कर से ..... वर्ग मुक्त था।
(2) कैंटरबरी टेल्स के लेखक ..... थे।
(3) बड़े चर्च ..... कहलाते थे।
(4) सामंतवाद का विकास इंग्लैंड में ..... सदी में हुआ था।
(5) नन ..... धर्म से संबंधित है।
(6) मोनेस्ट्री ..... को कहते थे।

**उत्तर-** (1) पादरी और अभिजात, (2) चॉसर, (3) प्रोटेस्टेंट, (4) 742-814, (5) बिशप, (6) मठ।

**प्रश्न 3. सत्य/असत्य लिखिए-**

(1) पश्चिमी चर्च के मुखिया को पोप कहते थे।
(2) फीफ का संबंध नाइट से था।
(3) राजा का निवास मेनर कहलाता था।
(4) फ्यूड अरबी भाषा का शब्द है।
(5) एबी सामंत का निवास स्थान था।
(6) ईस्टर हिन्दू धर्म का त्योहार है।
(7) वास्कोडिगामा ने यूरोप की खोज की थी?
(8) पादरी और अभिजात वर्ग पर टेली कर लगता था?

**उत्तर-** (1) सत्य, (2) सत्य, (3) असत्य, (4) असत्य, (5) असत्य, (6) असत्य, (7) असत्य, (8) असत्य।

**प्रश्न 4. सही जोड़ी मिलाइए-**

| कॉलम-(अ) | कॉलम-(ब) |
|---|---|
| (1) प्रथम वर्ग | (अ) नगर वासी |
| (2) द्वितीय वर्ग | (ब) किसान |
| (3) तृतीय वर्ग | (स) अभिजात |
| (4) चतुर्थ वर्ग | (द) पादरी |
| (5) टीथ | (ई) गुलाम |
| (6) सर्फ | (ह) कर |

**उत्तर-** 1 (द), 2 (स), 3 (ब), 4 (अ), 5 (ह), 6 (ई)।

**प्रश्न 5. एक वाक्य में उत्तर लिखिए-**

(1) यूरोपियन सामंतवाद में सामाजिक प्रक्रिया में कौन सा वर्ग सर्वाधिक महत्वपूर्ण था?
(2) तीन वर्ग के नाम लिखिए।
(3) लॉर्ड द्वारा नाइट को दी गई भूमि को क्या कहते थे?
(4) गिल्ड किसे कहते थे?
(5) राजा शालमेन कहा का राजा था?
(6) वसलेज क्या थी?
(7) ड्यूक किसे कहते थे?

**उत्तर-** (1) अभिजात वर्ग, (2) किसान विशप लॉर्डस, पादरी, (3) फीफ, (4) व्यापारियों द्वारा अपने हितों की रक्षा के लिए बनाए गए संघों को, (5) रोमराज्य, (6) फ्रांस के शासकों का लोगों से जुड़ाव एक प्रथा के कारण था (7) राजा जिन लोग को जागीर प्रदान करता था उन्हें ड्यूक कहते थे।

## अति लघु उत्तरीय प्रश्न

**प्रश्न 1. तीन वर्ग से क्या समझते है।**

**उत्तर-** तीन वर्ग से हमारा अभिप्राय तीन सामाजिक श्रेणियों से है- ईसाई पादरी, भूमिधारक अभिजात वर्ग और कृषक वर्ग।

**प्रश्न 2. नाइट किसे कहते थे?**

**उत्तर-** नौवीं सदी से यूरोप में स्थानीय युद्ध प्रायः होते रहते थे। शौकिया कृषक-सैनिक पर्याप्त नही थे और कुशल अश्वसेना की आवश्यकता थी। इसने एक नए वर्ग को बढ़ावा दिया जो नाइट्स कहलाते थे।

**प्रश्न 3. पादरी के कार्य क्या-क्या थे?**

**उत्तर-** पादरियों के कार्य-

(1) इनके पास राजा द्वारा दी गई भूमियाँ थी, जिनसे वे कर उगाह सकते थे।
(2) रविवार के दिन ये लोग गाँव में धर्मोपदेश देते थे और सामूहिक प्रार्थना करते थे।

@amarwan450

(3) वे पादरियों समाज के प्रथम वर्ग में शामिल थे इन्हें विशेषाधिकार प्राप्त था।

(4) टाइद नामक धार्मिक कर भी वसूलते थे।

(5) जो पुरुष पादरी बनते थे वे शादी नहीं कर सकते थे।

(6) धर्म के क्षेत्र में बिशप अभिजात माने जाते थे और इनके पास भी लॉर्ड की तरह विस्तृत जागीरें थीं।

**प्रश्न 4. भिक्षु किसे कहते थे?**

उत्तर- ये प्रथम वर्ग के सदस्य थे जो चर्च में धर्मोपदेश, अत्यधिक धार्मिक व्यक्ति जो चर्च के बाहर धार्मिक समुदायों में रहते थे भिक्षु कहलाते थे।

**प्रश्न 5. चार वर्गों में शामिल वर्गों के नाम लिखिए।**

उत्तर- चार वर्गों में शामिल वर्गों के नाम- (1) पादरी वर्ग, (2) अभिजात वर्ग (3) कृषक वर्ग (4) कृषि दास या सर्फ वर्ग

**प्रश्न 6. सामंतवाद का अर्थ बताइए।**

उत्तर- सामंतवाद का अर्थ था- राजा द्वारा जो जमीन बड़े सरदार को दी जाती थी उसे 'फ्यूड' अथवा 'जागीर' कहा जाता था। बड़े सरदार को सामंत या जागीरदार कहते थे। इनके अधीन छोटे जमींदार तथा उनके नीचे किसान एवं अंत में भूमिहीन अर्धदास होते थे। इस प्रकार राजा से लेकर अर्धदास तक सम्बन्धों की एक कड़ी बनी, जिसका आधार भूमि था। इस कड़ी का सबसे महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली व्यक्ति सामंत होता था।

**प्रश्न 7. फीफ और टैली कर में क्या अंतर था?**

उत्तर- फीफ- लॉर्ड नाइट को चलाने के लिए भूमि का एक भाग देता था जिसे 'फिफ' कहा जाता था। इसके बदले नाइट लॉर्ड को रक्षा का वचन देते थे।

टैली- टैली एक प्रकार का प्रत्यक्षकर था जो राजा कृषकों पर लगाते थे। पादरी और अभिजात वर्ग इस कर से मुक्त थे।

**प्रश्न 8. ईसाई धर्म के दो त्योहारों का नाम लिखिए?**

उत्तर- ईसाई धर्म में : क्रिसमस, गुडफ्राइडे, और ईस्टर आदि त्योहार मनाए जाते हैं।

**प्रश्न 9. अभिजात वर्ग किसे कहते थे?**

उत्तर- अभिजात वर्ग- 'वे लोग या संगठन हैं जिन्हें समान प्रकार के अन्य लोगों की तुलना में सबसे अच्छा, सबसे शक्तिशाली माना जाता है।'

**प्रश्न 10. अर्ल ड्यूक किसे कहा जाता था?**

उत्तर- राजा जिन लॉर्ड को जागीर प्रदान करता था उन्हें ड्यूक (अर्ल) कहा जाता था।

## लघु उत्तरीय प्रश्न

**प्रश्न 1. मध्यकालीन यूरोपीय समाज के मठों के प्रमुख कार्य क्या क्या थे?**

उत्तर- मध्यकालीन मठों का निम्नलिखित कार्य था- मठ धार्मिक समुदाय के निवास थे। यहाँ भिक्षु प्रार्थना करता था, अध्ययन करता था और कृषि जैसे शारीरिक श्रम भी करते थे, इन मठों ने कला के विकास में भी योगदान दिया। उदाहरण के लिए हिल्डेगार्ड ने चर्च की प्रार्थनाओं में सामुदायिक गायन की प्रथा के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

**प्रश्न 2. सामंतवाद की तीन प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।**

उत्तर- **सार्वभौमिक सत्ता का अपहरण-** सामन्तवाद की सर्वप्रमुख विशेषता स्थानीय जागीरदारों द्वारा सार्वभौम सत्ता हस्तगत करना थी। शार्लमेन के साम्राज्य के पतन के पश्चात् स्थानीय भूपतियों या जमींदारों को हस्तान्तरित कर दिया। स्थिति यह हो गई कि एक जागीरदार, जो सिद्धान्ततः अपने स्वामी और अन्ततः राजा के अधीन था, अपने क्षेत्र में सभी मामलों का स्वामी हो गया। फलतः यूरोप हजारों जागीरदारों के बीच बंट गया।

**1. काश्तकारी व्यवस्था-** एक दूसरी विशेषता काश्तकारी व्यवस्था थी। इसी पर सामन्तवादी व्यवस्था खड़ी थी। किसी सामन्त की प्रशासनिक, सामाजिक और आर्थिक स्थिति का निर्धारण उसके द्वारा प्राप्त जागीर या भूमि के आधार पर होता था। जागीरदार अपने स्वामी से संविदास्वरूप भूमि प्राप्त करता था। संविदा के अनुसार उसे अपने स्वामी की सेवा करनी पड़ती थी। वह सहायतार्थ सेना भी भेजता था या स्वयं सैनिक के रूप में कार्य करता था। वह उसके दरबार में पुलिस-कार्य, न्याय- कार्य या शान्ति-व्यवस्था बनाए रखने का कार्य करता था।

**2. सामाजिक विभाजन-** सामन्तवाद ने समाज को दो वर्गों- शासक और शासित में बाँट दिया। सामन्त या जमींदार शासक वर्ग के थे और शासित वर्ग वे थे जो खेत जोतते थे। भूमि ही समाज का ढांचा निर्धारित करती थी।

**3. व्यक्तिगत बंधन-** एक अन्य विशेषता व्यक्तिगत बन्धन थी। जो स्वामी और जागीरदार के सम्बन्ध को बताती है। जागीरदार अपने स्वामी के प्रति वफादार रहने के लिए शपथ लेता था। काश्तकार, जागीरदार एवं स्वामी के बीच के सम्बन्ध का निर्धारण शपथ-ग्रहण उत्सव (homage) के साथ होता था, न कि किसी राज्य के कानून द्वारा।

**प्रश्न 3. नई कृषि प्रौद्योगिकी क्या थी? तीन प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।**

उत्तर- ग्यारहवीं सदी तक विभिन्न प्रौद्योगिकियों में बदलाव के प्रमाण मिलते हैं।

मूल रूप से लकड़ी से बने हल के स्थान पर लोहे की भारी

@amarwah450

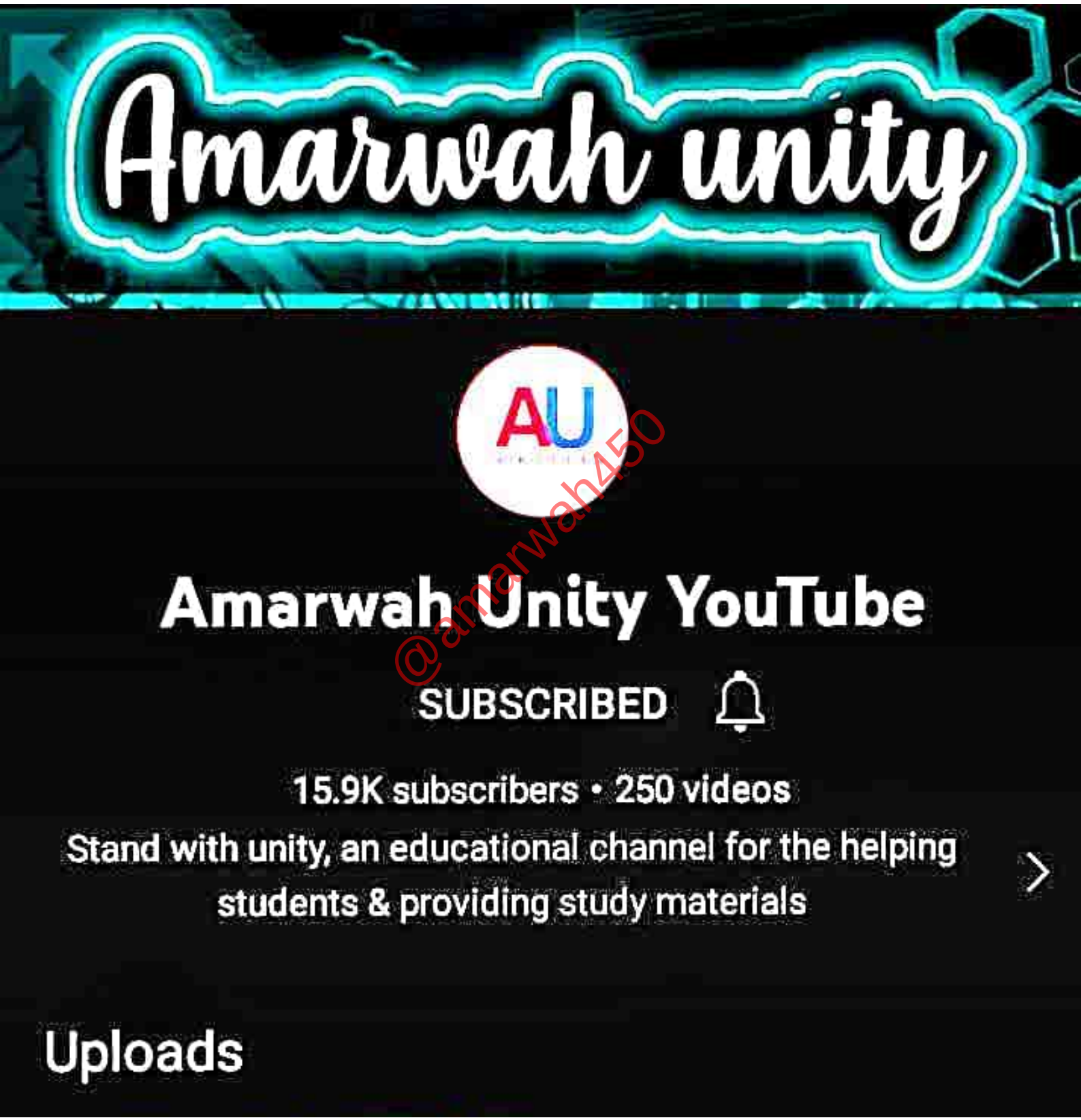
Amarwah unity
AU
@amarwah450
Amarwah Unity YouTube
SUBSCRIBED
15.9K subscribers • 250 videos
Stand with unity, an educational channel for the helping students & providing study materials
Uploads

नोक वाले हल और सांचेदार पटरे (Mould boards) का उपयोग होने लगा। ऐसे हल अधिक गहरा खोद सकते थे और सांचेदार पटरे सही ढंग से ऊपरी मृदा को पलट सकते थे। इसके फलस्वरूप भूमि में व्याप्त पौष्टिक तत्वों का बेहतर उपयोग होने लगा।

पशुओं को हलों में जोतने के तरीकों में सुधार हुआ। गले (Neck harness) के स्थान पर जुआ अब कंधे पर बाँधा जाने लगा। इससे पशुओं को अधिक शक्ति मिलने लगी। घोड़े के खुरों पर अब लोहे की नाल लगाई जाने लगी जिससे उनके खुर सुरक्षित हो गए। कृषि के लिए वायु और जल शक्ति का उपयोग बहुतायत में होने लगा। यूरोप में अन्न को पीसने और अंगूरों को निचोड़ने के लिए अधिक जलशक्ति और वायुशक्ति से चलने वाले कारखाने स्थापित हो रहे थे।

भूमि के उपयोग के तरीके में भी बदलाव आया। सबसे क्रांतिकारी था दो खेतों वाली व्यवस्था से तीन खेतों वाली व्यवस्था में परिवर्तन। इस व्यवस्था में कृषक तीन वर्षों में से दो वर्ष अपने खेत का उपयोग कर सकता था क्योंकि वह एक फ़सल शरद ऋतु में और उसके डेढ़ वर्ष पश्चात् दूसरी वसंत में बोता। इसका अर्थ था कि कृषक अपनी जोतों को तीन खेतों में बाँट सकते थे। वे मानव उपभोग के लिए एक खेत में शरद ऋतु में गेहूँ या राई बो सकते थे। दूसरे में, वसंत ऋतु में मनुष्यों के उपभोग के लिए मटर, सेम और मसूर तथा घोड़ों के लिए जौ और बाजरा बो सकते थे, तीसरा खेत परती यानि खाली रखा जाता था। प्रत्येक वर्ष वे तीनों खेतों का प्रयोग बदल-बदल कर करते थे।

विशेषताएँ-

(1) भूमि की प्रत्येक इकाई में होने वाले उत्पादन में तेजी से बढ़ोतरी हुई।

(2) भोजन की उपलब्धता दुगुनी हो गई।

(3) छोटी जोतों पर अधिक कुशलता से कृषि की जा सकती थी। इसमें कम श्रम की आवश्यकता थी।

(4) मटर और सेम जैसे पौधों का अधिक उपयोग एक औसत यूरोपीय के आहार में अधिक प्रोटीन का तथा उनके पशुओं के लिए अच्छे चारे का स्रोत बन गया गया।

**प्रश्न 4. चौसर कौन था? और उसकी महान रचना कौन कौन सी थी।**

**उत्तर-** जेफ्री चौसर- लगभग 1343-1400) अंग्रेजी भाषा के कवि, लेखक, दार्शनिक एवं राजनयिक थे। उनके साथ ही अंग्रेजी साहित्य में आधुनिक युग का प्रारंभ माना जाता है। 'कैंटरबरी टेल्स' उनकी प्रसिद्ध रचना है। उनकी रचनाएँ साहित्य के अतिरिक्त जीवन के व्यापक क्षेत्र में नए मोड़ का संकेत करती हैं। जॉन ड्राइडेन ने उनको 'अंग्रेजी कविता का जनक कहा है।

**प्रमुख रचनाएँ-** द रोमाकंट ऑफ़ द रोज़- यह एक फ्रांसिसी रचना 'रोमन डे ला रोज' का अंग्रेजी अनुवाद है, बुक ऑफ़ डचेस, हाउस ऑफ़ फेम, अनेलिडा एंड आर्साइट, पारलेमेंट ऑफ़ फाउलस, ट्रॉयलस एंड क्रिसेड

द लीजेंड ऑफ़ गुड वुमन, कैंटरबरी टेल्स।

**प्रश्न 5. यूरोप में 14वीं सदी का संकट क्या था?**

**उत्तर- 1. मौसम में परिवर्तन-** तेरहवीं शताब्दी के अंत तक उत्तरी यूरोप में पिछले तीन सौ वर्षों की तेज ग्रीष्म ऋतु का स्थान अत्यधिक ठंडी ग्रीष्म ऋतु ने ले लिया। फलस्वरूप फसल उगाने वाले मौसम छोटे हो गए। ऊँची भूमि पर तो फसल उगाना और भी कठिन हो गया। तूफानों और सागरीय बाढ़ों ने अनेक कृषि कार्यों को नष्ट कर दिया। परिणामस्वरूप सरकार को करों द्वारा मिलने वाली आय कम हो गई।

**2. गहन जुताई और जनसंख्या में वृद्धि-** तेरहवीं शताब्दी से पहले की अनुकूल जलवायु ने अनेक जंगलों तथा चरागाहों को कृषि भूमि में बदल दिया था। परंतु गहन जुताई ने तीन क्षेत्रीय फसल चक्र व्यवस्था के बावजूद भूमि को कमजोर बना दिया। इसका उचित भू-संरक्षण के अभाव में हुआ था। चरागाहों की कमी हो गई जिसके कारण पशुओं की संख्या में कमी आ गई। जनसंख्या वृद्धि इतनी तेजी से हुई कि उपलब्ध संसाधन कम पड़ गए और अकाल पड़ने लगे। 1315 ई. और 1317 ई के बीच यूरोप में कई भयंकर अकाल पड़े। इसके पश्चात् 1320 ई. के दशक में अनगिनत पशु मौत का शिकार हो गए।

**3. चाँदी के उत्पादन में कमी-** ऑस्ट्रिया और सर्बिया की चाँदी की खानों के उत्पादन में कमी आ गई जिसके कारण धातु-मुद्रा का अभाव हो गया। इससे व्यापार पर प्रभाव हुआ। अतः सरकारी मुद्रा में चांदी की शुद्धता घटानी पड़ी। अब मुद्रा में सस्ती धातुओं का मिश्रण किया जाने लगा।

**4. महामारियाँ-** बारहवीं तथा तेरहवीं शताब्दी में वाणिज्य में विस्तार के परिणामस्वरूप दूर देशों में व्यापार करने वाले पोत यूरोपीय तटों पर आने लगे। पोतों के साथ-साथ बड़ी संख्या 3471 से 1350 ई. के बीच पश्चिमी यूरोप महामारी से बुरी तरह प्रभावित हुआ। आधुनिक आकलन के आधार पर यूरोप की जनसंख्या का लगभग 20 प्रतिशत भाग महामारी का शिकार हो गया। कुछ स्थानों पर तो मरने वालों की संख्या वहां की जनसंख्या का 40 प्रतिशत थी।

व्यापार केन्द्र होने के कारण नगरों पर महामारी का सबसे अधिक प्रभाव पड़ा। मठों तथा कानवेंटों में जब एक व्यक्ति प्लेग की चपेट में आ जाता था तो वहां रहने वाले सभी लोग

@amarwal1450

उसकी चपेट में आ जाते थे। परिणामस्वरूप बड़ी संख्या में लोग मौत का शिकार हो जाते थे। प्लेग का युवाओं तथा बुजुर्गों पर सबसे अधिक प्रभाव पड़ता था। 1350 ई. और 1370 ई. के पश्चात् 1360 ई. में भी प्लेग की छोटी-छोटी अनेक घटनाएँ हुई। परिणामस्वरूप यूरोप की जनसंख्या 730 लाख से घटकर 1400 ई. में 450 लाख रह गई।

**प्रश्न 6. अभिजात वर्ग के विरुद्ध किसानों की मन में असंतोष के क्या कारण थे?**

**उत्तर-** 14वीं शताब्दी के संकट से लॉर्डों की आय बुरी तरह प्रभावित हुई। मजदूरी की दरें बढ़ने तथा कृषि संबंधी मूल्यों की गिरावट ने उनकी आय को घटा दिया। निराशा में उन्होंने अपने धन संबंधी अनुबंधों को तोड़ दिया और फिर से पुरानी मजदूरी सेवाओं को लागू कर दिया। कृषकों, विशेषकर पढ़े-लिखे और समृद्ध कृषकों ने इसका विरोध किया। उन्होंने 1323 ई. में फ्लैंडर्स (Flanders) में, 1358 ई. में फ्रांस में और 1381 ई. में इंग्लैंड में विद्रोह किए।

यद्यपि इन विद्रोहों का क्रूरतापूर्वक दमन कर दिया गया, परंतु महत्वपूर्ण बात यह थी कि सबसे हिंसक विद्रोह उन स्थानों पर हुए जहाँ आर्थिक विस्तार के कारण समृद्धि आई थी। यह इस बात का संकेत था कि कृषक पिछली सदियों में मिले लाभों को खोना नहीं चाहते थे। तीव्र दमन के बावजूद इन विद्रोहों की तीव्रता ने सुनिश्चित कर दिया कि कृषकों पर पुराने सामंती रिश्तों को फिर से नहीं लादा जा सकता। इससे यह भी सुनिश्चित हो गया कि कृषि दासता के पुराने दिन फिर नहीं लौटेंगे।

**प्रश्न 7. सामंतवाद को शोषण का प्रतीक क्यों माना जाता है? समझाइए।**

**उत्तर-** सामंतवाद शब्द का प्रयोग मध्यकालीन यूरोप के आर्थिक, सामाजिक, कानूनी एवं राजनीतिक सम्बन्धों के वर्णन हेतु किया जाता है। सामंतवाद शब्द आंग्ल भाषा के शब्द 'फ्यूडलिज्म (fudalism) का हिन्दी रूपान्तर है। आंग्ल भाषा का यह शब्द जर्मन भाषा के 'फ्यूड' शब्द से बना है जिसका अर्थ- भूमि का एक टुकड़ा होता है। यह एक ऐसे समाज की ओर संकेत करता है जो मध्य फ्रांस, इंग्लैंड एवं दक्षिणी इटली में विकसित हुआ। आर्थिक सन्दर्भ में सामंतवाद, एक प्रकार से कृषि उत्पादन की ओर संकेत करता है जो सामंतों और कृषकों के सम्बन्धों पर आधारित था।

कृषक अपने खेतों के साथ लॉर्ड (सामंत) के खेतों का भी कार्य करते थे। इसके बदले में लॉर्ड उनको सैनिक सुरक्षा देते थे, किन्तु कोई वेतन आदि नहीं देते थे। साथ ही साथ लॉर्ड के कृषकों पर व्यापक न्यायिक अधिकार भी थे, इसलिए 'सामंतवाद ने न केवल आर्थिक बल्कि सामाजिक और राजनीतिक पहलुओं पर भी अधिकार कर लिया। सामंतवाद की जड़ें तो रोमन साम्राज्य एवं फ्रांस के राजा शार्लमेन के काल में भी पायी जाती थीं, परन्तु यह माना जाता है कि सामंतवाद की उत्पत्ति यूरोप के अनेक भागों में ग्यारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में हुई थी।

**प्रश्न 8. सर्फ किसे कहते थे? और इनके साथ कैसा व्यवहार किया जाता था।**

**उत्तर- सर्फ-** निम्नतम श्रेणी के किसान 'सर्फ' कहलाते थे। इनकी दशा अत्यन्त शोचनीय थी। इन्हें अपने अधिपति के लिए बेगार करनी पड़ती थी। अधिपति अपने खेतों पर सर्फ की भांति इनसे भी कुछ दिन निःशुल्क काम करवाते थे तथा उपज का भाग भी लेते थे। मध्यकाल के अन्तिम वर्षों में मध्यम वर्ग नामक एक नए वर्ग का विकास हुआ। इस वर्ग के लोगों ने शिक्षा, साहित्य, व्यापार, उद्योग-धन्धों आदि के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। नगरों के विकास में भी इनकी महत्वपूर्ण भूमिका थी कि राजा भी इनकी आर्थिक सहायता पर निर्भर रहने लगा। इससे सामन्तों का प्रभाव क्षीण हो गया।

**प्रश्न 9. मार्टिन लूथर किंग कौन था और वे किस कार्य के लिए जाने जाते हैं?**

**उत्तर-** मार्टिन लूथर एक जर्मन युवा भिक्षु थे, जिन्होंने 1517 ई. में कैथोलिक चर्च के रूढ़िवाद एवं भ्रष्टाचार के खिलाफ अभियान छेड़ा था। लूथर के आंदोलन को प्रोटेस्टेंट सुधारवाद का नाम दिया गया। उन्होंने सादगी से पूर्ण जीवन एवं ईश्वर में असीम आस्था को अपनाने पर बल दिया था। प्रोटेस्टेंट आंदोलन के आचार संहिता का भी निर्माण लूथर ने किया, जिनमें आंदोलन संबंधी 95 प्रावधान रखे गये थे।

**प्रश्न 10. इंग्लैंड में सामंतवाद का विकास कैसे हुआ?**

**उत्तर-** इंग्लैंड में सामंतवाद का विकास ग्यारहवीं शताब्दी से हुआ। छठी शताब्दी में मध्य यूरोप से एंजिल (Angles) और सैक्सन (Saxons) लोग इंग्लैंड में आकर बस गए। इंग्लैंड देश का नाम 'एंजिल लैंड' का रूपांतरण है। ग्यारहवीं शताब्दी में नोरमंडी (Normandy) के ड्यूक विलियम प्रथम ने एक सेना के साथ इंग्लिश चैनल (English Channel) को पार करके इंग्लैंड के सैक्सन राजा को हरा दिया और इंग्लैंड पर अपना अधिकार कर लिया। उसने देश की भूमि नपवाई, उसके नक्शे बनवाए और उसे अपने साथ आए 180 नॉरमन अभिजातों में बाँट दिया। ये लॉर्ड राजा के प्रमुख काश्तकार बन गए।

इनसे राजा सैन्य सहायता प्राप्त करता था। वे राजा को कुछ नाइट देने के लिए भी बाध्य थे। इसलिए लॉर्ड नाइटों को कुछ भूमि उपहार में देने लगे। बदले में वे उनसे उसी प्रकार सेवा की आशा रखते थे जैसी वे राजा की करते थे, परंतु वे अपने निजी युद्धों के लिए नाइटों का उपयोग नहीं कर सकते थे। एंग्लो-सैक्सन

@amarwah450

कृषक विभिन्न स्तरों के भू-स्वामियों के काश्तकार बन गए। इस प्रकार इंग्लैंड में सामंतवादी व्यवस्था अस्तित्व में आई।

**प्रश्न 11. चौथे वर्ग की विशेषताएँ कौन-कौन सी थी?**

**उत्तर-** यूरोप में ग्यारहवीं शताब्दी के दौरान कृषि का विकास होने से वह अधिक जनसंख्या का भार सहने में सक्षम हो गयी तो नगरों का भी विकास होने लगा। उस काल में एक कहावत प्रसिद्ध थी कि 'नगर की हवा स्वतंत्र बनाती है' लॉर्डों के अधीन कई कृषि दास रहते थे। ये उनके द्वारा किए गए अत्याचारों से परेशान थे। स्वतंत्र होने की इच्छा रखने वाले कृषि दास भाग कर नगरों में छिप जाते थे। यदि कोई कृषि दास अपने लॉर्ड की नजरों से एक वर्ष एक दिन तक छिपे रहने में सफल रहता था तो वह स्वतंत्र नागरिक बन जाता था। नगरों में रहने वाले अधिकतर व्यक्ति या तो स्वतंत्र कृषक थे या भगोड़े कृषक। कार्य की दृष्टि से वे अकुशल श्रमिक होते थे। नगरों में अनेक दुकानदार और व्यापारी भी रहते थे। आगे चलकर विशिष्ट कौशल वाले व्यक्तियों जैसे साहूकार तथा वकील आदि की आवश्यकता भी अनुभव हुई। बड़े नगरों की जनसंख्या लगभग तीस हजार होती थी। नगरों में रहने वाले इन्हीं लोगों ने समाज में चौथा वर्ग बना लिया था। इस प्रकार मध्यकालीन यूरोपीय समाज में चौथा वर्ग अस्तित्व में आया।

**प्रश्न 12. सामंतवाद क्या था? और इसके प्रमुख दोषों पर प्रकाश डालिए।**

**उत्तर- मध्यकालीन सामन्तवाद का विकास-** मध्यकालीन यूरोप की प्रमुख विशेषता सामन्तवाद थी। इस युग में सामन्तवाद का पर्याप्त विकास हुआ। राजाओं की दुर्बलता का लाभ उठाकर सामन्त लोग बड़े शक्तिशाली हो गए। इन सामन्तों ने, जिन्हें लॉर्ड कहा जाता था, दासों (सर्फ) पर अत्याचार किए और स्वयं अनेक उपाधियों, जैसे- 'ड्यूक', 'अर्ल', 'बैरन' तथा 'नाइट' आदि धारण कीं। इन सामन्तों का जीवन युद्ध और विलासितापूर्ण था। रोमन साम्राज्य के पतन के बाद यूरोप में अनेक छोटे-छोटे राज्य बन गए और उनकी शक्ति भी क्षीण हो गई। इन राज्यों के राजाओं ने धन के अभाव में राज्य की भूमि को अपने विश्वासपात्र सामन्तों में बाँट दिया और युद्ध के समय उनसे सैनिक सहायता लेनी प्रारम्भ कर दी।

सामन्तवाद में राज्य की सम्पूर्ण भूमि पर राजा का अधिकार होता था। राजा राज्य की भूमि को अपने विश्वासपात्र, स्वामिभक्त एवं कर्तव्यनिष्ठ सामन्तों को देता था। सामन्तों को राजा से जो अधिकार प्राप्त होते थे, उन्हें 'सामन्ती अधिकार' कहा जाता था। भूमि-वितरण की यह व्यवस्था ही यूरोप में सामन्तवाद कहलाती थी। यूरोप की सामन्तवादी व्यवस्था भारत की जमींदारी व्यवस्था के ही समान थी। यह प्रथा परम्परागत थी। सामन्ती प्रथा में राजा का स्थान महत्त्वपूर्ण तथा सर्वोपरि होता था। खेतिहर कृषक 'सर्फ' कहलाते थे। सामन्त चर्च के साथ तालमेल बनाकर रखते थे। ये सामन्त अपनी शक्ति और सामर्थ्य के अनुसार स्थायी सेना रखते थे और राजा के दरबार में उपस्थित होकर उसे उपहार, भेंट आदि दिया करते थे। ये राजा के दरबार में आकर समय-समय पर शासन सम्बन्धी विषयों पर भी परामर्श दिया करते थे।

**सामन्तवाद के दोष- सामन्तवाद में गुणों की अपेक्षा दोष अधिक थे, जो इस प्रकार हैं-**

(1) इस प्रथा ने यूरोप की राजनीतिक एकता का अन्त कर दिया। (2) सामन्तों की पारस्परिक स्पर्धा व ईर्ष्या के कारण अनेक युद्ध हुए। (3) सामन्तवाद ने यूरोप में दास-प्रथा को जन्म दिया और किसानों की दशा अत्यन्त शोचनीय कर दी। (4) सामन्तवाद ने सामाजिक असमानताओं को जन्म दिया और यूरोप में क्रान्ति के लिए मार्ग प्रशस्त किया। (5) सामन्तों की शक्ति बढ़ जाने से उनका नैतिक स्तर गिर गया और वे विलासी और अत्याचारी होते चले गए। (6) आपसी युद्धों में लगे रहने के कारण सामन्त लोग कला, व्यापार, साहित्य तथा कृषि आदि के विकास पर पर्याप्त ध्यान न दे सके।

**प्रश्न 13. मध्यकालीन यूरोपीय समाज में अभिजात वर्ग की भूमिका क्यों महत्वपूर्ण थी? समझाइए।**

**उत्तर-** दूसरा वर्ग (अभिजात वर्ग)- यूरोप के सामाजिक प्रक्रिया में अभिजात वर्ग की महत्वपूर्ण भूमिका थी। ऐसे महत्वपूर्ण संसाधन भूमि पर उनके नियंत्रण के कारण था। यह वैसलेज Vassalage नामक एक प्रथा के विकास के कारण हुआ था। बड़े भू-स्वामी और अभिजात वर्ग राजा के अधीन होते थे जबकि कृषक भू-स्वामियों के अधीन होते थे। अभिजात वर्ग राजा को अपना स्वामी मान लेता था और वे आपस में बचनबद्ध होते थे - सेन्योर/लॉर्ड (लॉर्ड एक ऐसे शब्द से जिसका अर्थ था रोटी देने वाला) दास (Vassal) की रक्षा करता था और बदले में वह उसके प्रति निष्ठावान रहता था। इन संबंधों में व्यापक रीति-रिवाजों और शपथ लेकर की जाती थी।

**प्रश्न 14. मैनर व्यवस्था क्या थी? मध्यकाल यूरोपियन समाज की यह एक महत्वपूर्ण विशेषता क्यों मानी जाती थी।**

**उत्तर-** लॉर्ड का अपना मैनर-भवन होता था। वह गाँवों पर नियंत्रण रखता था- कुछ लॉर्ड, अनेक गाँवों के मालिक थे। किसी छोटे मैनर की जागीर में दर्जन भर और बड़ी जागीर में 50 या 60 परिवार हो सकते थे। प्रतिदिन के उपभोग की प्रत्येक वस्तु जागीर पर मिलती थी। अनाज खेतों में उगाये जाते थे, लोहार और बढ़ई लॉर्ड के औजारों की देखभाल और

@amarwah450

हथियारों की मरम्मत करते थे, जबकि राजगिरजी उनकी इमारतों की देखभाल करते थे। औरतें वस्त्र कातती एवं बुनती थीं और बच्चे लॉर्ड की मदिरा सम्पीडक में कार्य करते थे। जागीरों में विस्तृत आरण्यभूमि और वन होते थे जहाँ लॉर्ड शिकार करते थे। उनके यहाँ चरागाह होते थे जहाँ उनके पशु और घोड़े चरते थे। वहाँ पर एक चर्च और सुरक्षा के लिए एक दुर्ग होता था।

@amarwah450

**प्रश्न 15. पादरी वर्ग का मध्यकालीन यूरोपीय समाज में भूमिका को स्पष्ट कीजिए।**

**उत्तर–** मध्यकालीन यूरोप का प्रथम वर्ग पादरी वर्ग था। इसमें पोप, बिशप तथा पादरी शामिल थे। कैथोलिक चर्च में उन्हें महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। पोप पश्चिमी चर्च के अध्यक्ष थे। वे रोम में रहते थे। यूरोप में ईसाई समाज का मार्गदर्शन बिशप तथा पादरी करते थे। अधिकतर गाँवों के अपने चर्च होते थे। यहाँ प्रत्येक रविवार को लोग पादरी के धर्मोपदेश सुनने तथा सामूहिक प्रार्थना करने के लिए इकट्ठे होते थे। चर्च के अपने नियम थे। इनके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति पादरी नहीं हो सकता था। कृषि-दास, शारीरिक रूप से बाधित व्यक्ति तथा स्त्रियाँ पादरी नहीं बन सकती थीं। पादरी बनने वाले पोप विवाह नहीं कर सकते थे। धर्म के क्षेत्र में बिशप अभिजात (उच्च वर्ग) के माने जाते थे। बिशपों के पास भी लॉर्ड की तरह विस्तृत जागीरें थीं। वे शानदार महलों में रहते थे। चर्च को कृषक से एक वर्ष में उसकी उपज का दसवाँ भाग लेने का अधिकार था। इसे 'टीथ' (Tithe) कहते थे। धनी लोगों द्वारा अपने कल्याण तथा मरणोपरांत अपने रिश्तेदारों के कल्याण के लिए दिया जाने वाला दान भी चर्च की आय का एक स्रोत था।

**प्रश्न 16. चर्च और समाज के संबंधों को स्पष्ट कीजिए।**

**उत्तर–** यूरोपवासी ईसाई तो बन गए थे परंतु उन्होंने अभी तक चमत्कार और रीति-रिवाजों से जुड़े अपने पुराने विश्वासों को पूरी तरह नहीं छोड़ा था। क्रिसमस और ईस्टर चौथी शताब्दी में ही कैलेंडर की महत्त्वपूर्ण तिथियाँ बन गए थे। क्रिसमस अथवा ईसा मसीह के जन्मदिन ने एक पुराने पूर्व- रोमन त्योहार का स्थान ले लिया। इस तिथि की गणना सौर-पंचांग (Solar Calendar) के आधार पर की गई थी। ईस्टर ईसा के शूलारोपण और उनके पुनर्जीवित होने का प्रतीक था।

परंतु इसकी तिथि निश्चित नहीं थी, क्योंकि इसने चंद्र पंचाग (Lunar Calendar) पर आधारित एक प्राचीन त्योहार का स्थान लिया था। यह प्राचीन त्योहार लंबी सर्दी के पश्चात् वसंत के आगमन का स्वागत करने के लिए मनाया जाता था। एक परंपरा के अनुसार उस दिन प्रत्येक गाँव के व्यक्ति अपने गाँव की भूमि का दौरा करते थे। ईसाई धर्म अपनाने पर भी उन्होंने इसे जारी रखा। परंतु अब वे उसे गाँव के स्थान पर 'पैरिश' कहने लगे।

**त्योहारों का महत्त्व–** काम से दबे कृषक इन पवित्र दिनों अथवा छुट्टियों (Holidays) का स्वागत इसलिए करते थे क्योंकि इन दिनों उन्हें कोई काम नहीं करना पड़ता था। वैसे तो यह दिन प्रार्थना करने के लिए था, परंतु लोग सामान्यतः इसका उपयोग मनोरंजन करने और दावत करने में करते थे।

**तीर्थयात्रा–** तीर्थयात्रा, ईसाइयों के जीवन का एक महत्त्वपूर्ण भाग था। बहुत-से लोग शहीदों की समाधियों या बड़े गिरिजाघरों की लंबी यात्राओं पर जाते थे।

**प्रश्न 17. तीसरा वर्ग क्या था? इस वर्ग की प्रमुख समस्याओं को बताइए।**

**उत्तर– स्वतन्त्र किसान–** इस वर्ग के किसान अपनी भूमि सामंत (लॉर्ड) से प्राप्त करते थे। वे अपने को सामंत या लॉर्ड का काश्तकार मानते थे, पुरुषों का सैनिक सेवा में कुछ दिनों का योगदान आवश्यक था। किसान इस भूमि से उत्पादन के बदले में सामंत को कर देते थे। इन कृषकों के परिवार को लॉर्ड की जागीर पर जाकर काम करने के लिए सप्ताह में तीन या अधिक दिन निश्चित करने पड़ते थे। इस श्रम से होने वाला उत्पादन जिसे श्रम-अधिशेष (Labour rent) कहते थे, सीधे लॉर्ड के पास जाता था।

प्रारम्भ में यूरोप में कृषि सम्बन्धी कई समस्याएँ थीं, जिनमें से प्रमुख निम्नलिखित हैं।

**1. प्राचीन कृषि प्रौद्योगिकी–** प्रारम्भ में यूरोप में कृषि प्रौद्योगिकी बहुत प्राचीन थी। यहाँ कृषक का एकमात्र उपकरण बैलों की जोड़ी से चलने वाला लकड़ी का हल था। यह हल केवल भूमि की सतह को ही खुरच सकता था।

अतः यह भूमि की प्राकृतिक उत्पादकता को पूर्णतः बाहर निकालने में अक्षम था। अतः उत्पादकता बढ़ाने हेतु भूमि को प्रायः चार वर्ष में एक बार हाथ से फावड़े आदि के द्वारा खोदा जाता था। इस कार्य में अत्यधिक मानव श्रम लगता था।

**2. फसल चक्र का प्रभावहीन तरीके से उपयोग–** यूरोप में फसल चक्र का भी प्रभावहीन तरीके से उपयोग हो रहा था। भूमि को दो भागों में बाँट दिया जाता था। एक भाग को शीत ऋतु में गेहूँ बोने के काम में लिया जाता था, वहीं दूसरे भाग को परती या खाली रखा जाता था। अगले वर्ष दूसरे भाग परती भूमि पर राई बोई जाती थी। जबकि पहला आधा भाग खाली रखा जाता था। यही प्रक्रिया पुनः दोहरायी जाती थी। इस व्यवस्था के कारण मिट्टी की उर्वरता का धीरे-धीरे ह्रास होने लगा।

@amarwah450

3. जनजीवन पर प्रभाव- कृषि सम्बन्धी इन अवस्थाओं से यूरोप की मिट्टी की उर्वरता का ह्रास होने से बार-बार अकाल पड़ने लगे, जिससे गरीब लोगों के लिए जीवन निर्वाह करना अत्यन्त कठिन हो गया। वे कुपोषण व भुखमरी का शिकार होने लगे। अनेक लोग मृत्यु के मुँह में चले गये।

**प्रश्न 18. नई प्रौद्योगिकी ने किस प्रकार सामंतवाद को कमजोर किया?**

**उत्तर-** ग्यारहवीं सदी से, व्यक्तिगत संबंध, जो सामंतवाद का आधार थे कमजोर पड़ने लगे, क्योंकि आर्थिक लेन-देन अधिक से अधिक मुद्रा पर आधारित होने लगा। लॉर्डों को लगान, उनकी सेवाओं की बजाए नकदी में लेना अधिक सुविधाजनक लगने लगा और कृषकों ने अपनी फसल व्यापारियों को मुद्रा में (उन्हें वस्तुओं से बदलने के स्थान पर) बेचना शुरू कर दिया जो पुनः उन वस्तुओं को शहर में बेच देते थे। धन का बढ़ता उपयोग कीमतों को प्रभावित करने लगा जो खराब फसल के समय बहुत अधिक हो जाती थीं। उदाहरण के लिए, इंग्लैंड में 1270 और 1320 कृषि मूल्य दुगुने हो गए थे।

**प्रश्न 19. कैथेड्रल नगरों की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।**

**उत्तर-** कैंटरबरी कैथेड्रल, इंग्लैंड का सबसे पुरातन एवं सबसे मशहूर ईसाई गिरिजाघर है। यह भवन, एक विश्व धरोहर स्थल का हिस्सा है। यह कैंटरबरी के आर्चबिशप का निज-आसान है और चर्च ऑफ़ इंग्लैंड तथा विश्व विस्तृत एंग्लिकाइ संप्रदाय का मातृगिर्जा है। कैंटरबरी के आर्चबिशप, वैश्विक एंग्लिकाई ऐक्य के चिन्हात्मक प्रमुख होते हैं। इस चर्च का पूरा आधिकारिक नाम है "कैथेड्रल एण्ड मेट्रोपोलिटिकल चर्च ऑफ़ क्राइस्ट ऐंट कैंटरबरी"।

**प्रश्न 20. यूरोप में सामंतवाद का पतन क्यों हो गया?**

**उत्तर- यूरोप में सामंतवाद का पतन-**

(1) सामन्तों का पारस्परिक संघर्ष सामंतवाद के पतन का प्रमुख कारण था।

(2) राजाओं की निरंकुशता में वृद्धि भी सामन्तवाद के पतन का कारण बनी।

(3) राष्ट्रीय राज्यों की स्थापना ने यूरोप में सामन्तवाद का पतन सुनिश्चित कर दिया।

(4) आधुनिक हथियारों तथा बारूद के आविष्कार ने यूरोप की युद्ध प्रणाली में परिवर्तन कर दिया। नई युद्ध-प्रणाली के प्रयोग के फलस्वरूप सामन्तवाद का पतन होने लगा।

**प्रश्न 21. सर्फ कौन थे? एवम् इनकी जीवन दसा रोमन दास के समान क्यों थी?**

**उत्तर-** • फ्रांस का सर्फ या कृषि दास को अपने लॉर्ड के जागीर पर काम करना होता था, परंतु काम करने के दिन निश्चित होते थे।

• वह इन दिनों में सभी प्रकार का कार्य करता था उसका कार्य विशेष रूप से कृषि एवं गृह कार्य से सम्बद्ध होता था।

• रोम का दास अपने मालिक के दास खूँटे में बंधा हुआ था। उससे कभी भी कोई भी कार्य कराया जा सकता था। उसका पूरा समय स्वामी के साथ जुड़ा हुआ था।

• स्वामी के कार्य के बदले दोनों को स्वामी से कोई मजदूरी नहीं मिलती थी।

• सर्फ प्रायः अपने परिवार के लॉर्ड के यहाँ कार्य करते थे परंतु रोम के दासों के साथ ऐसा नहीं था। उनका पार्टनर प्रायः उनके साथ नहीं होता था।

• कृषिदास के पास गुजारे के लिए लॉर्ड का एक भूखंड होता था। इसको अधिकांश उपज लॉर्ड को देनी पड़ती थी। रोम के दास के पास इस प्रकार की कोई व्यवस्था नहीं थी।

• फ्रांस के कृषि दास और रोम के दास दोनों स्वामी की आज्ञा के बिना कहीं नहीं जा सकते थे।

• सर्फ लॉर्ड की आज्ञा ले ही विवाह कर सकता था परंतु रोम का दास विवाह ही नहीं कर सकता था।

• रोम का दास खरीदा या बेचा जा सकता था, परंतु सर्फ के साथ ऐसा नहीं किया जा सकता था। ■

## अध्याय-7 बदली हुई सांस्कृतिक परंपराएँ

### वस्तुनिष्ठ प्रश्न

**प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए-**

**1. रेनेसा का शाब्दिक अर्थ है?**

(अ) पुनर्जन्म (ब) आंदोलन
(स) धार्मिक विचार (द) क्रांति

**2. इटली राज्य की राजधानी है?**

(अ) पेरिस (ब) वेनिस
(स) रोम (द) मास्को

**3. वेनिस क्या था?**

(अ) नदी (ब) नहर
(स) शहर (द) राजा का नाम

**4. अरबी भाषा में प्लूटो का नाम क्या था?**

(अ) सिराकी (ब) सिकंदर
(स) फेयरी (द) अफलातून

**5. दोनतल्लो कौन था?**

(अ) संगीतकार (ब) मूर्तिकार
(स) इतिहासकार (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं

@amanwar450

6. प्रसिद्ध चित्र मोनालिसा के रचनाकार कौन थे?
(अ) लेओनार्दो दा विंची (ब) प्लेटो
(स) राफेल (द) पेट्राक
उत्तर- 1 (अ), 2 (स), 3 (स), 4 (द), 5 (अ), 6 (अ)।

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-
(1) पोप ..... धर्म का सर्वोच्च गुरु है।
(2) छापेखाने का अविष्कारक ..... था।
(3) प्रसिद्ध कृति यूटोपीया के रचनाकार ..... थे।
(4) प्रोटेस्टेंट चर्च के जनक ..... थे।
(5) कॉस्मोग्राफिल मिस्ट्री के रचनाकार ..... थे।
(6) नायटीफाइव थियसेज के रचनाकार ..... थे।
उत्तर- (1) रोमन कैथोलिक चर्च (2) गुटेन वर्ग (3) टॉमस मूर (4) मार्टिन लूथर (5) केपलर (6) मार्टिन लूथर।

प्रश्न-3. सत्य/असत्य लिखिए-
(1) सबसे पहले विश्वविद्यालय इटली के शहरों में स्थापित हुए।
(2) द लास्ट सपर की रचना लियनार्डो द विंची ने की थी।
(3) पेट्राक को रोम में राजा की उपाधि दी गई।
(4) राफेले ने सिस्टीन चैपल की छत पर चित्र बनाए।
(5) 5वीं सदी से 9वीं सदी तक का युग अंधकार युग कहा जाता है।
(6) इन्नसेंना यूरोप के दार्शनिक थे।
उत्तर- (1) सत्य, (2) सत्य, (3) सत्य, (4) असत्य, (5) असत्य, (6) सत्य।

प्रश्न 4. सही जोड़ी मिलाए-

| कॉलम-(अ) | कॉलम-(ब) |
|---|---|
| (1) पादुआ | (अ) बाइबिल का खंड |
| (2) माइकल एंजेलो | (ब) चित्रकार |
| (3) फ्रेंचसो बरबारी | (स) मानववाद |
| (4) न्यू टेस्टामेंट | (द) गुंबद |
| (5) दी ड्यूमा | (ई) दार्शनिक |
| (6) अरस्तु | (फ) विश्वविद्यालय |

उत्तर- 1. (फ), 2. (ब), 3. (स), 4. (अ), 5. (द), 6. (ई)।

प्रश्न 5. एक वाक्य में उत्तर लिखिए-
(1) अलमजेस्ट के रचनाकार कौन थे?
(2) माइकल एंजेलो कौन थे।
(3) मोनालिसा तथा द लास्ट सपर के चित्रों की रचना किसने की थी।
(4) प्रोटेस्टेंट सुधारवादी आंदोलन किसने चलाया?
(5) इग्नेशिया लोयला ने किस संस्था की स्थापना की थी?
उत्तर- (1) क्लाडियस टॉलमी, (2) प्रसिद्ध चित्रकार (3) लेओनार्दो दा विंची (4) मार्टिन लूथर (5) सोसाइटी ऑफ जीसस।

## अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. कोपरनिकस कौन था?
उत्तर- (1) निकोलस कोपरनिकस मशहूर यूरोपीय खगोलशास्त्री और गणितज्ञ हैं, जिनके नाम पर नई दिल्ली में एक मार्ग का नाम भी कोपरनिकस मार्ग रखा गया है. निकोलस के पिता कोपर के एक अच्छे व्यापारी थे. इसी वजह से निकोलस का नाम कोपरनिकस रखा गया। खास बात यह है कि आज निकोलस का जन्मदिन है। निकोलस का जन्म 19 फरवरी, 1473 में पोलैंड में हुआ था।

प्रश्न 2. मार्टिन लूथर किंग कौन था?
उत्तर- डॉ. मार्टिन लूथर किंग, जूनियर (15 जनवरी 1929 - 4 अप्रैल 1968) अमेरिका में एक पादरी, आन्दोलनकारी (ऐक्टिविस्ट), एवं अफ्रीकी-अमेरिकी नागरिक अधिकारों के संघर्ष के प्रमुख नेता थे। उन्हें अमेरिका का गांधी भी कहा जाता है।

प्रश्न 3. रेनसा से क्या अभिप्राय है?
उत्तर- रेनसा एक फ्रेंच शब्द है। इस शब्द का अर्थ होता है पुनर्जागरण या पुनर्जीवित । इस शब्द का इस्तेमाल यूरोप में हुई 14वीं और 16वीं शताब्दी के बदलाव के लिए किया गया है। यह माँ कर की उस शताब्दी के दौरान पूरे यूरोप का पुनर्जन्म हुआ था।

प्रश्न 4. गैलीलियो गैलिली कौन थे?
उत्तर- (4) गैलीलियो गैलिली एक इतालवी खगोलशास्त्री, भौतिक विज्ञान और गणितज्ञ थे। गैलिलियो पहले व्यक्ति थे जिन्होंने खगोलीय प्रेक्षण, चंद्रमा पर क्रेटरों व पहाड़ों की खोज और वृहस्पति के चार उपग्रहों प्रायः गैलिली उपग्रहों के रूप में जाना जाता है, के लिए दूरबीन का उपयोग किया था।

प्रश्न 5. मानववाद क्या था?
उत्तर- मानवतावाद का अर्थ हैं- मानव जीवन में रुचि लेना मानव का आदर करना, मानव जीवन के महत्व को स्वीकार करना तथा मानव जीवन को सुधारने एवं उन्नत बनाने का प्रयत्न करना। पुनर्जागरण काल में परलोक की अपेक्षा लौकिक रुचि को महत्व देने की विचारधारा को ही 'मानवतावाद' कहा गया है। मानवतावाद का तात्पर्य उस विचारधारा से है, जिसमें मानव की विभिन्न समस्याओं को सुलझाने पर बल दिया जाता है एवं मानव जीवन का चहुँमुखी विकास कर उसके जीवन को सुखी एवं समृद्ध बनाने का प्रयास किया जाता है। पुनर्जागरण काल के साहित्यकारों तथा कलाकारों ने वर्तमान मानव के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। इस युग के साहित्यकारों के साहित्य एवं कलाकारों की कला को मानविकी

@amarwah450

का नाम दिया गया। मानवतावादी विद्वानों ने जनसाधारण को सभ्य और सुसंस्कृत बनाने के लिए प्राचीन रोमन एवं यूनानी साहित्य के अध्ययन पर बल दिया।

**प्रश्न 6. निकोलो मेकियावेली कौन थे?**

**उत्तर-** निकोलो मेकियावेली (3 मई 1469 - 21 जून 1527) इटली का राजनयिक एवं राजनैतिक दार्शनिक, संगीतज्ञ, कवि एवं नाटककार था। पुनर्जागरण काल के इटली का वह एक प्रमुख व्यक्तित्व था। वह फ्लोरेंस रिपब्लिक का कर्मचारी था।

**प्रश्न 7. जोहान्स गुटेनबर्ग कौन थे?**

**उत्तर-** जोहान्स गुटेनबर्ग जर्मनी का निवासी था। वह बचपन से ही तेल तथा जैतून पेरने की मशीनें देखता आया था। बाद में उसने हीरों तथा शीशों पर पॉलिश करने की कला सीखी। अपने ज्ञान और अनुभव का प्रयोग उसने अपनी प्रिंटिंग प्रेस के निर्माण में किया। उसके द्वारा बनाई गई प्रेस विश्व की पहली प्रिंटिंग प्रेस थी जिसका आविष्कार 1448 में हुआ था। इससे पहले पुस्तकें हाथ से लिखी जाती थीं। गुटेनबर्ग की प्रेस पर सबसे पहले छपने वाली पुस्तक बाइबल थी। इस पुस्तक की 180 प्रतियाँ छपने में तीन वर्ष का समय लगा था।

गुटेनबर्ग ने रोमन वर्णमाला के सभी 26 अक्षरों के टाइप बनाए। ये टाइप धातुई थे। उसने इन्हें इधर-उधर घुमा कर शब्द बनाने का तरीका निकाला। इसलिए गुटेनबर्ग की प्रेस को 'मवेबल टाइप प्रिंटिंग प्रेस' का नाम दिया गया। इसके बाद लगभग 300 वर्षों तक छपाई की यही तकनीक प्रचलित रही।

**प्रश्न 8. पुनर्जागरण में माइकल एंजेलो के योगदान को लिखिए। कोई दो**

**उत्तर-** माइकल एंजेलो बुआनारोती (1475.1564 ई.) एक कुशल चित्रकार, मूर्तिकार तथा वास्तुकार था। उसने पोप के सिस्टीन चैपल की भीतरी छत पर चित्रकारी की और 'दि पाइटा' नाम से मूर्ति बनाई। उसने सेंट पीटर गिरिजाघर के गुबंद का डिजाइन भी तैयार किया। ये सभी कलाकृतियाँ रोम में ही हैं।

**प्रश्न 9. यथार्थवाद क्या है?**

**उत्तर-** शरीर विज्ञान, रेखागणित, भौतिकी तथा सौंदर्य की उत्कृष्ट भावना ने इतालवी कला को नया रूप प्रदान किया। इसी को बाद में 'यथार्थवाद' का नाम दिया गया। यथार्थवाद की यह परंपरा उन्नीसवीं शताब्दी तक चलती रही।

**प्रश्न 10. अरस्तु कौन थे? पर टिप्पणी लिखिए।**

**उत्तर-** अरस्तु (384 ई.पू. - 322 ई.पू.) यूनानी दार्शनिक थे, वे प्लेटो के शिष्य व सिकंदर के गुरु थे। उनका जन्म स्टेगेरिया नामक नगर से हुआ था। अरस्तु ने भौतिकी, आध्यात्म, कविता, नाटक, संगीत, तर्कशास्त्र, राजनीति शास्त्र, नीतिशास्त्र, जीव विज्ञान सहित कई विषयों पर रचना की। प्लेटो, सुकरात और अरस्तु पश्चिमी दर्शनशास्त्र के सबसे महान दार्शनिकों में एक थे। उन्होंने पश्चिमी दर्शनशास्त्र पर पहली व्यापक रचना की, जिसमें नीति तर्क विज्ञान, राजनीति और आध्यात्म का मेलजोल था। भौतिक विज्ञान पर अरस्तु के विचार ने मध्ययुगीन शिक्षा पर व्यापक प्रभाव डाला और इसका प्रभाव पुनर्जागरण पर भी पड़ा। अंतिम रूप से न्यूटन के भौतिकवाद ने इसकी जगह ले लिया। जीव विज्ञान उनके कुछ संकल्पनाओं की पुष्टि उन्नीसवीं सदी में हुई। उनके तर्कशास्त्र आज भी प्रासंगिक हैं। उनकी आध्यात्मिक रचनाओं ने मध्ययुग में इस्लामिक और यहूदी विचारधारा को प्रभावित किया और वे आज भी क्रिश्चियन, खासकर रोमन कैथोलिक चर्च को प्रभावित कर रही हैं। अरस्तु ने अनेक रचनाएँ की थीं, जिसमें कई नष्ट हो गई। अरस्तु का राजनीति पर प्रसिद्ध ग्रंथ पोलिटिक्स है। अरस्तु ने जन्तु इतिहास नामक पुस्तक लिखी। इस पुस्तक में लगभग 500 प्रकार के विविध जन्तुओं की रचना, स्वभाव, वर्गीकरण, जनन आदि का व्यापक वर्णन किया गया।

**प्रश्न 11. पेट्रार्क के पुनर्जागरण में योगदान को लिखिए।**

**उत्तर-** वह इटली का महान कवि तथा मानववाद का संस्थापक था। उसने अपनी कविताओं के माध्यम से समाज में व्याप्त दोषों की कटु आलोचना की थी।

**प्रश्न 12. नगर राज्य से क्या आशय है?**

**उत्तर-** नगर-राज्य- सम्प्रभुत्ता रखने वाले एक राज्य होता है जिसका भौगोलिक क्षेत्र एक नगर और उसके कुछ समीपी अधीन क्षेत्र होते हैं।

**प्रश्न 13. यूरोप में सर्वप्रथम इटली के नगरों का पुनरुत्थान क्यों हुआ?**

**उत्तर-** पश्चिमी रोमन साम्राज्य के पतन के पश्चात् इटली के नगरों का भी विनाश हो गया। लेकिन बाइजेंटाइन साम्राज्य एवं इस्लामी देशों के मध्य व्यापार में वृद्धि होने से तटवर्ती बंदरगाहों के साथ-साथ इटली के नगरों का भी विकास पुनः प्रारम्भ हो गया। बारहवीं शताब्दी में जब मंगोलों ने चीन के साथ रेशम मार्ग से व्यापार प्रारम्भ किया तो पश्चिमी देशों के व्यापार में भी उन्नति हुई। इस व्यापारिक उन्नति में इटली के नगरों का भी महत्त्वपूर्ण योगदान था। ये नगर स्वयं को स्वतंत्र नगर- राज्यों का एक समूह मानते थे। इन नगरों का संचालन राजकुमारों द्वारा किया जाता था। फ्लोरेंस, वेनिस, जिनेवा आदि इटली के प्रमुख नगर थे। यहाँ धर्माधिकारी वर्ग व सामंत वर्ग राजनीतिक दृष्टि से शक्तिशाली नहीं थे। नगर की शासन व्यवस्था में धनी व्यापारी व महाजन सक्रिय रूप से भाग लेते

@amanwah450

थे। इस तरह इटली के नगरों का पुनरुत्थान हुआ।

**प्रश्न 14. विज्ञान और दर्शन में अरबों का योगदान लिखिए।**

**उत्तर- विज्ञान और दर्शन के क्षेत्र में अरबों के योगदान-** चौदहवीं शताब्दी में अरब के विद्वानों ने प्लेटो व अरस्तू के ग्रन्थों का अनुवाद किया जिनको अनेक यूरोपीय विद्वानों ने पढ़ा। अरब के विद्वानों ने प्राचीन पांडुलिपियों का परिरक्षण भी किया। एक ओर यूरोप के विद्वान यूनानी ग्रन्थों के अरबी अनुवादों का अध्ययन कर रहे थे तो दूसरी ओर यूनानी विद्वान अरबी व फ़ारसी विद्वानों की रचनाओं को अन्य यूरोपीय लोगों के बीच प्रसार के लिए अनुवाद कर रहे थे। ये ग्रन्थ प्राकृतिक विज्ञान, खगोल विज्ञान, औषधि विज्ञान, रसायन शास्त्र, खगोल एवं गणित से सम्बन्धित थे।

टालेमी ने खगोलशास्त्र पर यूनानी भाषा में 'अलमजेस्ट' नामक ग्रन्थ लिखा जिसका बाद में अरबी भाषा में अनुवाद किया गया। यह यूनानी व अरबी भाषा के निकट सम्बन्धों को दर्शाता है। यूरोपीय जगत में अरबी विद्वान 'ज्ञानी' के रूप में प्रसिद्ध थे। प्रमुख ज्ञानी मुस्लिम विद्वानों में इब्नसिना, हकीम व अल राजी आदि थे। स्पेन के अरबी दार्शनिक इब्न रुश्द ने दार्शनिक ज्ञान और धार्मिक विश्वास के मध्य दावों को दूर करने का प्रयास किया। उनकी पद्धति को बाद में ईसाई विद्वानों ने भी अपनाया। इस प्रकार कहा जा सकता है कि विज्ञान और दर्शन के क्षेत्र में अरबियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा था।

**प्रश्न 15. यथार्थवादी कला से आप क्या समझते हैं?**

**उत्तर- यथार्थवाद से आशय-** यूरोप में बारहवीं व तेरहवीं शताब्दी के दौरान लोगों के मन-मस्तिष्क को आकार देने का साधन केवल औपचारिक शिक्षा ही नहीं थी, बल्कि चित्रकला, वास्तुकला एवं साहित्य ने भी मानवतावादी विचारों को फैलाने में प्रभावी भूमिका निभाई। जीवन के अनेक क्षेत्रों; जैसे-शरीर विज्ञान, रेखागणित, भौतिकी और सौन्दर्य की उत्कृष्ट भावना ने इटली की कला को एक नया रूप दिया, जिसे 'यथार्थवाद' कहकर पुकारा गया। चित्रकारों द्वारा इतालवी कला को यथार्थवादी रूप प्रदान करना- इटली के चित्रकारों ने इतालवी कला को यथार्थवादी रूप प्रदान करने का भरपूर प्रयास किया। कलाकारों की मूल आकृति जैसी सटीक मूर्तियां बनाने की चाह को वैज्ञानिकों के कार्यों ने और अधिक प्रेरित किया।

**प्रश्न 16. वास्तुकला की शास्त्री शैली क्या है?**

**उत्तर-** शास्त्रीय शैली से आशय कई पुरातत्वविदों द्वारा रोम के अवशेषों का उत्खनन किया गया। इसने वास्तुकला की एक नयी शैली को प्रोत्साहित किया। जो वास्तव में रोमन साम्राज्य के काल की शैली का पुनरुद्धार थी। इसे 'शास्त्रीय शैली' के नाम से जाना गया।

**प्रश्न 17. इतिहास में लियोनार्डो द विंची के योगदान को लिखिए।**

**उत्तर-** लियोनार्डो दा विंची इटली का एक महान यथार्थवादी चित्रकार था। इसके प्रसिद्ध चित्रों में मोनालिसा व द लास्ट सपर प्रमुख हैं। इनकी अभिरुचि वनस्पति विज्ञान, शरीर विज्ञान, गणित शास्त्र तथा कला में थी। इस बहुगुण सम्पन्न दार्शनिक चित्रकार ने वर्षों तक आकाश में पक्षियों के उड़ने का परीक्षण किया। आकाश में उड़ने के अपने स्वप्न को साकार करने के लिए इन्होंने एक उड़न-मशीन का प्रतिरूप बनाया।

## विश्लेषणात्मक प्रश्नोत्तर

**प्रश्न 1. क्या आप सहमत हैं कि पुनर्जागरण काल के दौरान हुए सुधारों के फलस्वरूप यूरोपियन समाज सशक्त हुआ? कारण सहित स्पष्ट कीजिए।**

**उत्तर- पुनर्जागरण-** यूरोप के निवासियों ने मध्यकाल की निर्जीव और मृतप्राय रोमन एवं यूनानी सभ्यता को पुनर्जीवित करने के जो प्रयास किये उन्हें पुनर्जागरण कहते हैं। 'पुनर्जागरण' शब्द का प्रयोग उन सभी बौद्धिक परिवर्तनों के लिए किया जाता है जो मध्य युग के अन्त में तथा आधुनिक युग के प्रारम्भ में हुए। इससे अज्ञानता और अन्धविश्वास की जंजीरों में जकड़े हुए मनुष्य को छुटकारा मिला और उसके जीवन में नये ज्ञान एवं नयी चेतना का उदय हुआ। इसीलिए 'पुनर्जागरण को मध्यकालीन पुराने विचारों के विरुद्ध एक सांस्कृतिक एवं अहिंसक क्रान्ति की संज्ञा दी गयी। पुनर्जागरण के फलस्वरूप यूरोप में राज्य, राजनीति, धर्म, न्याय, साहित्य, दर्शन आदि के क्षेत्र में बहुत अधिक परिवर्तन तथा सुधार हुए।

यूरोप में पुनर्जागरण के लिए मुख्यतया निम्नलिखित कारण उत्तरदायी थे—

**1. धर्म-युद्ध-** नवीन ज्ञान का मार्ग दिखाने में मध्यकाल में लड़े गये धर्म-युद्धों ने विशेष भूमिका निभायी। ये धर्म युद्ध तुर्कों से येरूसलम को स्वतन्त्र कराने के लिए ईसाइयों ने लड़े। इन धर्म-युद्धों के कारण यूरोपवासी अन्य देशों की सभ्यता एवं संस्कृति के सम्पर्क में आये और उनमें नवीन विचारों का उदय हुआ।

**2. इस्लाम धर्म का प्रचार-** धर्म-युद्धों के कारण यूरोप के लोग मध्य-पूर्व की इस्लाम सभ्यता के सम्पर्क में आये। इससे यूरोपवासियों को अपने राजनीतिक एवं धार्मिक ढाँचे की कमियों की जानकारी हुई। उन्होंने अपने जर्जर धार्मिक, राजनीतिक तथा सामाजिक जीवन में समयानुकूल परिवर्तन करने आवश्यक समझे तथा अपनी प्राचीन सभ्यता-संस्कृति

@amarwal1450

को पुनः स्थापित करने के लिए नये सिरे से प्रयास करने प्रारम्भ कर दिये।

**3. कुस्तुनतुनिया पर तुर्कों का अधिकार-** सन् 1453 ई. में तुर्कों ने कुस्तुनतुनिया पर अधिकार कर लिया। इससे यूरोप में पुनर्जागरण को बड़ा बल मिला। तुर्कों के अत्याचार से डरकर बहुत सारे यूनानी- ईसाइयों ने यूरोप के भिन्न-भिन्न भागों में शरण ली। इन लोगों ने यूरोप में जगह-जगह यूनानी सभ्यता का प्रचार किया, जिसका लोगों पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा। इस प्रभाव ने यूरोप में जागृति की प्रक्रिया आरम्भ कर दी।

**4. नवीन धार्मिक मान्यताओं का विकास-** यूरोप के लोगों में यह विश्वास उत्पन्न होने लगा कि स्वर्ग तथा नरक केवल रूढ़िवादी धर्म की कल्पनाएँ हैं। जीवन का सच्चा सुख तो केवल परिश्रम तथा। स्वावलम्बन से प्राप्त होता है। स्वर्ग कहीं नहीं, इसी धरती पर विद्यमान है। इन मानवतावादी विचारों के प्रादुर्भाव से यूरोप के निवासियों को अन्धविश्वासों से मुक्ति मिली और वे नये तार्किक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने लगे।

**5. भौगोलिक खोजें-** पुर्तगाल, स्पेन, फ्रांस, इटली, इंग्लैंड, हॉलैण्ड आदि देशों के नाविकों ने नये-नये सामुद्रिक मार्गों तथा नये-नये देशों की खोज की। यूरोप के लोगों ने इन देशों में अपने उपनिवेश स्थापित किये जिससे यूरोप में साम्राज्यवाद के युग का आरम्भ हुआ। इन भौगोलिक खोजों से यूरोपवासी अनेक उन्नत व प्राचीन सभ्यताओं के सम्पर्क में आये, जिससे यूरोप में नवीन विचारों का उदय हुआ।

**प्रश्न 2. धर्म के सुधारात्मक आंदोलनों की व्याख्या कीजिए।**

**उत्तर-** पुनर्जागरण के परिणामस्वरूप धार्मिक क्षेत्र में भी परिवर्तन का युग प्रारम्भ हुआ। मध्यकाल के अन्त तक चर्च में अनेक दोष उत्पन्न हो गए थे। चर्च अब भ्रष्टाचार तथा विलासिता के केन्द्र बनने लगे थे। पोप, जिसकी आज्ञा धार्मिक क्षेत्र में सर्वोपरि होती थी, स्वयं को ईश्वर का प्रतिनिधि समझने लगे थे। पोप किसी भी राजा को पदच्युत, किसी भी देश के चर्चों को बन्द तथा किसी भी व्यक्ति को ईसाई धर्म से बहिष्कृत कर सकता था। पोप ने अपनी शक्ति का दुरुपयोग करना प्रारम्भ कर दिया तथा वह धार्मिक क्षेत्र के अतिरिक्त राजनीतिक मामलों में भी हस्तक्षेप करने लगा था। इस प्रकार तत्कालीन चर्च एवं पोप में व्याप्त बुराइयों के विरोध में इंग्लैण्ड तथा यूरोप में जो आन्दोलन हुआ, उसे धर्म-सुधार आन्दोलन के नाम से जाना जाता है।

**प्रश्न 3. मानववाद और यथार्थवाद ने किस प्रकार यूरोपीय समाज के पुनः जागरण में योगदान दिया।**

**उत्तर- मानववाद का योगदान-** मानव जीवन में रुचि लेना मानव का आदर करना, मानव जीवन के महत्त्व को स्वीकार करना तथा मानव जीवन को सुधारने एवं उन्नत बनाने का प्रयत्न करना। पुनर्जागरण काल में परलोक की अपेक्षा लौकिक रुचि को महत्त्व देने की विचारधारा को ही 'मानवतावाद' कहा गया। है। मानवतावाद का तात्पर्य उस विचारधारा से है, जिसमें मानव की विभिन्न समस्याओं का अध्ययन कर समस्याओं को सुलझाने पर बल दिया जाता है एवं मानव जीवन का चहुँमुखी विकास कर उसके जीवन को सुखी एवं समृद्ध बनाने का प्रयास किया जाता है। पुनर्जागरण काल के साहित्यकारों तथा कलाकारों ने वर्तमान मानव के जीवन में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। इस युग के साहित्यकारों के साहित्य एवं कलाकारों की कला को मानविकी का नाम दिया गया। मानवतावादी विद्वानों ने जनसाधारण को सभ्य और सुसंस्कृत बनाने के लिए प्राचीन रोमन एवं यूनानी साहित्य के अध्ययन पर बल दिया।

**यथार्थवाद का योगदान-** यथार्थवाद ने शरीर विज्ञान, रेखागणित भौतिक तथा सौंदर्य की उत्कृष्ट भावना ने इतालवी कला को नया रूप प्रदान किया। यथार्थवाद की यह परम्परा 19वीं शताब्दी तक चलती रही थी जिसने यूरोपीय समाज के पुनःजागरण में अपना योगदान दिया।

**प्रश्न 4. कोपरनिकस क्रांति पर लेख लिखिए।**

**उत्तर-** यूरोपीय विज्ञान के क्षेत्र में एक परिवर्तन हुआ, ईसाइयों की यह धारणा थी कि पृथ्वी पापों से भरी है, मनुष्य पापी है एवं पापों की अधिकता के कारण वह स्थिर है। पृथ्वी ब्रह्मांड के बीच स्थिर है, जिसके चारों ओर खगोलीय ग्रह परिक्रमा कर रहे हैं।

कोपरनिकस (1473-1543) ने घोषणा की कि पृथ्वी समेत सारे ग्रह सूर्य के चारों ओर परिक्रमा करते हैं। वे एक निष्ठावान ईसाई थे व इस बात से डरे हुए थे कि उनकी नयी खोज से ईसाई धर्माधिकारी में प्रतिक्रियों उत्पन्न ना हो जाए। इसी वजह से वह अपनी पांडुलिपि दि रिवल्यूशनिबस (परिभ्रमण) को प्रकाशित नहीं करना चाहते थे। जब वह अपनी मृत्यु की कगार पर थे, तब उन्होंने यह पांडुलिपि अपने अनुयायी जोशिम रिटिकस को सौंप दी। इन विचारों को ग्रहण करने में काफी समय लगा। कुछ समय पश्चात् खगोलशास्त्री जोहानेस कैप्लर तथा गैलिलियो गैलिबी ने अपने कृतियों द्वारा 'स्वर्ग' एवं 'पृथ्वी' के अंतर को समाप्त कर दिया।

कैप्लर ने अपने ग्रंथ कास्मोग्राफिकल मिस्ट्री में कोपरनिकस के सूर्य केन्द्रित सौरमंडलीय सिद्धांत को लोकप्रिय बनाया जिससे यह सिद्ध हुआ कि सारे ग्रह सूर्य के चारों ओर वृत्ताकार रूप में नहीं, बल्कि दीर्घ वृत्ताकार मार्ग पर परिक्रमा करते हैं। गैलिलियो ने अपने ग्रंथ दि मोसन में गतिशील विश्व के

@amarwal450

सिद्धांतों की पुष्टि की। विज्ञान जगत में इस क्रांति ने न्यूटन के गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत के साथ अपनी पराकाष्ठा की ऊँचाई को छू लिया।

**प्रश्न 5. इटली के नगरों का पुनरुत्थान ने मध्यकालीन यूरोपीय समाज को किस प्रकार प्रभावित किया? स्पष्ट कीजिए।**

**उत्तर-** पुनर्जागरण काल में विभिन्न क्षेत्रों में विकास और जागृति की जो लहर आई, उसके महत्त्वपूर्ण परिणाम/ प्रभाव परिलक्षित हुए, जिनका वर्णन निम्नांकित है-

**1. मानवतावादी दृष्टिकोण का विकास-** पुनर्जागरण काल में यूनानी एवं रोमन साहित्य के अध्ययन के परिणामस्वरूप लोगों में मानवतावादी दृष्टिकोण का विकास हुआ। मानवतावादी दृष्टिकोण के तहत अब मनुष्य की समस्याओं की ओर ध्यान दिया जाने लगा और मनुष्य के जीवन को सुखी व समृद्ध बनाने का प्रयास किया गया।

**2. बौद्धिक क्रान्ति का सूत्रपात-** पुनर्जागरण का सर्वाधिक प्रभाव जनसाधारण पर परिलक्षित हुआ। जनसाधारण में तर्कवादिता ने जन्म लिया। अब जनता बिना किसी आधार एवं प्रमाण के किसी बात को स्वीकार नहीं करती थी। इस काल में लोगों ने अब तथ्यों को तर्कों के आधार पर परखना शुरू किया, न कि धार्मिक मान्यता के आधार पर। इस काल में लोगों ने बुद्धि और विवेक को आधार मानते हुए आलोचनात्मक एवं तार्किक लेखन किया, जिससे समाज में बौद्धिक जागृति उत्पन्न हुई और बौद्धिक क्रान्ति का मार्ग प्रशस्त हुआ।

**3. धर्म सुधार आन्दोलन का सूत्रपात-** पुनर्जागरण ने जनसाधारण में तर्क एवं विवेकशक्ति को जागृत किया, जिससे लोगों के दृष्टिकोण में परिवर्तन आया। मध्यकाल के दौरान समाज में व्याप्त धार्मिक अन्धविश्वासों और मान्यताओं का खण्डन किया जाने लगा। अब लोगों के मन में एवं पोप के प्रति पहले जैसी श्रद्धा नहीं रही। अब लोग मुखर होकर पादरी वर्ग तथा चर्च के दोषों की आलोचना करने लगे। इस प्रकार पुनर्जागरण ने चर्च की प्रमुखता पर प्रहार करके धर्म सुधार आन्दोलन का मार्ग प्रशस्त किया और शीघ्र ही यूरोप में धर्म सुधार आन्दोलन का सूत्रपात हुआ।

**4. शिक्षा और साहित्य का विकास-** मानवतावादी दृष्टिकोण के विकास के परिणामस्वरूप शिक्षा के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए। यूनानी और रोमन साहित्य की अमूल्य कृतियाँ विभिन्न विश्वविद्यालयों में पहुँची, जहाँ युवा पीढ़ी ने इनसे प्रेरणा प्राप्त की और पुनर्जागरण का मार्ग प्रशस्त किया। इस काल में साहित्य का भी काफी विकास हुआ। रोमन और यूनानी भाषाओं के विकास के साथ-साथ राष्ट्रीय भाषाओं का भी पर्याप्त विकास हुआ। इंग्लैण्ड में अंग्रेजी भाषा, फ्रांस में फ्रांसीसी भाषा, स्पेन में स्पेनिश भाषा और इटली में इटालियन भाषा के साहित्य का पर्याप्त मात्रा में सृजन हुआ।

**5. इतिहास का प्रभाव-** पुनर्जागरण के प्रभाव से जनता में पुनः इतिहास लिखने एवं पढ़ने की भावना जागृत हुई। पुनर्जागरण के पहले गोथों तथा हुणों के आक्रमणों ने प्राचीन एवं मध्यकालीन इतिहास के मध्य एक खाई बना दी थी जो पुनर्जागरण के साथ ही समाप्त हो गई।

**6. नवीन उपनिवेशों की स्थापना-** पुनर्जागरण के फलस्वरूप नये-नये प्रदेशों की खोज की गई। नये प्रदेशों की खोज में कोलम्बस, वास्कोडिगामा, जान कैबर, मैगलेन नामक नाविकों ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। आगे चलकर यूरोप में उपनिवेशवाद की भावना ने जन्म लिया। अब यूरोपीय देशों जैसे पुर्तगाल, स्पेन, इंग्लैण्ड, हॉलैण्ड ने यूरोप के बाहर एशिया अफ्रीका में अपने उपनिवेश स्थापित किये।

**7. नये समुद्री मार्गों की खोज-** तुर्कों ने यूरोपीय व्यापारियों के मार्ग को अवरुद्ध कर दिये थे। अतः नये समुद्री मार्गों की खोज इस काल में हुई।

**8. कला पर प्रभाव-** इस युग में स्थापत्य कला, चित्रकला, संगीत, कला, मूर्तिकला के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण विकास हुए। इस युग के प्रसिद्ध कलाकार- माइकेल एंजेलो, रॉफेल, लियोनार्दो द विंची, सीटियन आदि थे।

**9. मध्यम वर्ग का उदय-** व्यापार-वाणिज्य में वृद्धि के कारण नवीन नगरों की स्थापना हुई और इन नवीन नगरों में एक नये वर्ग का विकास हुआ जिसे मध्यम वर्ग कहा गया। इस वर्ग ने सामंतों का विरोध किया तथा राजा को सहायता कर उसकी शक्ति एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि की।

**10. राष्ट्रीय राज्यों का उदय-** सामंतवाद का पतन हो गया था, समान जाति, धर्म एवं भाषा के आधार पर लोगों में राष्ट्रीयता की भावना का उदय हुआ। अब छोटे-छोटे राज्य समाप्त हो गये। इनकी जगह अब बड़े राज्यों का उदय हुआ।

**11. साहित्य पर प्रभाव-** इस युग में साहित्य का भी अच्छा विकास हुआ। अब साहित्य में लेटिन भाषा की उपेक्षा हुई तथा रोमन एवं यूनानी भाषाओं के प्रभाव में वृद्धि हुई। राष्ट्रीय भाषाओं का विकास हुआ। जैसे-इंग्लैण्ड में अंग्रेजी भाषा, फ्रांस में फ्रांसीसी भाषा, स्पेन में स्पेनिश भाषा तथा इटली में इटालियन भाषा एवं साहित्य का विकास हुआ।

**प्रश्न 6. गुटेनबर्ग का पुनर्जागरण में योगदान को स्पष्ट कीजिए?**

**उत्तर-** सन् 1455 में जर्मनमूल के जोहान्स गुटेनबर्ग (Johannes Gutenberg. 1400.58) जिन्होंने पहले छापेखाने का निर्माण

@anawan1450

किया, उनकी कार्यशाला में बाइबल की 150 प्रतियाँ छपीं। इससे पहले इतने ही समय में एक धर्मभिक्षु (Monk) बाइबल की केवल एक ही प्रति लिख पाता था।

पंद्रहवीं शताब्दी तक अनेक क्लासिकी ग्रंथों जिनमें अधिकतर लातिनी ग्रंथ थे, उनका मुद्रण इटली में हुआ था। चूंकि मुद्रित पुस्तकें उपलब्ध होने लगी और उनका क्रय संभव होने लगा, छात्रों को केवल अध्यापकों के व्याख्यानों से बने नोट पर निर्भर नहीं रहना पड़ा। अब विचार, मत और जानकारी पहले की अपेक्षा तेज़ी से प्रसारित हुए। नये विचारों को बढ़ावा देने वाली एक मुद्रित पुस्तक कई सौ पाठकों के पास बहुत जल्दी पहुँच सकती थी। अब पाठक एकांत में बैठकर पुस्तकों को पढ़ सकता था, क्योंकि वह उन्हें बाजार से खरीद सकता था। इससे लोगों में पढ़ने की आदत का विकास हुआ।

**प्रश्न 7. पुनर्जागरण काल के दौरान पाँच प्रमुख महान उपलब्धि, कारक, व्यक्तियों और उनकी उपलब्धियों को स्पष्ट करिए।**

**उत्तर- पेट्रार्क-** यह इटली का महान् कवि तथा मानववाद का संस्थापक था। उसने अपनी कविताओं के माध्यम से समाज में व्याप्त दोषों की कटु आलोचना की थी।

**माइकेल एंजिलो :** यह इटली का एक प्रसिद्ध कलाकार था। उसके बनाए चित्रों में 'द लास्ट जजमेण्ट तथा 'द फॉल ऑफ मैन' विशेष उल्लेखनीय हैं।

**रफेल :** यह इटली का एक प्रतिभाशाली चित्रकार था। इसकी गणना विश्व के उच्चकोटि के कलाकारों में की जाती है। 'मेडोना के चित्र, रफेल की चित्रकारी का सर्वश्रेष्ठ नमूना हैं।

**टॉमस मूर :** यह उच्चकोटि का साहित्यकार था। इसकी कृतियों में 'यूटोपिया विशेष उल्लेखनीय है। इसमें तत्कालीन समाज की कुरीतियों पर व्यंग्य किया गया है।

**मैकियावली :** मैकियावली को आधुनिक राजनीतिक दर्शन का जनक माना जाता है। यह फ्लोरेन्स का एक महान् इतिहासकार था। अपनी रचना 'द प्रिन्स; में उसने एक नए राज्य के स्वरूप की कल्पना की है।

**लियोनार्डो द विन्ची :** यह इटली का एक प्रसिद्ध चित्रकार था। उसके चित्रों में 'द लास्ट सपर' तथा 'मोनालिसा' प्रमुख हैं। चित्रकार होने के अतिरिक्त यह एक उच्चकोटि का मूर्तिकार, दार्शनिक, वैज्ञानिक, इन्जीनियर, गायक तथा कवि भी था। इस प्रकार लियोनार्डो द विन्ची अपने बहुमुखी गुणों के लिए जग प्रसिद्ध हैं।

**प्रश्न 8. पुनः जागरण इटली के नगरों से ही क्यों आरंभ हुआ? स्पष्ट कीजिए।**

**उत्तर-** पुनर्जागरण सर्वप्रथम इटली में प्रारम्भ हुआ, लेकिन बाद में समस्त यूरोप में पुनर्जागरण का सूत्रपात हुआ। पुनर्जागरण का प्रारम्भ इटली में ही क्यों हुआ? यह एक रोचक एवं जिज्ञासायुक्त प्रश्न है। इटली में ऐसे अनेक कारक तत्व उपस्थित थे, जिनके कारण इटली में सर्वप्रथम पुनर्जागरण प्रारम्भ हुआ; जिनका वर्णन निम्नवत् है-

**1. इटली के नगर शिक्षा व संस्कृति के केन्द्र-** इटली के अनेक नगर शिक्षा व संस्कृति के लिए जाने जाते थे। इटली की भौगोलिक स्थिति ने इटली को पूर्व और पश्चिम के मध्य प्राकृतिक प्रवेश द्वार बना दिया था। जब 1453 ई. में तुर्कों ने यूनानी सभ्यता के प्रमुख केन्द्र कुस्तुनतुनियाँ पर अधिकार कर लिया, तब तुर्कों के अत्याचारों से बचने के लिए वहाँ के लोगों ने इटली के नगरों से आकर्षित होकर इटली में बसना प्रारम्भ किया। कुस्तुनतुनियाँ से आने वाले लोगों में विद्वान व कलाकार भी शामिल थे, जो अपने साथ यूनानी व रोमन बौद्धिक सम्पदा को भी साथ लेकर आए थे। रोम व इटली के अन्य नगरों के पास लैटिन साहित्य से परिपूर्ण थे। इससे विद्वानों को नवीन ज्ञान का दीप जलाने में यहाँ के संग्रहालयों एवं वृहद पुस्तकालयों से महत्वपूर्ण सहायता प्राप्त हुई। इससे इटलीवासियों को प्लेटो, अरस्तु सहित अनेक यूनानी व अरबी विद्वानों के ग्रन्थों के अनुवादों के अध्ययन का अवसर प्राप्त हुआ और इटली में मानवतावादी विचारधारा को बल मिला। इटली के प्रमुख नगरों में स्थापित विश्वविद्यालयों में मानववादी विषयों का अध्ययन व अध्यापन प्रारम्भ हुआ। इटलीवासियों ने मानवतावादी विचारधारा के महत्वपूर्ण सिद्धान्तों को ग्रहण किया। इटली के मानवतावादी विद्वानों ने मानव को ईश्वर की सर्वोत्तम रचना माना और उसके भौतिक जीवन की समस्याओं व उससे मुक्ति पाने के विषय पर चिन्तन-मनन किया। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि चूंकि इटली के नगर पूर्व से ही शिक्षा व संस्कृति के केन्द्र थे, अतः नवीन विचारधारा का इटली में सुगमता से प्रसार हुआ।

**2. इटली के स्वतन्त्र नगर-** इटली के नगरों में सामन्तवाद का पतन हो जाने के पश्चात् वहाँ स्वतन्त्र नगरों की स्थापना हुई। इटली में रोम, फ्लोरेंस व वेनिस जैसे कई नगर सामंतों के नियन्त्रण में नहीं थे, ये नगर वाणिज्य व व्यापार की दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण थे। इन नगरों का एशिया के देशों के साथ निर्बाध व्यापार चलता रहता था। नगरों के स्वतन्त्र वातावरण ने नवीन विचारों की स्वतन्त्रता को जन्म दिया, जिससे पुनर्जागरण का मार्ग प्रशस्त हुआ।

**3. शासकों का संरक्षण-** इटली एक समृद्धशाली देश था। यहाँ के शासकों ने यहाँ आकर बसने वाले विद्वानों, साहित्यकारों और कलाकारों को आर्थिक संरक्षण प्रदान किया। इसके

@amarwan450

अतिरिक्त, इटली के धनी समृद्ध लोगों ने भी विद्वानों को संरक्षण प्रदान कर प्रोत्साहित किया। जिसके परिणामस्वरूप यूनानी एवं अन्य विद्वानों के साहित्य का प्रचार-प्रचार इटली में व्यापक रूप से हुआ, जिससे इटली में पुनर्जागरण के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ आसानी से बनी।

**प्रश्न 9. इटली की वास्तुकला की विशिष्ट विशेषताओं का वर्णन कीजिए।**

**उत्तर-** पन्द्रहवीं शताब्दी में रोम नगर को अत्यन्त भव्य रूप से बनाया गया। जहाँ अनेक भव्य भवनों व इमारतों का निर्माण किया गया। इटली की वास्तुकला के प्रारूप हमें गिरिजा घरों, राजमहलों और किलों के रूप में दिखाई देते हैं। इटली की वास्तुकला की शैली को शास्त्रीय शैली कहा जाता था। शास्त्रीय वास्तुकारों ने इमारतों को चित्रों, मूर्तियों और विभिन्न प्रकार की आकृतियों से सुसज्जित किया। जबकि इस्लामी वास्तुकला ने इमारतों, भवनों व मस्जिदों की सजावट के लिए ज्यामितीय नक्शों और पत्थर में पच्चीकारी के काम का सहारा लिया। इटली की वास्तुकला की विशिष्टता के रूप में हमें भव्य गोलाकार गुंबद, भवनों की भीतरी सजावट, गोल मेहराबदार दरवाजे आदि दिखाई देते हैं। हालांकि इस्लामी वास्तुकला इस काल में अपनी चरम सीमा पर थी। विशाल भवनों में बल्ब के आकार जैसे गुंबद, छोटी मीनारें, घोड़े के खुरों के आकार के मेहराब और मरोड़दार (घुमावदार) खंभे आश्चर्यचकित कर देने वाले हैं। ऊँची मीनारों और खुले आँगनों का प्रयोग हमें इस्लामी वास्तुकला के भवनों में नजर आता है। उपरोक्त तुलना के आधार पर हम कह सकते हैं कि इटली की वस्तुकला और इस्लामी वास्तुकला में हमें कुछ अंतर व कुछ समानताएँ नजर आती हैं।

**प्रश्न 10. ऐसी कौन-कौन सी दशाएँ थीं जिसस इटली में सर्वप्रथम मानवतावादी विचारों का प्रसार करने में सहायक हुई।**

**उत्तर-** यूरोप में विश्वविद्यालय सर्वप्रथम इटली के शहरों में स्थापित हुए। ग्यारहवीं शताब्दी में पादुआ और बोलोना (Bologna) विश्वविद्यालय विधिशास्त्र के अध्ययन केंद्र थे। इसका कारण यह था कि इन नगरों के मुख्य क्रियाकलाप व्यापार वाणिज्य संबंधी थे। इसलिए वकीलों और नोटरी की बहुत अधिक आवश्यकता होती थी। ये लोग नियमों को लिखते थे, व्याख्या करते थे और समझौते तैयार करते थे। इनके बिना बड़े पैमाने पर व्यापार करना संभव नहीं था।

परिणामस्वरूप कानून को रोमन संस्कृति के संदर्भ में पढ़ा जाने लगा फ्रांचेस्को पेटार्क (3041348 ई.) इस परिवर्तन का प्रतिनिधित्व करता है। पेटार्क के लिए पुराकाल एक विशिष्ट सभ्यता थी जिसे प्राचीन यूनानियों और रोमानों के वास्तविक शब्दों के माध्यम से ही अच्छी तरह समझा जा सकता था। अत: उसने इस बात पर बल दिया कि इन प्राचीन लेखकों की रचनाओं का बारीकी से अध्ययन किया जाना चाहिए।

नया शिक्षा कार्यक्रम इस बात पर आधारित था कि अभी बहुत कुछ जानना बाकी है। यह सब हम केवल धार्मिक शिक्षा से नहीं सीख सकते। इस नयी संस्कृति को उन्नीसवीं शताब्दी के इतिहासकारों ने 'मानवतावाद' का नाम दिया। पंद्रहवीं शताब्दी के आरंभ में मानवतावादी शब्द उन अध्यापकों के लिए प्रयुक्त होता था जो व्याकरण, अलंकार शास्त्र, कविता, इतिहास, नीति दर्शन आदि विषय पढ़ाते थे। मानवतावाद को अंग्रेजी में 'यूमेनिटिज्म' कहते हैं 'ह्यूमेनिटिज' शब्द लातीनी शब्द 'ह्यूमैनिटास' से बना है। कई शताब्दियों पहले रोम के वकील एवं निबंधकार सिसरो (Cicero, 106-43 ई. पू.) ने इसे 'संस्कृति' के अर्थ में लिया था। इस प्रकार मानवता पद को 'मानवतावादी संस्कृति' कहा गया।

इन क्रांतिकारी विचारों ने अनेक विश्वविद्यालयों का ध्यान आकर्षित किया। इनमें एक नव स्थापित विश्वविद्यालय फ्लोरेंस भी था जो पेट्रार्क का स्थायी नगर-निवास था। इस नगर ने तेरहवीं शताब्दी के अंत तक व्यापार या शिक्षा के क्षेत्र में कोई विशेष उन्नति नहीं की थी, परंतु पंद्रहवीं शताब्दी में सब कुछ बदल गया।

किसी भी नगर की पहचान उसके महान् नागरिकों तथा उसकी संपन्नता से बनती है। फ्लोरेंस की प्रसिद्धि में दो लोगों का बड़ा हाथ था। ये व्यक्ति थे-दाँते अलिगहियरी (Dante Alighieri) तथा कालकार जोटो (Giotto)। दाँते ने धार्मिक विषयों पर लिखा और जोटो ने जीते जागते रूपचित्र (Portrait) बनाए। उनके द्वारा बनाए रूपचित्र काफी सजीव थे। इसके बाद फ्लोरेंस कलात्मक कृतियों का सृजन केंद्र बन गया और यह इटली के सबसे बौद्धिक नगर के रूप में जाना जाने लगा। रिसा व्यक्ति शब्द का प्रयोग, प्राय: उस मनुष्य के लिए किया जाता है जिसकी अनेक रुचियाँ हों और वह अनेक कलाओं में कुशल हो। पुनर्जागरण काल में अनेक महान् लोग हुए जो अनेक रुचियाँ रखते थे और कई कलाओं में कुशल थे। उदाहरण के लिए एक ही व्यक्ति विद्वान, कूटनीतिज्ञ, धर्मशास्त्र और कलाकार हो सकता था।

**प्रश्न 11. पुनर्जागरण काल की पाँच विशेषताओं को लिखिए।**

**उत्तर-** पुनर्जागरण की प्रमुख विशेषताएँ निम्नांकित थीं-

**1. स्वतन्त्र चिन्तन को प्रोत्साहन-** पुनर्जागरण ने स्वतन्त्र चिन्तन की विचारधारा को प्रोत्साहन प्रदान किया। मध्यकाल में व्यक्ति के स्वतंत्र चिन्तन एवं विचारों पर धर्म का कठोर

@amarwah450

प्रतिबन्ध लगा हुआ था, परन्तु पुनर्जागरण के कारण व्यक्ति ने स्वतन्त्र रूप से चिन्तन करना प्रारम्भ कर दिया। पुनर्जागरण के कारण व्यक्ति परम्परागत विचारधाराओं को स्वतन्त्र रूप से तर्क की कसौटी पर कसने लगा था। व्यक्ति वैज्ञानिक ढंग से किसी बात की व्याख्या करने के उपरान्त ही उसे स्वीकार करने लगा था।

**2. स्वतन्त्र रूप से व्यक्तित्व का विकास–** पुनर्जागरण ने व्यक्ति को अन्ध-विश्वासों, प्राचीन परम्पराओं एवं धार्मिक बन्धनों से छुटकारा दिलवाया ताकि वह स्वतन्त्र रूप से अपने व्यक्तित्व का विकास कर सके।

**3. मानववाद का विकास –** पुनर्जागरण ने मानववादी विचारधारा को भी प्रसारित किया। मध्यकाल में चर्च इस तथ्य पर विशेष जोर दे रहा था कि इस संसार में जन्म लेना ही घोर पाप है, अतः व्यक्ति को इस जीवन का आनन्द लेने के स्थान पर परलोक को सुधारना चाहिए। इसके लिए यह आवश्यक है कि वह व्यक्ति तपस्या तथा निवृत्ति मार्ग द्वारा मुक्ति प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करें। इसके विपरीत, पुनर्जागरण ने व्यक्ति को इसी जीवन में भरपूर आनन्द उठाने के लिए प्रेरित किया और मानव जीवन को सार्थक बनाने का सन्देश दिया। पुनर्जागरण ने व्यक्ति को धर्म और मोक्ष के स्थान पर समस्त मानव समाज के उत्थान के लिए प्रेरित किया।

**4. वैज्ञानिक विचारधारा का विकास–** पुनर्जागरण के परिणामस्वरूप वैज्ञानिक विचारधारा का विकास हुआ। पुनर्जागरण के कारण व्यक्ति ने प्रत्येक विषय का निरीक्षण, अन्वेषण एवं जाँच करना प्रारम्भ कर दिया। इस प्रकार वैज्ञानिक विचारधारा ने मध्यकाल में व्याप्त अन्धविश्वासों और कुरीतियों को अस्वीकार कर दिया।

**5. देशी भाषाओं का विकास–** पुनर्जागरण ने देशी भाषाओं के विकास में अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यूरोप में अभी तक केवल यूनानी और लैटिन भाषाओं में लिखे गये ग्रन्थों को ही महत्वपूर्ण माना जाता था। लेकिन पुनर्जागरण के कारण यूरोपीय विद्वानों ने जनसाधारण की बोलचाल की भाषाओं में पुस्तकों की रचना की ताकि जनसाधारण उनका अध्ययन कर अपने व्यक्तित्व का विकास कर सकें। इस प्रकार पुनर्जागरण ने जनसाधारण की बोलचाल की भाषा को महत्व प्रदान कर देशी भाषाओं का विकास किया।

**प्रश्न 12. यूरोपीयन समाज ने मंगोलों और चीनियों से क्या सीखा?**

**उत्तर–** इस्लाम के विस्तार और मंगोलों की विजयों ने एशिया एवं उत्तरी अफ्रीका को यूरोप के साथ राजनीतिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि व्यापार और कार्य कुशलता के ज्ञान को सीखने के लिए आपस में जोड़ दिया। यूरोपियों ने न केवल यूनानियों और रोमवासियों से सीखा बल्कि भारत, अरब, ईरान, मध्य एशिया और चीन से भी ज्ञान प्राप्त किया। बहुत लंबे समय तक इन ऋणों को स्वीकार नहीं किया गया, क्योंकि जब इस काल का इतिहास लिखने की प्रक्रिया का प्रारंभ हुआ तब इतिहासकारों ने इसके यूरोप- केंद्रित दृष्टिकोण को सामने रखा।

**प्रश्न 13. यूरोपियन मध्यकालीन समाज में महिलाओं की स्थिति पर प्रकाश डालिए।**

**उत्तर–** पुनर्जागरण काल में यूरोप में सभी महिलाओं की स्थिति एक समान नहीं थी।

सामान्य रूप से नागरिकता के नए आदर्श से महिलाओं को दूर रखा गया था। सार्वजनिक जीवन में अभिजात एवं संपन्न परिवार के पुरुषों का प्रभुत्व था। घर परिवार के मामले में भी पुरुष ही निर्णय लेते थे। उस समय लोग केवल अपने लड़कों को ही शिक्षा देते थे ताकि उनके बाद वे उनके पारिवारिक व्यवसाय या जीवन की आम जिम्मेदारियों को उठा सकें। कभी-कभी वे अपने छोटे लड़कों को धार्मिक कार्य के लिए चर्च को सौंप देते थे। पुरुष दहेज में मिलने वाला धन अपने कारोबार में लगा देते थे। फिर भी महिलाओं को यह अधिकार नहीं था कि वे अपने पति को कारोबार चलाने के बारे में कोई राय दें। दो परिवार में विवाह संबंध प्रायः कारोबारी मैत्री को सुदृढ़ करने के लिए स्थापित किए जाते थे। यदि पर्याप्त दहेज का प्रबंध नहीं हो पाता था तो विवाहित लड़कियों को ईसाई मठों में भिक्षुणी (Nun) का जीवन बिताने के लिए भेज दिया जाता था। इस प्रकार सार्वजनिक जीवन में महिलाओं की भागीदारी बहुत ही सीमित थी। इनकी भूमिका घर-परिवार को चलाने तक ही सीमित थी। व्यापारी परिवार में महिलाओं की स्थिति कुछ भिन्न थी। दुकानदारों की पत्नियां दुकान को चलाने में प्रायः अपने पति की सहायता करती थीं। व्यापारी और साहूकार परिवारों की पत्नियां उस समय परिवार के कारोबार को संभालती थीं जब उनके पति लंबे समय तक व्यापार के लिए बहुत दूर चले जाते थे। अभिजात संपन्न परिवारों के विपरीत, व्यापारी परिवारों में यदि किसी व्यापारी की कम आयु में मृत्यु हो जाती थी तो उसकी पत्नी को सार्वजनिक जीवन में बड़ी भूमिका निभानी पड़ती थी। रचनात्मक प्रवृत्ति की कुछ महिलाएँ बौद्धिक रूप से बहुत ही रचनात्मक थीं। वे मानवतावादी शिक्षा के महत्त्व के बारे में संवेदनशील थीं।

**वेनिस निवासी कसांद्रा फेदेले** (Cassandra Fedele, 1465-1558 ई.) ने लिखा, "यद्यपि महिलाओं को शिक्षा न तो कोई

@amarwah450

पुरस्कार देती है और न ही किसी सम्मान का आश्वासन भी। प्रत्येक महिला को हर प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने की इच्छा रखनी चाहिए और उसे ग्रहण करना चाहिए।' वह उस समय की उन गिनी-चुनी महिलाओं में से एक थी जिन्होंने इस विचारधारा को चुनौती दी कि किसी महिला में एक मानवतावादी विद्वान के गुण नहीं हो सकते। फेदेले का नाम यूनानी और लातीनी भाषा के विद्वानों के रूप में विख्यात था। उसे पादुआ विश्वविद्यालय में भाषण देने के लिए आमंत्रित किया गया था। फेदेले की रचनाओं से यह बात सामने आती है कि इस काल में सभी लोग शिक्षा को बहुत महत्त्व देते थे। वे वेनिस की उन लेखिकाओं में से एक थीं जिन्होंने गणतंत्र की आलोचना स्वतंत्रता की बहुत ही सीमित परिभाषा निर्धारित करने के लिए की। इस काल की एक अन्य प्रतिभाशाली महिला मंटुआ की मार्चिसा ईसाबेला दि इस्ते (Isabella d'Este 1474.1539 ई.) थी। उसने अपने पति की अनुपस्थिति में अपने राज्य पर शासन किया। यद्यपि मंटुआ एक छोटा राज्य था तथापि उसका राजदरबार अपनी बौद्धिक प्रतिभा के लिए विख्यात था। महिलाओं की रचनाओं से इस बात का पता चलता है कि महिलाओं को पुरुष प्रधान समाज में अपनी पहचान बनाने के लिए अधिक-से-अधिक आर्थिक स्वतंत्रता, संपत्ति और शिक्षा मिलनी चाहिए।

# अध्याय-10 मूल निवासियों का विस्थापन

## वस्तुनिष्ठ प्रश्न

**प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए -**

1. आयरलैंड ..... का उपनिवेश था।
(अ) अमेरिका (ब) आस्ट्रेलिया
(स) अफ्रीका (द) इंग्लैंड

2. आस्ट्रेलिया, इंग्लैंड, न्यूजीलैंड, आयरलैंड एवं अमरीकी उपनिवेशों की राजभाषा ..... थी।
(अ) अंग्रेजी (ब) डच
(स) फ्रेंच (द) फ्रांसीसी

3. दक्षिण अफ्रीका को छोड़कर शेष पूरे अफ्रीका में यूरोपीय लोग सर्वत्र ..... ही व्यापार करते थे।
(अ) बन्दरगाहों पर (ब) समुद्र तटों पर
(स) धरातल पर (द) नहरों द्वारा

4. कनाड़ा (कनाटा) शब्द का वास्तविक अर्थ है-
(अ) शहर (ब) गांव
(स) कस्बा (द) नगर

5. उत्तरी अमेरिका में मिलने वाली सबसे पुरानी मानव कृति है-
(अ) एक तीर की नोंक (ब) धनुष बाण
(स) झुका हुआ मानव (द) मानव कृति

6. मिसीसिपी और ओहियो पर्वतों की ..... है।
(अ) दरारें (ब) घाटियां
(स) पर्वत शृंखला (द) नदियां

7. आजकल कनाडा में ..... और फल बड़े पैमाने पर पैदा किये जाते हैं।
(अ) गेहूं-चावल (ब) गेहूं-दालें
(स) गेहूं-मकई (द) गेहूं-सरसों

8. यूरोपीय लोगों द्वारा बनाई गई बस्तियों को क्या कहा जाता था?
(अ) द्वीप (ब) स्टेट
(स) कॉलोनी (उपनिवेश) (द) शहर

9. 'नेटिव' शब्द का क्या आशय है?
(अ) मूल बाशिंदा (ब) अप्रवासी
(स) स्थानीय निवासी (द) विदेशी

10. 'इकोटा' का वास्तविक अर्थ क्या है?
(अ) कार (ब) हवाई जहाज
(स) जीप (द) चाल-कटाई

उत्तर- 1 (द), 2 (अ), 3 (ब), 4 (ब), 5 (अ), 6 (द), 7 (स), 8 (स), 9 (अ), 10 (ब)।

**प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-**

(1) 'नेटिव' शब्द का मतलब ..... से है।
(2) 'वाइसन' शब्द का हिन्दी अर्थ ..... से सम्बन्धित है।
(3) 'होपी' अब कैलीफोर्निया के निकट रहने वाले ..... है।
(4) ..... में फ्रांसीसियों ने 'क्यू बेक' उपनिवेश की खोज की।
(5) 1607 में ब्रिटिश लोगों ने ..... उपनिवेश की खोज की।
(6) कैनबरा ..... की राजधानी है।
(7) यूरोपीय लोगों ने मूल निवासियों से ..... की आदत ग्रहण की।
(8) 19वीं शताब्दी से अमेरिका महाद्वीप ..... से अटलांटिक महासागर तक फैला है।
(9) 1607 इ. में ब्रिटिश लोगों ने ..... उपनिवेश की खोज की थी।
(10) गेहुँए वर्ण के लोग, जिनके निवास स्थान को कोलम्बस ने गलती से इंडिया समझा लिया था। उन्हें ..... कहते थे।

उत्तर- (1) मूलबाशिंदा, (2) जंगली भैंसों, (3) आदिवासी, (4) 1608, (5) वर्जीनिया, (6) ऑस्ट्रेलिया, (8) प्रशांत महासागर, (9) वर्जिनिया, (10) रेड इंडियन।

@amalwah450

प्रश्न 3. सही जोड़ियाँ बनाइए-

| कॉलम-(अ) | कॉलम-(ब) |
|---|---|
| (1) रेड इंडियन | (अ) क्यूबेक के मूल निवासियों के साथ फ्रांसीसियों का समझौता। |
| (2) 1701 | (ब) क्यूबेक एक्ट |
| (3) 1763 | (स) कनाडा संवैधानिक एक्ट |
| (4) 1774 | (द) क्यूबेक पर ब्रिटिश की विजय |
| (5) 1791 | (य) ब्रिटेन यू.एस.ए. को एक स्वतंत्र देश के रूप में मान्यता दी |
| (6) 1781 | (र) गेहुँए वर्ण के लोग |
| (7) मोहाक | (ल) हवाई जहाज |
| (8) पोटिआक | (व) जीप |
| (9) चिरोकी | (ष) कार |
| (10) डकोटा | (श) बाल कटाई |

उत्तर- 1 (र), 2 (अ), 3 (द), 4 (ब), 5 (स), 6 (य), 7 (श), 8 (ष), 9 (व), 10 (ल)।

प्रश्न 4. शब्द या वाक्य में उत्तर दीजिए-

(1) पथरीले पहाड़ों की शृंखला (उत्तरी अमरीका) के पश्चिम में कौन सी मरुभूमि है?

(2) उत्तरी अमेरिका का महाद्वीप उत्तर ध्रुवीय वृत्त से लेकर कर्क रेखा तक और प्रशांत महासागर से लेकर कौनसे महासागर तक फैला हुआ है।

(3) कनाडा (कनाटा-गांव) शब्द की खोज किसने की?

(4) आयरलैंड किस देश का उपनिवेश था?

(5) अठारहवीं सदी में अमेरिका के निवासियों को कैसा माना जाता था?

(6) पोलैण्ड से आए लोगों को किस तरह के चारागाहों में काम करना अच्छा लगता था?

(7) मूल निवासियों का एक घर 1862 में कहां रखा गया था?

(8) शुरुआती मनुष्य या आदिमानव को क्या कहते हैं?

(9) आस्ट्रेलिया तीन महासागरों से घिरा है। उनके नाम लिखो?

(10) आस्ट्रेलिया की राजधानी का नाम बताओ?

उत्तर- (1) अरिजोना और नेवाडा (2) अटलांटिक महासागर (3) जाक कार्टियर (4) इंग्लैण्ड का (5) वे कहीं और से आए हैं और एक अलग नस्ल के है (7) प्योमिंग के संग्रहालय में (8) दोनों है बिलिस या आसान आदमी (9) हिन्द महासागर, प्रशांत महासागर, दक्षिण महासागर (10) कैनबरा।

प्रश्न. 5 सत्य और असत्य लिखिए-

(1) 'स्टेपीज' शब्द का अर्थ (घास के मैदान) है।

(2) 1867 में यूरोप ने महासंघ की स्थापना की।

(3) 1763 में ब्रिटिश लोगों ने फ्रांस के साथ हुई लड़ाई में फ्रांस देश को जीता?

(4) 'जार्जिया' संयुक्त राज्य अमेरिका का प्रमुख राज्य है

(5) चिरोकी कबीला दक्षिण अमेरिकी देश से सम्बन्धित है

(6) 1840 में संयुक्त राज्य अमेरिका के कैलीफोर्निया में तांबा धातु मिली

(7) प्रेयरी चारागाह उत्तरी अमेरिका में स्थित था।

(8) होपी एक आदिवासी समुदाय है?

(9) कैनबरा को 1911 में आस्ट्रेलिया की राजधानी बनाया गया था

(10) 'ज्यूआडिथ राइट' एक आस्ट्रेलियाई लेखिका थी।

उत्तर- (1) सत्य, (2) सत्य, (3) सत्य, (4) सत्य, (5) सत्य, (6) असत्य, (7) सत्य, (8) सत्य, (9) सत्य, (10) सत्य।

## अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. गोल्डारश देश में क्या तात्पर्य है?

उत्तर- औद्योगिक विकास व गोल्डारश- आर्थिक विकास में योगदान दिया जैसे (i) रेलवे निर्माण, (ii) औद्योगिक विकास, (iii) कृषि विस्तार, (iv) महाद्वीपीय विस्तार। गोल्डारश के नाम से ऐसी उथल-पुथल मची कि कई यूरोपीय अपना माल संवारने की होड़ में लग गये, सैकड़ों की संख्या में ये यूरोपीय अमेरिका पहुँचने लगे थे। सन् 1840 में संयुक्त राज्य अमेरिका के केलीफोर्निया में सोना मिलने की खबर फैल गई। धीरे-धीरे यूरोपीय सोना के लालच में पहुँचने लगे। गोल्ड रश के फलस्वरूप औद्योगिक विकास में सफलता मिली। सारे महाद्वीप में रेल्वे लाइने बिछायी गई। संयुक्त राज्य अमेरिका में रेलवे का काम 1870 में शुरू हुआ।

1885 ई में कनाडा में भी रेलवे कार्य प्रारम्भ हो गए। रेलवे के निर्माण से औद्योगिक विकास में तीव्रता आयी। संयुक्त राज्य अमेरिका के पहले करोड़पति उद्योगपति एंड्रिड कार्नेगी बने। वह स्कॉटलैंड से आया गरीब था। उत्तरी अमेरिका में जो औद्योगिक विकास हुआ, उससे परिवहन में तीव्रता आयी, रेलवे के सामान तैयार करने के कारखाने खोले गए। कृषि कार्य को सफल बनाने हेतु मशीनों व यंत्रों का निर्माण हुआ। संयुक्त राज्य अमेरिका व कनाडा औद्योगिक विकास की ओर बढ़ने लगे।

कृषि का तेजी से विकास हुआ, कृषि भूमि के लिये बड़े-बड़े स्थानों को साफ किया गया। 1890 ई. में जंगली भैंसों का सफाया कर दिया गया। शिकारी की प्रवृत्ति मूल निवासियों की दिनचर्या हुआ करती थी वह भी समाप्त प्रायः हो गयी। 1892 ई. में संयुक्त राज्य अमेरिका महाद्वीप विस्तार कर रहा था। प्रशान्त

@amanwan450

व अटलांटिक महासागरों के बीच के क्षेत्र को गावों से भरा गया। यूरोपीय अन्वेषकों को अब पश्चिम की ओर खोजने वाला 'फ्रंटियर' नहीं बचा था। संयुक्त राज्य अमेरिका ने फिलीपीन्स में भी बस्तियाँ बसा ली थी।

**प्रश्न 2. 'डिक्लेरेशन ऑफ इंडियन राइट्स किस सन् में पारित हुआ?**

उत्तर- यह विधेयक मूलतः कन्वेन्शन पार्लियामेंट (अनधिकृत आहूत संसद) द्वारा राजा विलियम और रानी मेरी द्वितीय के समक्ष, फरवरी 1689 को पेश किए गए डिक्लेरेशन ऑफ राइट्स (अधिकार का घोषणा पत्र) का ही एक सांविधिक रूप से पुनः कथित अवतार था।

**प्रश्न 3. 'एबॉरिजिनीज' शब्द का वास्तविक अर्थ समझाइए।**

उत्तर- उत्तरी और दक्षिण अमेरिका की तरह ही ऑस्ट्रेलिया में भी मानव निवास का इतिहास लंबा है। शुरुआती मनुष्य या आदिमानव जिन्हें 'एबॉरिजिनीज' कहते हैं। ऑस्ट्रेलिया में 40,000 साल पहले आना शुरू हुए।

**प्रश्न 4. उत्तरी अमेरिका के लोगों का मुख्य भोजन क्या था?**

उत्तर- उत्तरी अमेरिका के लोगों का मुख्य भोजन थे अनाज, माँस व मछली खाते थे। सब्जियाँ तथा मक्का उगाते थे, वे अक्सर, माँस की खोज में लम्बी यात्राओं पर जाया करते थे। मुख्य रूप से उन्हें "बाइसन" नामक जंगली भैंसों की तलाश रहती थी, जो घास के मैदानों में घूमते थे।

**प्रश्न 5. आस्ट्रेलिया की खोज कब और किसने की?**

उत्तर- विलेम जैन्सज़ून को सन् 1606 में ऑस्ट्रेलिया की पहली अधिकृत यूरोपीय खोज का श्रेय जाता है।

**प्रश्न 6. कौन-कौन से छः राज्यों को लेकर आस्ट्रेलियाई संघ का निर्माण हुआ?**

उत्तर- न्यू साउथ वेल्स, क्वीन्सलैंड, तस्मानिया, विक्टोरिया, पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण ऑस्ट्रेलिया इन छः राज्यों को लेकर ऑस्ट्रेलिया संघ का निर्माण हुआ था।

**प्रश्न 7. 'टेरा-न्यू लियस' का वास्तविक अर्थ समझाइए।**

उत्तर- 'टेरा - न्यु लियस- यह एक लैटिन अभिव्यक्ति है, जिसका अर्थ है "किसी की भूमि नहीं"। यह एक सिद्धांत था जिसे कभी-कभी अंतरराष्ट्रीय कानून में इस दावे को सही ठहराने के लिए इस्तेमाल किया जाता था कि किसी राज्य के कब्जे से क्षेत्र का अधिग्रहण किया जा सकता है, वर्तमान में टेरा नुलियस होने का दावा करने वाले तीन क्षेत्र जिनमें से दो लिया विवाद के कारण है। संप्रभु राज्यों के बीच, और भूमि पर दावा करने वाले किसी भी संप्रभु राज्य के कारण नहीं।

**प्रश्न 8. दि ग्रेट आस्ट्रेलियन साइलेंस' से आपका क्या आशय है?**

उत्तर- 1968 में सम्मानित ऑस्ट्रेलिया मानवविज्ञानी विलस्टे ने 'दि ग्रेट ऑस्ट्रेलियन साइलेंस' शब्द को भूलने की पंथा व वर्णन करने के लिए गढ़ा था, जिसने ऑस्ट्रेलियाई इतिहास लेखन में आदिवासी लोगों को लगभग अनदेखा कर दिया था

**प्रश्न 9. आस्ट्रेलियाई लेखिका 'ज्युदिथ राइट' मूल निवासियों के बारे में 'कविताएँ' क्यों लिखी?**

उत्तर- ऑस्ट्रेलियाई लेखिका ज्युडिथ राइट (1915-2000) ऑस्ट्रेलियाई मूल निवासियों के अधिकारों तथा गोरे ऑ मूलनिवासियों को अलग - 2 रखने से होने वाले . क नुकसानों को लेकर अत्यंत प्रभावशाली कविता लिखी है।

**प्रश्न 10. 'गोरे आस्ट्रेलिया' नीति का खात्मा कब हुआ और कौन से आप्रवासियों को प्रवेश की अनुमति मिली**

उत्तर- गोरे ऑस्ट्रेलिया नीति का खात्मा 1974 में हुआ तथ एशियाई आप्रवासियों को प्रवेश की इजाजत या अनुमति मिल

**प्रश्न 11. रेड इंडियन्स से क्या आशय है?**

उत्तर- गेहुँ वर्ण के वो लोग जिनके निवास स्थान को कोलंबस ने गलती से इंडिया समझ लिया था। ये उत्तर और दक्षिण अमेरिका के मूल निवासी है। ये मंगोलायड प्रजाति की एक शाखा माने जाते है। पुरातत्वविदों का मानना है कि वे इस भूखंड पर प्रायः 20,000 से 15,000 वर्ष आए थे।

**प्रश्न 12. मूलनिवासियों द्वारा किए गए विस्थापन के कोई दो कारण लिखिए।**

उत्तर- मूलनिवासियों द्वारा किए गए विस्थापन के कारण:
(1) मूल निवासियों की स्वतंत्रता का हनन तथा उन्हें दास बनाना। (2) मूल निवासियों को अपने मानव अधिकारों से वंचित रखना। (3) उनकी जमीनें तथा रोजीरोटी के साधन छीन लेना। (4) उन्हें घर से बेघर करना। (5) उनके प्रति अपनाए गए प्रशासन की नीति का शोषण।

**प्रश्न 13. चिरोकी लोगों को कौन-सी परेशानियों का सामना करना पड़ता था?**

उत्तर- संयुक्त राज्य अमेरिका के जार्जिया में चिरोकी कबीला था, ये कबीलेवासी अंग्रेजी सीखना चाहते थे साथ ही अमेरिकी जीवन शैली को भी ग्रहण करने में आगे थे सरकारी अधिकारियों का कहना था कि मूल निवासियों के चिरोकी कबीले वालों को राज्य का संपूर्ण कानून मानना होगा लेकिन उन्हें किसी भी प्रकार का नागरिक अधिकार प्राप्त नहीं होगा। उन्हें नागरिक अधिकारों से वंचित कर दिया गया था।

@amarwah450

संयुक्त राज्य अमेरिका के न्यायाधीश जॉन मार्शल ने 1832 ई. में चिरोकी कबीलों को लेकर एक महत्वपूर्ण फैसला सुनाया "यह कबीला एक विशिष्ट समुदाय है व इसके स्वत्वाधिकार वाले इलाके में जार्जिया का कानून लागू नहीं होता और वे कुछ विषयों में प्रभुता सम्पन्न है।'

संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति एंड्रिड जैकसन, ने मुख्य न्यायाधीश के फैसले को उचित नहीं माना। अमेरिकी सेना को उन्होंने चिरोकियों को खदेड़ने का आदेश दिया। चिरोकियों को अमेरिकी मरूभूमि तक खदेड़ा गया तथा इसमें 15,000 चिरोकी ने अपनी जमीन छोड़ दी। एक चौथाई लोग मौत के शिकार हुए।

**प्रश्न 14. 'नेटिव' शब्द का हिन्दी अर्थ बताइए।**

**उत्तर-** नेटिव शब्द का हिन्दी अर्थ 'निवासी' है।

**प्रश्न 15. दास प्रथा किस देश की समस्या थी?**

**उत्तर-** दास प्रथा संयुक्त राज्य अमेरिका की समस्या थी।

**प्रश्न 16. 'उपनिवेश' की परिभाषा लिखिए।**

**उत्तर-** "किसी एक भौगोलिक क्षेत्र के लोगों द्वारा किसी दूसरे भौगोलिक क्षेत्र में उपनिवेश (कॉलोनी) स्थापित करना और यह मान्यता रखना की यह एक अच्छा काम है उपनिवेश या उपनिवेशवाद कहलाता है।"

## विश्लेषणात्मक प्रश्नोत्तर

**प्रश्न 1. 'दि प्रॉब्लम ऑफ इंडियन एडमिनिस्ट्रेशन' से क्या आशय है? स्पष्ट करो।**

**उत्तर-** 1920 के दशक तक संयुक्त राज्य अमरीका और कनाडा के मूल निवासियों के लिए कुछ भी बेहतर होना शुरू नहीं हुआ। संयुक्त राज्य अमरीका की समस्त जनता को प्रभावित करने वाली बड़ी आर्थिक मंदी से कुछ साल पहले, 1928 में समाजवैज्ञानिक लेवाइस मेरिअम के निर्देशन में संपन्न हुआ एक सर्वेक्षण प्रकाशित हुआ – दि प्रॉब्लम ऑफ इंडियन एडमिनिस्ट्रेशन – जिसमें रिज़र्वेशन्स में रह रहे मूल निवासियों की स्वास्थ्य एवं शिक्षा सुविधाओं की दरिद्रता का बड़ा ही दारुण चित्र प्रस्तुत किया गया था।

**प्रश्न 2. 'आस्ट्रेलिया' की भौगोलिक स्थिति का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।**

**उत्तर-** ऑस्ट्रेलिया से संबंधित महत्त्वपूर्ण भौगोलिक तथ्य ऑस्ट्रेलिया विश्व का सबसे छोटा महाद्वीप है। एबेल तस्मान और कप्तान जेम्स कुक ने इस महाद्वीप की खोज की थी। यह दक्षिणी गोलार्ध में स्थित है। यह हिंद महासागर और प्रशांत महासागर से घिरा हुआ महाद्वीप है जिसमें मुख्य भूमि ऑस्ट्रेलिया, तस्मानिया, न्यू गिनी, सेरम द्वीप, संभवतः तिमोर द्वीप और पड़ोसी द्वीप शामिल हैं।

ऑस्ट्रेलिया से संबंधित महत्वपूर्ण भौगोलिक तथ्य-

(1) ऑस्ट्रेलिया का उत्तरी भाग में इक्वाकटिबंधीय प्रकार की जलवायु पायी जाती है और दक्षिणी भाग समशीतोष्ण प्रकार की जलवायु पायी जाती है।

(2) मकर रेखा इसके मध्य से गुजरती है।

(3) ऑस्ट्रेलिया का दो तिहाई भाग पठार से ढँका हुआ है जिसे 'वेस्टर्न पठार' के नाम से जाना जाता है, जहां वर्षा बहुत कम होती है जिसके कारण रेगिस्तान विकसित हो गए है।

(4) ऑस्ट्रेलिया का पूर्वी भाग केप यॉर्क से तस्मानिया द्वीप तक उच्च भूमि की शृंखला से ढँका हुआ है जिसे 'ग्रेट डिविजनिंग रेंज' के नाम से जाना जाता है।

**प्रश्न 3. 1790 में, सिडनी के इलाके की घटना का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।**

**उत्तर- सिडनी के इलाके का एक वर्णन, 1790**

"ब्रिटिशों की उपस्थिति ने आदिवासियों के उत्पादन को नाटकीय ढंग से अस्त-व्यस्त कर दिया। हजारों भूखे मुखों के आने से जिनके पीछे-पीछे सैकड़ों और आए, स्थानीय खाद्य संसाधनों पर अभूतपूर्व दबाव पड़ा।

तो दावक लोगों ने इन सबके बारे में क्या सोचा होगा? उनके लिए पवित्र स्थानों का इतने बड़े पैमाने पर विनाश और अपनी जमीन के प्रति विचित्र हिंसक बरताव समझ से परे था। ये नवागंतुक बिना वजह पेड़ों को काटते जाते। यह बिना वजह इसलिए जान पड़ता था कि उन्हें न डोंगी बनानी थीं न जंगली शहद इकट्ठा करना था और न ही जानवर पकड़ने थे। पत्थरों को हटाकर उनका चट्टा लगा दिया गया, मिट्टी खोद कर उसे आकार देकर पका दिया गया, जमीन में गड्ढे बना दिए गए, बहुत भारी-भरकम इमारतें तैयार कर दी गईं। पहले-पहल उन्होंने इस सफाई की तुलना किसी पवित्र आनुष्ठानिक भूमि के निर्माण से की होगी... संभवतः उन्होंने सोचा कि एक विशाल कर्मकांडी जलसा होने जा रहा है और यह एक खतरनाक धंधा होगा, जिससे उन्हें पूरी तरह दूर रहना चाहिए। इसमें कोई संदेह नहीं कि इसके बाद दारूक उन बस्तियों से बच कर रहने लगे, और राजकीय अपहरण ही उन्हें वापस लाने का एकमात्र तरीका था।

**प्रश्न 4. आस्ट्रेलियाई मूल निवासियों के अधिकार कौन-कौन से थे और किस आस्ट्रेलियाई लेखिका ने इनके पक्ष में बुलंद आवाज उठाई?**

**उत्तर-** 1973 के दशक से संयुक्त राष्ट्र संघ और अन्य अन्तर्राष्ट्रीय एजेन्सियों की बैठकों में मानवाधिकारों पर बल दिया जाने लगा। इससे ऑस्ट्रेलियाई जनता को यह आभास

@amarwal450

 Students unity

हुआ कि संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा और न्यूजीलैंड के विपरीत ऑस्ट्रेलिया में यूरोपीय लोगों द्वारा किए गए भूमि अधिग्रहण को औपचारिक बनाने के लिए मूल निवासियों के साथ कोई समझौता नहीं किया गया है। सरकार सदा से ऑस्ट्रेलिया को जमीन को टेरा न्यूलियस (terra nullius) कहती आई थी। इसका अर्थ था, "जो किसी की नहीं है।" इसके अतिरिक्त वहाँ यूरोपवासियों द्वारा अपने आदिवासी रिश्तेदारों से जबरदस्ती छीने गए मिश्रित रक्त वाले बच्चों का भी एक लम्बा और यन्त्रणापूर्ण इतिहास था।

**अन्ततः दो महत्त्वपूर्ण निर्णय लिए गए**– इस बात को मान्यता देना कि मूल निवासियों का जमीन के साथ, जोकि उनके लिए पवित्र है, मजबूत ऐतिहासिक सम्बन्ध रहा। अतः इसका आदर किया जाना चाहिए। 'श्वेत' तथा 'अश्वेत' लोगों को अलग-अलग रखने के प्रयास में बच्चों के साथ जो अन्याय हुआ है, उसके लिए सार्वजनिक रूप से माफी माँगी जानी चाहिए।

ज्यूडिथ राइट ऑस्ट्रेलियाई की प्रसिद्ध लेखिका थी उन्होंने अपनी पुस्तक 'दो स्वप्न' में मूल निवासियों के अधिकारों के लिए आवाज उठाई थी।

**प्रश्न 5. सन् 1794 में 'गोरे आस्ट्रेलिया' की नीति का खात्मा, एवं एशियाई आप्रवासियों को प्रवेश की इजाजत पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखो।**

**उत्तर**– ऑस्ट्रेलिया के ज्यादातर शुरुआती आबादकार इंग्लैंड से निर्वासित होकर आए थे और उनके कारावास पूरा होने पर ब्रिटेन वापस न लौटने की शर्त पर उन्हें ऑस्ट्रेलिया में स्वतंत्र जीवन जीने की इजाजत दे दी गई। अपने देश से इतने भिन्न इस इलाके में किसी भी तरह के सहारे के बगैर जीवनयापन करने के लिए उन्होंने खेती के लिए ली गई जमीन से मूल निवासियों को निकाल बाहर करने में कोई झिझक नहीं दिखलाई।

जो एक स्थानीय शब्द कैनबरा (Kamberra) से बना है, जिसका अर्थ है सभास्थल।

कुछ मूल निवासी ऐसे सख्त हालात में खेतों में काम करते थे कि उनका दासप्रथा से अंतर बहुत कम था। बाद में चीनी आप्रवासियों ने सस्ता श्रम मुहैया कराया, जैसा कि कैलिफोर्निया में हुआ था। लेकिन गैर-गोरों पर बढ़ती हुई निर्भरता से कन्नी बदबाहट के चलते दोनों देशों की सरकारों ने चीनी आप्रवासियों को प्रतिबंधित कर दिया। 1974 तक लोगों के मन में यह भय घर कर गया था कि दक्षिण एशिया और दक्षिण-पूर्व एशिया के 'गहरी रंगत वाले' लोग बड़ी तादाद में ऑस्ट्रेलिया आ सकते हैं, और इसीलिए 'गैर-गोरों' को बाहर रखने के लिए सरकार ने एक नीति अपनाई।

1974 से 'बहुसंस्कृतिवाद' ऑस्ट्रेलिया की राजकीय नीति रही है, जिसने मूल निवासियों की संस्कृतियों और यूरोप तथा एशिया के आप्रवासियों की भाँति-भाँति की संस्कृतियों को समान आदर दिया है।

**प्रश्न 6. अमेरिका में 'अफ्रीका मूल' के दास किन-किन अधिकारों से वंचित थे?**

**उत्तर**– अमेरिका में 'अफ्रीका मूल' निम्न अधिकारों से वंचित थे

(1) दासप्रथा विरोधी समूहों के विरोध के चलते दासों के व्यापार पर तो रोक लग गई, लेकिन अफ्रीकी लोग सं.रा.अ. में थे वे और उनके बच्चे दास ही बने रहे।

(2) अफ्रीकी लोगों को दास प्रथा के अंतर्गत स्कूलों तथा ट्रेनों-बसों में उन्हें अलग रखा या बैठाया जाता था।

(3) उन्हें अपनी संस्कृति को पूरा-पूरा निभाने से रोका जाता था।

(4) नागरिकता के लाभों से वंचित रखा जाता था।

(5) व्यक्तिगत स्वतंत्रता से वंचित, बराबर नहीं माना गया (तर्क, 'दासप्रथा उनकी अपनी सामाजिक व्यवस्था का हिस्सा' है, काले लोग निकृष्ट हैं।)

**प्रश्न 7. गोरे अमरीकियों के मन में मूल निवासियों के प्रति किस तरह की सहानुभूति का जागरण हुआ? संक्षेप में लिखो।**

**उत्तर**– गोरे अमरीकियों के मन में उन मूल निवासियों के प्रति सहानुभूति जागी, जिन्हें अपनी संस्कृति को पूरा-पूरा निभाने से रोका जाता था और साथ-ही-साथ नागरिकता के लाभों से भी वंचित रखा जाता था। इसने संयुक्त राज्य अमरीका में एक युगांतरकारी कानून को जन्म दिया— 1934 का इंडियन रीऑर्गनाईजेशन एक्ट जिसके द्वारा रिज़र्वेशन्स में मूल निवासियों को जमीन खरीदने और ऋण लेने का अधिकार हासिल हुआ।

**प्रश्न 8. अपनी जमीन से मूल बाशिंदों को बेदखल क्यों कर दिया गया?**

**उत्तर**– संयुक्त राज्य अमेरिका में यूरोपियों ने अपनी बस्तियों के विस्तार के लिए खरीदी गई जमीन से वहाँ के मूल निवासियों को हटा दिया। उनके साथ अपनी जमीनें बेच देने की संधियाँ की गई और उन्हें जमीन की बहुत कम कीमतें दी गईं। ऐसे उदाहरण भी मिलते हैं कि अमेरिकियों ने धोखे से उनसे अधिक भूमि हथिया ली या फिर पैसा देने के मामले में हेराफेरी की।

**चिरोकियों के प्रति अन्याय**– उच्च अधिकारी भी मूल निवासियों की बेदखली को गलत नहीं मानते थे। जॉर्जिया इसका उदाहरण है। जॉर्जिया संयुक्त राज्य अमेरिका का एक राज्य है। यहाँ के अधिकारियों का तर्क था कि यहाँ के चिरोकी कबीले पर राज्य के कानून तो लागू होते हैं, परन्तु वे नागरिक अधिकारों का उपभोग नहीं कर सकते।

@amarwah450

1832 में संयुक्त राज्य के मुख्य न्यायाधीश, जॉन मार्शल ने एक महत्त्वपूर्ण निर्णय सुनाया। उन्होंने कहा कि चिरोकी कबीला "एक विशिष्ट समुदाय" है और उसके स्वत्वाधिकार वाले क्षेत्र में जॉर्जिया का कानून लागू नहीं होता। वे कुछ मामलों में संप्रभुसत्ता सम्पन्न हैं। परन्तु संयुक्त राज्य के राष्ट्रपति एंड्रिउ जैकसन ने मुख्य न्यायाधीश की इस बात को मानने से इन्कार कर दिया और सेना के बल पर चिरोकियों को अपनी जमीन से मार भगाया। इनकी संख्या लगभग 15000 थी। उनमें से एक चौथाई अपने 'आंसुओं की राह' (Trail of Tears) के सफर में ही मर-खप गए। अर्थात् अपनी जमीन खो देने के दुःख ने ही उनके प्राण ले लिए।

मूल निवासियों की जमीनें प्राप्त करने वाले लोग इस आधार पर अपने को उचित ठहराते थे कि मूल निवासी जमीन का अधिकतम प्रयोग करना नहीं जानते। इसलिए वह उनके पास रहनी ही नहीं चाहिए। वे यह कहकर भी मूल निवासियों की आलोचना करते थे कि वे आलसी हैं। इसलिए वे बाजार के लिए उत्पादन करने में अपने शिल्प कौशल का प्रयोग नहीं करते हैं। अंग्रेजी सीखने और ढंग के कपड़े पहनने में भी उनकी कोई रुचि नहीं है। कुल मिलाकर उनका कहना था कि वे 'मर-खप जाने' के ही अधिकारी हैं। खेती के लिए जमीन प्राप्त करने के लिए प्रेयरीज को साफ किया गया और जंगली भैंसों को मार डाला गया। एक फ्रांसीसी आगंतुक ने लिखा, "आदिम जानवरों के साथ-साथ आदिम मनुष्य भी लुप्त हो जाएगा।"

**मूल निवासियों के रिजर्वेशंज**– इसी बीच मूल निवासियों को पश्चिम की ओर खदेड़ दिया गया था। उन्हें 'स्थायी रूप से अपनी भूमि तो दे दी गई थी, परन्तु उनकी जमीन में सीसा, सोना या तेल जैसे खनिज होने का पता चलने पर उन्हें वहाँ से भी खदेड़ दिया जाता था। प्रायः कई-कई समूहों को मूलतः किसी एक समूह के नियन्त्रण वाली जमीन में ही साझा करने के लिए बाध्य किया जाता था, जिससे उनके बीच झगड़े हो जाते थे।

मूल निवासी छोटे-छोटे प्रदेशों में ही सीमित कर दिए गए थे, जिन्हें 'रिजर्वेशंज' (आरक्षण) कहा जाता था। ये प्रायः ऐसी जमीन होती थी, जिसके साथ उनका पहले से कोई नाता नहीं होता था। ऐसा नहीं है कि उन्होंने अपनी जमीनें बिना किसी संघर्ष के ही छोड़ दी हों। संयुक्त राज्य की सेना को 1865 से 1890 के बीच मूल निवासियों के विद्रोहों की एक लम्बी शृंखला का दमन करना पड़ा था। कनाडा में 1869 से 1885 के बीच मेटिसो (यूरोपीय मूल निवासियों के वंशज) के सशस्त्र विद्रोह हुए थे, परन्तु इन लड़ाइयों के बाद उन्होंने हार मान ली थी।

**प्रश्न 9. 'कोलोरेडो' के एक 'पशुफार्म' का कोई एक चित्र बनाकर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।**

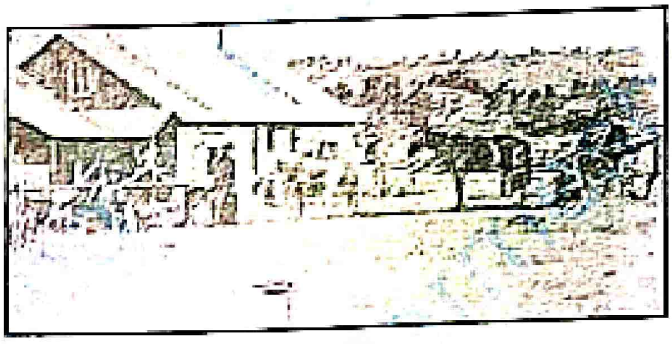

**उत्तर– टिप्पणी–** प्रेयरी में मवेशियों के खेतों का वर्णन निम्नलिखित तरीके से किया जा सकता है:

(ए) ये बड़े, अलग-थलग खेत हैं जिनका उपयोग बीफ मवेशियों और पशुओं के पालन के लिए किया जाता है। वे पश्चिमी और दक्षिणी प्रेयरी में स्थित हैं।

(बी) वे बड़े कारखानों के रूप में व्यावसायिक रूप से कार्य करते हैं।

(सी) पशुपालन में चारा आपूर्ति सहित पशुपालन के सभी पहलू शामिल हैं; इस प्रकार, वे आत्मनिर्भर हैं। रैंच में की जाने वाली विभिन्न गतिविधियों में चारे की खेती, ऑपरेटिंग मशीन, पानी की आपूर्ति और चिकित्सा सुविधाएँ प्रदान करना, बीफ उत्पादन, परिवहन आदि शामिल हैं। घोड़े की पीठ, उन्हें चरागाहों के लिए ले जाना, आदि। जानवरों को उनकी ब्रांडिंग से अच्छी तरह से पहचाना जाता है।

(डी) मोटे पशुओं को मांस पैकिंग केन्द्रों में ले जाया जाता है। इनमें से सबसे बड़ा केंद्र शिकागो में स्थित है। आसान परिवहन के लिए राजमार्गों और रेलवे लाइनों के पास खेत स्थित हैं।

**प्रश्न 10. संयुक्त राज्य अमेरिका में 'दास प्रथा' से क्या आशय है? संक्षिप्त में समझाइए।**

**उत्तर–** अमेरिका के उत्तरी राज्यों में दासों की आर्थिक जीवन में कोई निर्णायक जीवन में कोई निर्णायक भूमिका नहीं थी। अतः उनके लिए दासों का महत्व गौण था दूसरी तरफ अमेरिका के दक्षिणी राज्यों में दास प्रथा जनजीवन में घुल चुकी थी। दक्षिणी राज्यों के मानले में दास प्रथा का मुद्दा सदैव संवेदनशील बना रहा। जब कभी अन्य राज्यों में दास प्रथा पर लगे प्रतिबंध को इन दक्षिणी, राज्यों में लागू करने की बात उठी तो इन राज्यों ने इसे अपनी प्रभुसत्ता पर आक्रमण माना। वस्तुतः उत्तरी राज्यों में दासता को मानवता पर कलंक के रूप में देखा गया और इसे समाप्त करने की मांग जोर-शोर उठाई गई। समाचार-पत्रों में माध्यम से इस दास विरोधी भावना को

@anarwah450

उभारा गया। दूसरी तरफ दक्षिणी राज्यों के लिए दासों को मुद्दा लाभप्रदता से जुड़ा हुआ था। उनका तर्क था कि दास प्रथा में श्रमिक संगठनों, हड़तालों आदि का भय नहीं था तथा उत्तरी राज्यों के मजदूरों की तुलना में वे दासों को अधिक सुविधा प्रदान करते हैं। इस मनोवृत्ति एवं तर्कों के आधार पर दक्षिणी राज्यों ने दास प्रथा को आवश्यक बताया।

**प्रश्न 11. अमेरिका के मूल निवासी वनों की सुरक्षा किस प्रकार करते थे। संक्षेप में लिखिए।**

**उत्तर-** उत्तरी अमेरिका के मूल निवासियों तथा यूरोपीय लोगों का वहाँ के वनों के प्रति अलग-अलग दृष्टिकोण था। मूल निवासियों को वन ऐसे मार्ग जुटाते थे, जो यूरोपीय लोगों की पहुँच से बाहर थे। दूसरी ओर यूरोपीय लोगों की कल्पना में जंगलों के स्थान पर मक्का के खेत उभरते थे।

अमेरिका के तीसरे राष्ट्रपति जैफर्सन का सपना एक ऐसे देश का था, जो छोटे-छोटे खेतों वाले यूरोपीय लोगों से आबाद था। मूल निवासी उसके इस दृष्टिकोण को समझने में असमर्थ थे।

**प्रश्न 12. मूलनिवासी (जो अमरीकन थे) उनकी चिंता के कोई तीन कारण लिखिए।**

**उत्तर-** मूलनिवासियों की चिंता के कारण- (1) उत्तरी अमेरिका के मूल निवासी यूरोपीय लोगों के साथ जिन चीजों का आदान-प्रदान करते थे, वे उन्हें मैत्री में मिले उपहार मानते थे। (2) अमीरी का सपना देखने वाले यूरोपीय लोगों के लिए मछली और रोएँदार खाल मुनाफा कमाने के लिए बेची जाने वाली वस्तुएँ थीं? (3) इन बेची जाने वाली वस्तुओं के मूल्य इनकी पूर्ति के आधार पर हर साल बदलते रहते थे, मूल निवासी इस बात को समझ नहीं सकते थे, क्योंकि उन्हें सुदूर यूरोप में स्थित 'बाजार; का जरा भी बोध नहीं था।

**प्रश्न 13. संयुक्त राज्य अमेरिका के मूल निवासियों का रिजर्वेशन शब्द से क्या सम्बन्ध है?**

**उत्तर-** उत्तरी अमेरिका के मूल निवासियों को छोटे-छोटे प्रदेशों में सीमित कर दिया गया था। यह प्रायः ऐसी जमीन होती थी, जिनके साथ उनका पहले से कोई नाता नहीं होता था। इन्हीं जमीनों को रिजर्वेशन अथवा आरक्षण कहा जाता था।

**प्रश्न 14. मूल निवासियों का एक घर, 1862 में पुरातत्त्वविदों द्वारा कहां स्थापित किया गया था?**

**उत्तर-** मूल निवासियों का एक घर, 1862 में पुरातत्त्वविदों ने पहाड़ों के बीच से ले जाकर व्योमिंग के एक संग्रहालय में रखा।

**प्रश्न 15. दक्षिणी और उत्तरी अमेरिका के मूल निवासियों से सम्बन्धित किसी भी एक बिन्दु पर टिप्पणी लिखिए।**

**उत्तर-** दक्षिणी अमेरिका के मूल निवासियों के विपरीत उत्तरी अमेरिका के मूल निवासी बड़ी पैमाने पर खेती नहीं करते थे। वे अपने लिए आवश्यकता से अधिक उत्पादन करते थे। इसलिए वे दक्षिणी अमेरिका की तरह राज्य और साम्राज्य स्थापित न कर सके।

**प्रश्न 16 अमेरिका निवासियों के लिए फ्रंटियर के क्या मायने थे? संक्षेप में लिखिए।**

**उत्तर-** जिन मुल्कों को हम कनाडा और संयुक्त राज्य अमेरिका के नाम से जानते हैं, वे 18वीं सदी के अन्त में वजूद में आए। उस समय उनके पास अभी की कुल जमीन का एक टुकड़ा भर था। अगले सौ सालों में उन्होंने अपने नियंत्रण वाले इलाके में काफी इजाफा किया, संयुक्त राज्य अमेरिका ने विराट क्षेत्रों की खरीदी की उसने दक्षिण में फ्रांस (लुइसियाना पर्चेज) और रूस (अलास्का) से जमीन खरीदी मैक्सिको से युद्ध में जमीन जीती। किसी के मन में यह ख्याल नहीं आया कि उन इलाकों में रहने वाले मूल वाशिंदों की भी रजामंदी ली जाए। संयुक्त राज्य अमेरिका की पश्चिमी सरहद (फ्रंटियर) खिसकती रहती थी और जैसे-जैसे यह खिसकती जाती मूल निवासी भी पीछे खिसकने के लिए बाध्य किए जाते थे। इस प्रकार अमेरिका के विस्तार को ही फ्रंटियर की संज्ञा दी गई।

**प्रश्न 17. इतिहास की किताबों में ऑस्ट्रेलिया के मूल निवासियों को शामिल क्यों नहीं किया गया। कोई दो कारण लिखिए।**

**उत्तर-** अठारहवीं शताब्दी के अन्तिम वर्षों में ऑस्ट्रेलिया के मूल निवासियों के 350 से 750 समुदाय थे। आस्ट्रेलिया के मूल निवासियों की अपनी परम्पराओं के अनुसार वे ऑस्ट्रेलिया आये नहीं थे वरन् हमेशा से यहीं थे। आस्ट्रेलिया के उत्तरी भाग में देशी लोगों का एक समूह रहता था जिसे टारस स्ट्रेट टापू वासी के नाम से जाना जाता था। 1770 ई. में ऑस्ट्रेलिया की खोज कैप्टन कुक ने की। उसकी हत्या हवाई में एक आस्ट्रेलिया मूल निवासी ने कर दी थी जिस कारण यूरोपीय लोगों के ऑस्ट्रेलिया के मूल निवासियों से सम्बन्ध कटु हो गए। इस हत्या से उत्पन्न कटुता के कारण ऑस्ट्रेलिया के विषय में जानने या जानकारी देने का यूरोपीय लोगों ने कोई प्रयत्न नहीं किया।

इंग्लैण्ड से निर्वासित होकर आए लोगों ने ऑस्ट्रेलिया के मूल निवासियों से उनकी जमीनें हथिया ली एवं उन्हें बाहर निकाल दिया इससे उनमें नफरत उत्पन्न हो गई। इन सब कारणों से यूरोपीय इतिहासकारों ने आस्ट्रेलिया के मूल निवासियों के प्रति भेद-भाव की नीति अपनाई। उन्होंने अपनी पुस्तकों में केवल आस्ट्रेलिया में आकर बसे यूरोपीय लोगों की ही उपलब्धियों

@amarwah450

का वर्णन किया तथा यह दिखाने का प्रयास किया कि यहाँ के मूल निवासियों की न तो कोई परम्परा है और न ही कोई इतिहास। यही कारण है कि इतिहास की किताबों में ऑस्ट्रेलिया के मूल निवासियों को शामिल नहीं कर उनकी उपेक्षा की गई।

**प्रश्न 18. आस्ट्रेलिया में मानव विकास किस प्रकार हुआ संक्षेप में लिखिए।**

**उत्तर-** उत्तरी अमेरिका के सबसे पहले निवासी 30,000 साल पूर्व एशिया से आए और दक्षिण की तरफ बढ़े। लगभग 5,000 वर्ष पहले जब जलवायु में ज्यादा स्थिरता आयी तब यहाँ आबादी बढ़नी शुरू हुई। ये लोग नदी घाटी के साथ-साथ बने गाँवों में समूह बनाकर रहते थे। वे मछली और मांस खाते थे। सब्जियाँ तथा मकई उगाते थे। वे अक्सर मांस की खोज में लम्बी यात्राओं पर जाया करते थे। मुख्य रूप से उन्हें "बाइसन" नामक जंगली भैंसें की तलाश रहती थी, जो घास के मैदानों में घूमते थे। वे उतने ही जानवर मारते थे, जितने कि उन्हें भोजन की जरूरत पड़ती थी। यहाँ के लोगों ने बड़े पैमाने पर खेती करने का कोई प्रयत्न नहीं किया। वे जमीन पर अपनी "मिल्कियत" की कोई जरूरत महसूस किए बगैर उससे मिलने वाले भोजन और आश्रय से संतुष्ट थे। इन लोगों के परम्परा की एक महत्वपूर्ण विशेषता औपचारिक संबंध और दोस्तियाँ कायम कर उपहारों का आदान-प्रदान करना था। उन्हें वस्तुएँ खरीदने के बजाय उपहार के तौर पर मिलती थी उत्तरी अमेरिका में कई भाषाएँ बोली जाती थी, परंतु लिखी नहीं जाती थी। उनका मानना था कि समय की गति चक्रीय है, व संपूर्ण कबीलों के पास उनका इतिहास है। जो पीढ़ियों से चला आ रहा है। वे योग्य व निपुण थे, कारीगर सुंदर कपड़ा बुनते थे। वे जलवायु व भू-दृश्यों को समझ सकते थे।

**प्रश्न 19. दास प्रथा का उन्मूलन संयुक्त राज्य अमेरिका में किस प्रकार हुआ?**

**उत्तर-** संयुक्त राज्य अमेरिका के दक्षिणी प्रदेश की जलवायु यूरोपीय लोगों के लिए काफी गर्म थी। इसलिए उनके लिए वहाँ घर से बाहर काम कर पाना कठिन था। अतः वे दासों से काम लेना चाहते थे, परन्तु दक्षिण अमेरिकी उपनिवेशों में दास बनाए गए मूल निवासी बहुत बड़ी संख्या में मौत का शिकार हो गए थे। इसीलिए बागान मालिकों ने अफ्रीका से दास खरीदें। समय बीतने पर दास प्रथा विरोधी समूहों के विरोध के कारण दासों के व्यापार पर रोक लग गई। परन्तु जो अफ्रीकी दास संयुक्त राज्य अमेरिका में थे, वे और उनके बच्चे दास ही बने रहे।

**दास प्रथा की समाप्ति-** संयुक्त राज्य अमेरिका के उत्तरी राज्यों का अर्थतन्त्र बागानों पर आधारित न होने के कारण दास प्रथा पर आधारित नहीं था। अतः वहाँ दास प्रथा को समाप्त करने के पक्ष में आवाज उठने लगी और इसे एक अमानवीय प्रथा बताया गया। 1861-65 में दास प्रथा के समर्थक तथा विरोधी राज्यों के बीच युद्ध हुआ। इसमें दासता के विरोधियों की जीत हुई और दास प्रथा समाप्त कर दी गई।

**प्रश्न 20. अमेरिका के मूल निवासी वनों की सुरक्षा किस प्रकार करते थे। संक्षेप में लिखिए।**

**उत्तर-** देखिए प्रश्न क्र. 11 में। ▪

# अध्याय-11 आधुनिकीकरण के रास्ते

## वस्तुनिष्ठ प्रश्न

**प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए-**

1. 19वीं सदी की शुरुआत में चीन का ....... पर प्रभुत्व था-
(अ) पूर्वी एशिया (ब) पश्चिमी यूरोप
(स) दक्षिणी एशिया (द) सम्पूर्ण एशिया

2. लंबी परम्परा के बावजूद ................की सत्ता किसके हाथ में थी?
(अ) चोंग राजवंश (ब) सम्राट अकीहितो
(स) हिरोहितो (द) नारुहितो

3. 'जाना-माना डिम सम' का शाब्दिक अर्थ क्या है?
(अ) शरीर को छूना (ब) दिल को छूना
(स) शब्दों को छूना (द) हाथों को छूना

4. चीन की प्रमुख 'पीली' नदी का वास्तविक नाम क्या है?
(अ) हुआंग हे (ब) यांग्त्सी नदी
(स) छांग-जिआंग (द) चांग टिसीक्यांग

5. दुनिया की तीसरी सबसे लम्बी नदी कौन सी है?
(अ) हुआंग हे (ब) पर्ल नदी
(स) यांग्त्सी क्यांग (छांग-जिआंग)
(द) पीली नदी

6. होंशू, क्यूसशू, शिकोकू और होकाइदो ओकिनावा चार सबसे बड़े महाद्वीप हैं-
(अ) जापान के (ब) चीन के
(स) उत्तरी कोरिया के (द) दक्षिणी कोरिया के

7. 19वीं सदी के शुरुआत में चीन का किस मार्ग पर प्रभुत्व था?
(अ) पूर्वी एशिया (ब) पश्चिमी एशिया
(स) उत्तरी एशिया (द) दक्षिणी एशिया

8. मैजी सरकार का संबंध है-
(अ) चीन (ब) जापान
(स) रूस (द) मंगोलिया

@amanvah450

9. किस देश में कुल का नाम व्यक्तियों के नाम से पहले लिखा जाता है?

(अ) चीन (ब) जापान

(स) मंगोलिया (द) मंचूरिया

10. गेंजी की कथा किसके द्वारा लिखी गई?

(अ) मुरासाकी शिकिबु (ब) मेजी

(स) माइतो कोनन (द) लियांग छिन्चाओ

उत्तर- 1 (अ), 2 (अ), 3 (ब), 4 (अ), 5 (स), 6 (अ), 7 (अ), 8 (ब), 9 (ब), 10 (अ)।

प्रश्न 2. रिक्तस्थानों की पूर्ति कीजिए-

(1) तोकुगावा परिवार के लोग ............ अवधि तक शोगुन पद पर कायम रहे थे।

(2) 'हीरा गाना' का अर्थ ............ है।

(3) ............ योद्धावर्ग शासन करने वाले कुलीन थे और वे शोगुन तथा दैम्यो की सेवा में थे।

(4) जापान को अमीर देश समझा जाता था, क्योंकि वह चीन से ............ और भारत से ............ जैसी विलासी वस्तुएँ आयात करता था।

(5) निशिजिन ............ की एक बस्ती है।

(6) 'दि टेल ऑफ दि गेंजी' ............ के द्वारा लिखी गई एक प्रसिद्ध पुस्तक है

(7) 'तोक्यो' का अर्थ ............ है।

(8) हीरागाना और कताकाना जापान की ............ है।

(9) कताकाना का अर्थ ............ है।

(10) ............ कौंजी चित्रात्मक शैली है।

उत्तर- (1) 1603 से 1867, (2) हरा, (3) सामुराई, (4) रेशम, कपड़ा (5) क्योतो, (6) मुरासाकी-शिकिबु (7) जापान की राजधानी और सबसे बड़ा नगर (8) ध्वन्यात्मक (9) मिला वर्णमाला (10) कांजी।

प्रश्न 3. सही जोड़ियाँ बनाइए-

| कॉलम-( अ ) | कॉलम-( ब ) |
|---|---|
| (1) पीली नदी | (अ) तोक्योज |
| (2) सबसे लंबी नदी | (ब) राजदरबार |
| (3) पर्ल नदी | (स) छांग-जिआंग |
| (4) जापान | (द) चीन |
| (5) हेआन | (य) मेजीवंश की पुनर्स्थापना |
| (6) 1867-68 | (र) हुआंग हे। |
| (7) पहला अफीम युद्ध | (ल) ईस्टम इंडिया कम्पनी |
| (8) भारत की बरबादी का कारण थी | (व) चीन |
| (9) कन्फ्यूशियसवाद | (स) 1911 |
| (10) मांचू साम्राज्य समाप्त | (श) 1839,1942 |

उत्तर- 1 (र). 2 (स). 3 (ल). 4 (अ) 5 (ब). 6 (य), 7. (श). 8 (ल). 9 (द). 10 (स)।

प्रश्न 4. एक शब्द या वाक्य में उत्तर दीजिए-

(1) हेआन राजदरबार की काल्पनिक डायरी किसके द्वारा लिखी गई?

(2) शिक्षा और सरकार के संचालन हेतु किस लिपि का इस्तेमाल होता था?

(3) तोक्यो, जिसका मतलब हिन्दी में क्या होता है?

(4) नयी-विद्यालय व्यवस्था का निर्माण कब हुआ?

(5) जापानी भाषा एक साथ कितनी लिपियों का प्रयोग करती है?

(6) आधुनिक बैंकिंग व्यवस्थाओं का प्रारंभ कब हुआ?

(7) आधुनिक चीन के संस्थापक कौन थे? स्पष्ट करो।

(8) पीकिंग विश्वविद्यालय की स्थापना कब हुई थी?

(9) लाएरो (1936) द्वारा रचित उपन्यास का क्या नाम था?

(10) 1949 में गठित चीनी सरकार का नाम बताइए?

उत्तर- (1) मुरासाकी शिकिबु, (2) चीनी लिपि का, (3) पूर्वी राजधानी, (4) 1870 के दशक में, (5) तीन, (6) 1872, (7) सनयात सेन, (8) 1902 में, (9) रिक्शा, (10) साम्यवादी।

प्रश्न 5. सत्य/असत्य लिखिए-

(1) फुकुजावा यूकिची का जन्म एक गरीब सामुराई परिवार में हुआ था।

(2) फुकुजावा यूकिची मेजी काल के प्रमुख बुद्धिजीवियों में से एक थे।

(3) 'गाकुमोन नो सुसमे', 1872-76 में लिखी गई।

(4) 'मियाके सेत्सु रे' एक दर्शनशास्त्री थे।

(5) जापान की राजधानी पीकिंग है।

(6) 'मोगा' आधुनिक लकड़ी के लिए संक्षिप्त शब्द है।

(7) नए जनवाद की स्थापना (1949.65) में हुई थी।

(8) दक्षिणी कोरिया के प्रथम राष्ट्रपति 'सिग्न मैन री' 1948 में राष्ट्रपति चुने गए थे।

(9) आर्थिक दृष्टि से सबसे अधिक सम्पन्न देश चीन है।

(10) कोरिया को 1977 में विदेशी मुद्रा संकट का सामना करना पड़ा।

उत्तर- (1) सत्य, (2) सत्य, (3) सत्य, (4) सत्य, (5) असत्य, (6) सत्य, (7) सत्य, (8) सत्य, (9) असत्य, (10) सत्य।

@amarwah450

## अति लघु उत्तरीय प्रश्न

**प्रश्न 1. 'मोगा' शब्द से क्या तात्पर्य है?**

उत्तर- भारत के पंजाब राज्य का एक शहर है, उदा. मोगा में क्रांति सम्मेलन का आयोजन किया गया है।

**प्रश्न 2. जापान ने चीन और एशिया में अपने उपनिवेशों को किस सन् में बढ़ाया स्पष्ट करो।**

उत्तर- जापान 1890 के दशक में औपनिवेशिक होड़ में सक्रिय हुआ। उसका पहला निशाना चीन था। वह चीन में अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति करके पूर्वी एशिया पर अपना प्रभुत्व स्थापित करना चाहता था बाद में उसने समस्त एशिया तथा प्रशांत महासागर क्षेत्र में अपनी श्रेष्ठता स्थापित करना अपना लक्ष्य बना लिया।

**प्रश्न 3. आधुनिक चीन की शुरुआत किस सदी में हुई स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर- आधुनिक चीन की शुरुआत सोलहवीं और सत्रहवीं सदी में परिचय के साथ उसका पहला सामना होने के समय से मानी जा सकती है।

**प्रश्न 4. पहला अफीम युद्ध कब हुआ संक्षिप्त में वर्णन कीजिए।**

उत्तर- पहला अफीम युद्ध ब्रिटेन और चीन के बीच (1839-1942) में हुआ? इस युद्ध में ब्रिटेन ने अफीम के फायदेमंद व्यापार को बढ़ाने के लिए सैन्य बलों का इस्तेमाल किया।

**प्रश्न 5. अफीम के व्यापार पर संक्षिप्त लेख लिखिए।**

उत्तर- चीन के साथ ईस्ट इंडिया कंपनी के व्यापार-वाणिज्य में अफीम का सर्वाधिक महत्त्व था, क्योंकि चीन में अफीम की भारी माँग थी। इसलिए कंपनी सरकार ने अपने अधिकृत भारतीय प्रदेशों बंगाल, बिहार और उत्तर प्रदेश में अफीम पैदावार और उसके व्यापार पर अपना एकाधिकार स्थापित कर रखा था। यहाँ की अफीम, कंपनी द्वारा चीन को निर्यात की जाती थी। आरंभ में बंगाल व बिहार में इसकी खेती का ठेका दिया जाता था, किन्तु इस पद्धति से अनुकूल लाभ न होने के कारण 1797 ई. में कंपनी ने स्वयं अपने नियंत्रण में अफीम की खेती करवाई। तब कंपनी को पता चला कि चीन के बाजारों में तुर्की और मालवा की अफीम अधिक अच्छी मानी जाती थी और उसके भाव भी अच्छे थे। बंगाल की अफीम इतनी घटिया होती थी कि कंपनी को इस बात का भय उत्पन्न हो गया कि कहीं चीन का अफीम बाजार उसके हाथ से निकल न जाये। अतः कंपनी ने अफीम के व्यापार पर अपनी जकड़ बढ़ाने और बनाये रखने के लिये बंबई सरकार को आदेश दिया कि मालवा की अफीम अधिक से अधिक खरीद ली जाये, ताकि वह अफीम केवल कंपनी द्वारा ही चीन में बेचकर भारी मुनाफा कमाया जा सके, परंतु इस नीति का परिणाम भी कंपनी के लिये लाभप्रद नहीं रहा। क्योंकि निजी व्यापारी मालवा की अफीम को चीन के बाजारों में पहुँचाने तथा उस अफीम को बंगाली अफीम से सस्ते दामों में बेचने में सफल हो रहे थे। इससे कंपनी की चिन्ता बढ़ने लगी।

**प्रश्न 6. कंफ्यूशियस वाद का विस्तार किस देश में हुआ?**

उत्तर- कंफ्यूशियस वाद चीन में प्रमुख विचारधारा रही है। यह विचारधारा कंफ्यूशियस (551-479 ई.पू.) और उनके अनुयायियों की शिक्षा से विकसित की गई। इसका दायरा अच्छे व्यवहार, व्यावहारिक समझदारी और उचित सामाजिक संबंधों के सिद्धांतों का था। इसने चीनियों के जीवन के प्रति रवैये को प्रभावित किया, सामाजिक मानक दिये और चीनी राजनीतिक सोच और संगठनों को आधार दिया।

**प्रश्न 7. मांचू साम्राज्य कब समाप्त हुआ और इसके स्थान पर किसने नेतृत्व किया?**

उत्तर- 1911 में मांचू साम्राज्य समाप्त कर दिया और सन यात-सेन (1866-1925) के नेतृत्व में गणतंत्र की स्थापना की गई।

**प्रश्न 8. आधुनिक चीन का संस्थापक किसे माना जाता है?**

उत्तर- सनयातसेन (1866-1925) को आधुनिक चीन का संस्थापक माना जाता है। वह एक गरीब परिवार से थे। उन्होंने मिशन स्कूलों में शिक्षा ग्रहण की जहाँ उनका परिचय लोकतन्त्र और ईसाई धर्म से हुआ। उन्होंने टास्टरी की, पढ़ाई की। परन्तु वह चीन के भविष्य को लेकर चिन्तित थे। उनका कार्यक्रम तीन सिद्धान्त (सन-मिन चुई) के नाम से विख्यात है।

**प्रश्न 9. सनयात सेन का राजनीतिक दर्शन क्या था? स्पष्ट करो।**

उत्तर- सन-यात-सेन के विचार कुओमीनतांग के राजनीतिक दर्शन का आधार बने। उन्होंने कपड़ा, खाना, घर और परिवहन- इन 'चार बड़ी जरूरतों' को रेखांकित किया?

**प्रश्न 10. सनयात सेन के पश्चात् सत्ता किनके हाथों में हस्तांतरित हुई और कब?**

उत्तर- सनयात सेन की मृत्यु के बाद चियांग काइशेक (1887-1975) कुओमीनतांग तांग के नेता बनकर उभरे।

**प्रश्न 11. सनयात सेन के तीन सिद्धान्त क्या थे?**

उत्तर- उन्होंने डॉक्टरी की पढ़ाई की, परन्तु वे चीन के भविष्य को लेकर चिंतित थे। उनका कार्यक्रम तीन सिद्धांत (सन मिन चुई) के नाम से प्रसिद्ध है। ये तीन सिद्धान्त हैं-

1. राष्ट्रवाद- इसका अर्थ था मंचू वंश जिसे विदेशी राजवंश के रूप में माना जाता था, सत्ता से हटाना, साथ-साथ अन्य साम्राज्यवादियों को हटाना।

@amarwar450

2. गणतांत्रिक सरकार की स्थापना– सनयात सेन जनता को सर्वोपरि स्थान देते थे। वे चाहते थे कि जनता शासन के कार्यों में अधिक भाग ले। इसलिए वे चीन में गणतांत्रिक सरकार की स्थापना करना चाहते थे।

3. समाजवाद– जो पूंजी नियमन करें और भूस्वामित्व में समानता लाए। सनयात सेन के विचार कुओमिंतांग के राजनीतिक दर्शन के आधार बने। उन्होंने कपड़ा, खाना, घर और परिवहन, इन चार बड़ी आवश्यकताओं को रेखांकित किया।

**प्रश्न 12. जापान के विकास के कोई तीन कारण लिखो।**

**उत्तर– जापान विकास के कारण–**

(1) किसानों से हथियार ले लिए गए और अब केवल समुराई तलवार रख सकते थे। (2) दैम्यों को अपने क्षेत्रों की राजधानियों में रहने के आदेश दिए गए और उन्हें काफी हद तक स्वायत्तता प्रदान की गई। (3) मालिकों और कारदाताओं का निर्धारण करने के लिए जमीन का सर्वेक्षण किया गया।

**प्रश्न 13. छींग राजवंश ने पश्चिमी ताकतों की चुनौतियों का मुकाबला कैसे किया?**

**उत्तर–** उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों में छींग राजवंश के नेतृत्व में चीन का पूर्वी एशिया पर आधिपत्य कायम था। उस समय जापान एक छोटा-सा द्वीप देश था, जो अलग-थलग पड़ा हुआ प्रतीत होता था। आधुनिक विश्व में चीन और जापान ने ऐसे समय में प्रवेश किया जब पश्चिमी औपनिवेशिक देशों ने विश्व के एक विशाल भाग पर नियन्त्रण स्थापित कर लिया था। यद्यपि चीन एक विशाल देश था, किन्तु यह यूरोपीय देशों द्वारा दी गई सैन्य चुनौतियों का सामना दृढ़तापूर्वक नहीं कर सका, इसके परिणामस्वरूप चीन कुछ ही दशकों में अराजकता और अव्यवस्था का शिकार होने लगा। छींग राजवंश (1644–1911 ई.) चीन की अराजकतापूर्ण स्थिति पर नियन्त्रण स्थापित करने में असफल रहा और राजनीतिक सत्ता को खो बैठा, इसके परिणामस्वरूप चीन गृह युद्ध की ज्वाला से जलने लगा। इसके विपरीत, दूसरी ओर जापान ने विदेशी चुनौतियों का सामना करने के लिए सफलतापूर्वक नवीन संस्थात्मक ढांचों को तैयार किया और अपनी परम्पराओं का बेहतर तरीके से इस्तेमाल किया। इसके परिणामस्वरूप जापान ने एक आधुनिक राष्ट्र राज्य के निर्माण में, सुदृढ़ औद्योगिक अर्थतन्त्र की रचना में और 1895 ई. में ताइवान और 1910 ई. में कोरिया पर नियन्त्रण स्थापित करके एक औपनिवेशिक साम्राज्य स्थापित करने में सफलता प्राप्त की। (जापान ने 1894 ई. में चीन जैसे विशाल देश और 1905 ई. में रूस जैसी यूरोपीय शक्ति को पराजित करके अपनी उभरती हुई शक्ति को विश्व पटल पर स्थापित किया।)

**प्रश्न 14. आधुनिकीकरण से पर्यावरण का क्या विनाश हुआ?**

**उत्तर–** यह बात सत्य है कि जापान के तीव्र औद्योगीकरण के कारण ही जापान ने पर्यावरण के विनाश तथा युद्ध को जन्म दिया। उद्योगों के अनियन्त्रित विकास से लकड़ी तथा अन्य संसाधनों की मांग बढ़ी। इसका पर्यावरण पर बुरा प्रभाव पड़ा। कच्चा माल प्राप्त करने तथा तैयार माल की खपत के लिए जापान को उपनिवेशों की आवश्यकता पड़ी। इसके कारण जापान को पड़ोसियों के साथ युद्ध करने पड़े।

**प्रश्न 15. किसान का बेटा 'तनाका शोजो' (1841–1913) के बारे में आप क्या जानते है?**

**उत्तर–** एक किसान के बेटे तनाका शोजो (1841–1913) ने अपनी पढ़ाई खुद की और एक मुख्य राजनैतिक हस्ती के रूप में उभरे। 1880 के दशक में उन्होंने जनवादी हकों के आंदोलन में हिस्सा लिया। इस आंदोलन ने संवैधानिक सरकार की माँग की। वह पहली संसद– डायट में सदस्य चुने गए। उनका मानना था कि औद्योगिक प्रगति के लिए आम लोगों की बलि नहीं दी जानी चाहिए। आशियो (Ashio) खान से वातारासे (Watarase) नदी में प्रदूषण फैल रहा था जिसके कारण 100 वर्ग मील की कृषिभूमि बर्बाद हो रही थी और 1000 परिवार प्रभावित हो रहे थे। आंदोलन के चलते कंपनी को प्रदूषण–नियंत्रण के तरीके अपनाने पड़े जिससे 1904 तक फसल सामान्य हो गई।

## लघु उत्तरीय प्रश्न:

**प्रश्न 1. 'चियांग काइशेक' ने कब से कब तक शासन किया और किसे पराजित किया?**

**उत्तर–** चियांग काशेक ने 1887 से 1975 तक शासन किया तथा उन्होंने सैन्य अभियान के जरिये वारलॉर्ड्स को पराजित किया?

**प्रश्न 2. ग्रामीण चीन के प्रमुख दो संकट कौन-कौन से थे?**

**उत्तर– 1. पर्यावरण सम्बन्धी संकट–** इसमें बंजर भूमि, वनों का विनाश तथा बाढ़ शामिल थे।

**2. सामाजिक आर्थिक संकट–** यह संकट विनाशकारी भूमि-प्रथा, ऋण, प्राचीन प्रौद्योगिकी तथा निम्न स्तरीय संचार के कारण था।

**प्रश्न 3. मजबूत किसान परिषद (सोवियत) के गठन के क्या उद्देश्य थे?**

**उत्तर–** मज़बूत किसान परिषद (सोवियत) का गठन किया, ज़मीन पर कब्ज़ा और पुनर्वितरण के साथ एकीकरण हुआ। दूसरे नेताओं से हटकर, माओ ने आज़ाद सरकार और सेना पर जोर दिया। वे महिलाओं की समस्याओं से अवगत थे और उन्होंने ग्रामीण महिला संघों को उभरने में प्रोत्साहन दिया।

@amanwah450

उन्होंने शादी के नए कानून बनाए जिसमें आयोजित शादियों और शादी के समझौते खरीदने और बेचने पर रोक लगाई और तलाक को आसान बनाया।

**प्रश्न 4. लड़के 100-200 युआन पर बिकते थे पर लड़कियाँ नहीं बेची जाती थी? इसका क्या कारण था स्पष्ट कीजिए।**

**उत्तर-** 1930 में जुनवू (Xunwu) में किए गए एक सर्वेक्षण में माओ त्सेतुंग ने नमक और सोयाबीन जैसी रोजमर्रा की वस्तुओं, स्थानीय संगठनों की तुलनात्मक मजबूतियों, छोटे व्यापारियों और दस्तकारों, लोहारों और वेश्याओं, धार्मिक संगठनों की मजबूतियों, इन सबका परीक्षण किया, ताकि शोषण के अलग-अलग स्तरों को समझा जा सके। उन्होंने ऐसे आंकड़े इकट्ठे किये कि कितने किसानों ने अपने बच्चों को बेचा है और इसके लिए उन्हें कितने पैसे मिले। लड़के 100.200 यूआन पर बिकते थे, लेकिन लड़कियों की बिक्री के कोई उदाहरण नहीं मिले, क्योंकि ज़रूरत मज़दूरों की थी लैंगिक शोषण की नहीं। इस अध्ययन के आधार पर उन्होंने सामाजिक समस्याओं को सुलझाने के तरीके पेश किए।

**प्रश्न 5. 'नए जनवाद' की स्थापना कब हुई स्पष्ट कीजिए।**

**उत्तर-** पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना की सरकार 1949 में कायम हुई। यह 'नए लोकतंत्र' के सिद्धांत पर आधारित थी। 'सर्वहारा की तानाशाही', जिसे कायम करने का दावा सोवियत संघ का था से भिन्न नया लोकतंत्र सभी सामाजिक वर्गों का गठबंधन था। अर्थव्यवस्था के मुख्य क्षेत्र सरकार के नियंत्रण में रखे गए और निजी कारखानों और भूस्वामित्व को धीरे-धीरे खत्म किया गया। यह कार्यक्रम 1953 तक चला। जब सरकार ने समाजवादी बदलाव का कार्यक्रम शुरू करने की घोषणा की। 1958 में लंबी छलाँगवाले आंदोलन की नीति के जरिये देश का तेजी से औद्योगीकरण करने की कोशिश की गई। लोगों को अपने घर के पिछवाड़े में इस्पात की भट्टियाँ लगाने के लिए प्रोत्साहित किया गया। ग्रामीण इलाकों में पीपुल्स कम्यून्स जहाँ लोग इकट्ठे ज़मीन के मालिक थे और मिलजुलकर फसल उगाते थे शुरू किये गए। 1958 तक 26,000 ऐसे समुदाय थे जो कि कृषक आबादी का 98 प्रतिशत था।

**प्रश्न 6. माओ त्सेतुंग के सुधारवादी तौर-तरीके को समझाइए।**

**उत्तर-** माओ त्सेतुंग के आमूल परिवर्तनवादी तौर-तरीकों को जियांग्सी में देखा जा सकता है। यहाँ पहाड़ों में 1928-1934 के बीच उन्होंने कुओमीनतांग के हमलों से सुरक्षित शिविर लगाए। मज़बूत किसान परिषद (सोवियत) का गठन किया, ज़मीन पर कब्ज़ा और पुनर्वितरण के साथ एकीकरण हुआ। दूसरे नेताओं से हटकर, माओ ने आज़ाद सरकार और सेना पर जोर दिया। वे महिलाओं की समस्याओं से अवगत थे और उन्होंने ग्रामीण महिला संघों को उभरने में प्रोत्साहन दिया। उन्होंने शादी के नए कानून बनाए जिसमें आयोजित शादियों और शादी के समझौते खरीदने और बेचने पर रोक लगाई और तलाक को आसान बनाया।

**प्रश्न 7. कुलीन सत्ताधारी वर्ग' में प्रवेश हेतु ली जाने वाली परीक्षा पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।**

**उत्तर-** अभिजात सत्ताधारी वर्ग में प्रवेश (1850 तक लगभग 11 लाख) ज्यादातर इम्तहान के जरिये ही होता था। इसमें 8 भाग वाला निबंध निर्धारित प्रपत्र में (पा-कू वेन) शास्त्रीय चीनी में लिखना होता था। यह परीक्षा विभिन्न स्तरों पर हर 3 साल में दो बार आयोजित की जाती थी। पहले स्तर की परीक्षा में केवल 1.2 प्रतिशत लोग 24 साल की उम्र तक पास हो पाते थे और वे (सुंदर प्रतिभा) बन जाते थे। इस डिग्री से उन्हें निचले कुलीन वर्ग में प्रवेश मिल जाता था। 1850 से पहले किसी भी समय 526-869 सिविल और 212330 सैन्य प्रांतीय (शेंग हुआन) डिग्री वाले लोग पूरे देश में मौजूद थे। देश में केवल 27,000 राजकीय पद थे, इसलिए कई निचले दर्जे के डिग्रीधारकों के पास नौकरी नहीं होती थी। यह इम्तहान विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास में बाधक का काम करता था, क्योंकि इसमें सिर्फ साहित्यिक कौशल की माँग होती थी। चूंकि यह क्लासिक चीनी सीखने के हुनर पर ही आधारित था जिसकी आधुनिक विश्व में कोई प्रासंगिकता नज़र नहीं आती थी, इसलिए 1905 में इस प्रणाली को खत्म कर दिया गया।

**प्रश्न 8. अफीम युद्ध का चीनवासियों पर क्या प्रभाव पड़ा?**

**उत्तर- अफीम का व्यापार-** चीनी उत्पादों जैसे चाय, रेशम और चीनी मिट्टी के बर्तनों की माँग ने व्यापार में असंतुलन की भारी समस्या खड़ी कर दी। पश्चिमी उत्पादों को चीन में बाज़ार नहीं मिला जिसकी वजह से भुगतान चाँदी में करना पड़ता था। ईस्ट इंडिया कंपनी ने एक विकल्प ढूंढा - अफीम। यह हिंदुस्तान के कई हिस्सों में बहुत आराम से उगती थी। चीन में अफ़ीम बेचने के ज़रिये वे चाँदी कमाकर कैंटन में उधार पत्रों के बदले कंपनी के प्रतिनिधियों को देने लगे। इस तरह कंपनी उस चाँदी का इस्तेमाल ब्रिटेन के लिए चाय, रेशम और चीनी मिट्टी के बर्तन खरीदने के लिए करती थी। ब्रिटेन, भारत और चीन के बीच यह 'उत्पादों का 'त्रिकोणीय व्यापार' था।

**प्रश्न 9. जापान के कार क्लब पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।**

**उत्तर- मोगा-** 'आधुनिक लड़की' के लिए संक्षिप्त शब्द। यह 20वीं शताब्दी में लिंग बराबरी, विश्वजनीन (कॉस्मोपॉलिटन) संस्कृति और विकसित अर्थव्यवस्था के विचारों के एक साथ

@anarvah450

आने का सूचक है। नए मध्यम वर्ग परिवारों ने आवागमन और मनोरंजन के नए तरीकों का लुत्फ उठाया। शहरों में बिजली की ट्रामों के साथ परिवहन बेहतर हुआ। 1878 से जनता के लिए बाग बनाये गए और बड़ी दुकानें डिपार्टमेंट स्टोर बनने लगीं। तोक्यो में गिन्जा गिनसुरा के लिए एक फैशनेबुल इलाका बन गया। गिनबुरा शब्द गिन्ज़ा और बुरबुरा मिला कर बनाया गया है। बुरबुरा का अर्थ है 'बिना किसी लक्ष्य के घूमना'। 1925 में पहला रेडियो -स्टेशन खुला। अभिनेत्री मात्सुई, सुमाको इब्सन के नाटक एक गुड़िया का घर (A. Doll's House) में नोरा का चेतनशील किरदार निभा कर राष्ट्रीय स्तर की तारिका बन गई। 1899 में फिल्में बनने लगीं और जल्द ही दर्जन भर कंपनियाँ सैकड़ों की तादाद में फिल्में बनाने लगीं। यह दौर ओज से भरा हुआ था और इस दौरान सामाजिक और राजनीतिक व्यवहार के पारंपरिक मानकों पर सवाल उठाये गए।

**प्रश्न 10. गेंजी की कथा पर संक्षिप्त लेख लिखिए।**

**उत्तर-** गेंजी की कथा- मुरासाकी शिकिबु द्वारा लिखि गई हेआन राजदरबार की यह काल्पनिक डायरी दि टेल ऑफ द गेंजी जापानी साहित्य में प्रमुख कथाकृति बन गई। इस काल में मुरासाकी जैसी अनेक लेखिकाएँ उभरी जिन्होंने जापानी लिपि का इस्तेमाल किया, जबकि पुरुषों ने चीनी लिपि को 'चीनी लिपि का इस्तेमाल' शिक्षा और सरकार में होता था? इस उपन्यास में कुमार गेंजी की रोमांचक जिन्दगी दर्शायी गई और हेआन राजदरबार के अभिजात वातावरण की जीती जागती तस्वीर पेश की गई। इसमें यह भी दिखाया गया है कि औरतों को अपने पति चुनने और अपनी जिन्दगी जीने की कितनी आजादी थी।

**प्रश्न 11. 1894.95 में चीन-जापान युद्ध पर टिप्पणी लिखिए।**

**उत्तर-** चीन-जापान युद्ध 1894.95 के दौरान चीन और जापान के मध्य कोरिया पर प्रशासनिक तथा सैन्य नियंत्रण को लेकर लड़ा गया था। जापान की मेइजी सेना इसमें विजयी हुई थी और युद्ध के परिणाम स्वरूप कोरिया, मंचूरिया तथा ताईवान का नियंत्रण जापान के हाथ में चला गया। इस युद्ध में हारने के कारण चीन को जापान के आधुनिकीकरण का लाभ समझ में आया और बाद में चिंग राजवंश के खिलाफ 1911 में क्रांति हुई। प्रथम चीन-जापान युद्ध का नाम भी दिया जाता है। 1937.45 के मध्य लड़े गए युद्ध को द्वितीय चीन-जापान युद्ध कहा जाता है।

**प्रश्न 12. जापान में प्रयुक्त की जा रही लिपियों पर संक्षिप्त लेख लिखिए।**

**उत्तर-** जापानी भाषा एक साथ तीन लिपियों का प्रयोग करती है। इनमें से एक कांजी, जापानियों ने चीनियों से छठी शताब्दी मे ली। चूंकि उनकी भाषा चीनी भाषा से बहुत अलग है उन्होंने दो ध्वन्यात्मक वर्णमालाओं का विकास भी किया- हीरागाना और कताकाना। हीरागाना नारी सुलभ समझी जाती है क्योंकि हेआन काल में बहुत सी लेखिका इसका इस्तेमाल करती थी- जैसे कि मुरासाकी। यह चीनी चित्रात्मक चिन्हों और ध्वन्यात्मक अक्षरों (हीरागाना अथवा कताकाना) को मिलाकर लिखी जाती है। शब्द का प्रमुख भाग कांजी के चिन्ह से लिखा जाता है और बाकी का हीरागाना में।

ध्वन्यात्मक अक्षरमाला की मौजूदगी के चलते ज्ञान कुलीन वर्गों से व्यापक समाज में काफी तेज़ी से फैल सका। 1880 के दशक में यह सुझाव दिया गया कि जापानी या तो पूरी तरह से ध्वन्यात्मक लिपि का विकास करें या कोई यूरोपीय भाषा अपना लें। दोनों में से कुछ भी नहीं किया गया।

**प्रश्न 13. मेजी सरकार ने राष्ट्र के एकीकरण में क्या योगदान किया?**

**उत्तर-** राष्ट्र के एकीकरण के लिए मेजी सरकार ने पुराने गाँवों और क्षेत्रीय सीमाओं को बदल कर नया प्रशासनिक ढाँचा तैयार किया। प्रशासनिक इकाई में पर्याप्त राजस्व जरूरी था जिससे स्थानीय स्कूल और स्वास्थ्य सुविधाएँ जारी रखी जा सकें। साथ ही ये इकाइयाँ सेना के लिए भर्ती केंद्रों के काम आ सकें। 20 साल से अधिक उम्र के नौजवानों के लिए कुछ अरसे के लिए सेना में काम करना अनिवार्य हो गया। एक आधुनिक सैन्य बल तैयार किया गया। कानून व्यवस्था बनाई गई जो राजनीतिक गुटों के गठन को देख सके, बैठकें बुलाने पर नियंत्रण रख सके और सख्त सेंसर व्यवस्था बना सके। इन तमाम उपायों में सरकार को विरोध का सामना करना पड़ा। सेना और नौकरशाही को सीधा सम्राट के निर्देश में रखा गया। यानि कि संविधान बनने के बावजूद यह दो गुट सरकारी नियंत्रण के बाहर रहे। लोकतांत्रिक संविधान और आधुनिक सेना- इन दो अलग आदर्शों को महत्व देने के दूरगामी नतीजे हुए। सेना ने और इलाके जीतने के मकसद से मजबूत विदेश नीति के लिए दबाव डाला। इस वजह से चीन और रूस के साथ जंग हुई, दोनों में ही जापान विजयी रहा। अधिक जनवाद की लोकप्रिय माँग अक्सर सरकार की इन आक्रामक नीतियों के विरोध में जाती थी। जापान आर्थिक रूप से विकास करता गया और उसने अपना एक औपनिवेशिक साम्राज्य कायम किया। अपने देश में उसने लोकतंत्र के प्रसार को कुचला और साथ ही उपनिवेशीकृत लोगों के साथ टकराव का रिश्ता कायम किया।

@amar wah450

**प्रश्न 14. जापान की अर्थव्यवस्था के आधुनिकीकरण में मेजी सरकार की भूमिका स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर- 1. **औद्योगिक प्रगति**- मेजी सरकार ने सर्वप्रथम देश के औद्योगिक विकास की ओर ध्यान दिया। जापानी यह अनुभव कर रहे थे कि इस क्षेत्र में वे पश्चिमी देशों की तुलना में बहुत पिछड़े हुए हैं और जब तक वे अपना पर्याप्त आर्थिक विकास नहीं कर लेते तब तक वे पश्चिमी देशों का सामना नहीं कर सकते, इसीलिए उन्होंने तीव्र गति से पाश्चात्य औद्योगीकरण को अपनाना प्रारम्भ कर दिया। जापान में नए-नए उद्योगों की स्थापना की जाने लगी और यूरोप तथा अमेरिका से नई-नई मशीनें मँगाई जाने लगीं। सरकार की ओर से जापान में उद्योग-धन्धे स्थापित करने के लिए बहुत प्रोत्साहन दिया गया। इसके परिणामस्वरूप कुछ ही वर्षों के अन्दर जापान में औद्योगिक क्रान्ति हो गई और जापान एक औद्योगिक देश बन गया।

2. **यातायात व संचार के साधनों का विकास**- मेजी सरकार ने यातायात और संचार के साधनों के विकास की ओर भी विशेष ध्यान दिया। 1872 ई. में जापान में रेलवे लाइनें बिछाने का कार्य प्रारम्भ हुआ और 1894 ई. तक सम्पूर्ण देश में रेलवे लाइनों का जाल बिछ गया। 1872 ई. में टोकियो तथा याकोहामा के बीच 19 मील लम्बी रेलवे लाइन बिछाई गई। 1874 ई. में कोबा तथा ओसाका के संख्या वृद्धि और 1877 ई. के सत्सुमा विद्रोह के प्रसार के फलस्वरूप जापान में कीमतें असाधारण रूप से बढ़ गईं और जनता को अनेक कष्टों का सामना करना पड़ा।

3. **मुद्रा सुधार**- मेजी सरकार ने मुद्रा विनिमय में भी सुधार किया। अब तक जापान में विनिमय के लिए सोना तथा चाँदी का प्रयोग होता था और इसके साथ-साथ शोगुन शासन तथा अनेक सामन्तों ने अपने-अपने सिक्के चला रखे थे। इसके अतिरिक्त सोने तथा चाँदी के सिक्कों का ऐसा सम्बन्ध था कि विदेशी अपने देश से चाँदी मँगा लेते थे और 1858 ई. की सन्धि तथा बाद में हुए जापानी सरकार के साथ अन्य समझौते के अनुसार उसे जापान की चाँदी से बदल लेते थे और बाद में उसे जापान की चाँदी से बदल लेते थे और बाद में इस जापानी चाँदी को सोने में बदलकर उसका निर्यात करते थे।

इसके परिणामस्वरूप जापान का सोना विदेशों को चला जाता था। सन्धि परिवर्तन तथा विनिमय नियन्त्रण के द्वारा ही इस स्थिति में सुधार और निराकरण हो सकता था। सरकार के सामने ऐसी कागजी मुद्रा चलाने के अतिरिक्त और कोई चारा ही न था जो मुद्रा सोने-चाँदी में न बदली जा सके।

4. **बैंकिंग सुविधाओं का विकास**- मुद्रा-विनिमय तथा बैंकों की समस्या को हल करने की दिशा में पहला कदम मेजी सरकार ने 1872 ई. में उठाया। इन्हों ने अमेरिकन विनिमय मुद्रा तथा बैंकिंग प्रणाली का विशेष अध्ययन कर यह सुझाव दिया कि अमेरिकन प्रणाली के आधार पर राष्ट्रीय बैंकों का विनिमय कर दिया जाए। 1873 ई. में जापान में पहला राष्ट्रीय बैंक (National Bank) स्थापित किया गया और दो धनी परिवारों को आदेश दिया गया कि वे बैंक को चलाने के लिए आवश्यक धन लगाएँ। प्रारम्भ में बैंकिंग का विकास काफी धीमा था और 1876 ई. तक जापान में केवल 4 बैंक थे। इसी वर्ष बैंकों के नियमन में संशोधन किया गया और नोटों को मुद्रा में बदलने की अनुमति दे दी गई।

इसके बाद जापान में बैंकिंग का बड़ी तेजी के साथ विकास हुआ। 1879 ई. तक जापान में 151 राष्ट्रीय बैंकों की स्थापना हो गई थी। बैंकिंग के विकास के साथ ही अपरिवर्तनीय नोटों की संख्या में वृद्धि हुई। इन नोटों को मेजी युग में जापान की प्रगति मेजी पुनःस्थापना से जापान में एक नए युग का आरम्भ हुआ। इस युग में जापान के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक सभी क्षेत्रों में अभूतपूर्व प्रगति हुई और जापान, जो कि एक पिछड़ा हुआ देश था, विश्व का एक शक्तिशाली देश बन गया। मेजी युग में जापान ने निम्नलिखित क्षेत्रों में अत्यधिक प्रगति की।

5. **कृषि का विकास**- क्लाइड के अनुसार, "आरम्भिक मेजी कालीन जापान में औद्योगीकरण की यह प्रणाली ऐसे समाज में चलाई गई जो अधिकांशतः कृषिप्रधान था, इसलिए यह आश्चर्यजनक नहीं कि मेजी के नेता उसी क्रान्तिकारी उत्साह से कृषि को नई व्यवस्था में जुट गए जो उन्होंने राजनीति और उद्योग में दिखाया था। इस काल में कृषि का भी खूब विकास हुआ।

6. **शिक्षा के क्षेत्र में सुधार**- मेजी शासनकाल में जापान में शिक्षा के क्षेत्र में अनेक महत्त्वपूर्ण सुधार किए गए। जापान प्रारम्भ से ही पश्चिम के ज्ञान-विज्ञान का अध्ययन करने के लिए बहुत उत्सुक था। 1811 ई. में शोगुन शासन ने पश्चिमी भाषाओं के ग्रन्थों को जापानी भाषा में अनुवाद करने के लिए जो 'बाशो शीराबेशी' नामक संस्था स्थापित की थी, उसे 1857 ई. में एक शिक्षण संस्था का रूप दे दिया गया, जिसमें पश्चिमी भाषाओं और विज्ञानों की शिक्षा दी जाती थी। कुछ जापानियों ने इसी उद्देश्य से पश्चिमी देशों की यात्रा भी की थी। अतः पुनःस्थापना के बाद शिक्षा के क्षेत्र में बड़ी तेजी के साथ प्रगति हुई। 1868 ई. की शाही शपथ घोषणा में कहे गए इस वाक्य कि 'हर स्थान से ज्ञान प्राप्त किया जाए' के अनुसार 1871 ई. में शिक्षा विभाग की स्थापना की गई। एक कानून

@amanwan450

बनाकर यह व्यवस्था कर दी गई कि प्रत्येक व्यक्ति मध्य रेलगाड़ी चलने लगी। 1893 ई. में जापान में 1,500 मील लम्बी रेलवे लाइनें बिछा दी गई। इस रेलवे मार्ग ने देश के आन्तरिक व्यवसाय तथा व्यापार की उन्नति में काफी सहायता पहुँचाई। इसके फलस्वरूप जापान में राष्ट्रीयता के विकास में भी काफी सहायता मिली।

इसके साथ ही सरकार ने डाक विभाग का भी संगठन किया। 1868 ई. में पहली बार टेलीग्राफ का प्रयोग किया गया। कुछ वर्षों में ही जापान में अनेक डाकघरों की स्थापना हो गई। रेलवे तथा डाक के विकास के साथ-साथ मेजी सरकार ने जहाजों के निर्माण की ओर ध्यान दिया तथा 19वीं सदी के अन्त तक नौ- सैनिक शक्ति में आश्चर्यजनक प्रगति कर ली। 1870 ई. के लगभग जापान में सौ-सौ टन के जहाजों का निर्माण होने लगा। 1883 ई. में नागासाकी के कारखाने में 10 और हयोगो के कारखाने में 23 भाप से चलने वाले जहाज तैयार हुए। 1890 ई. तक जापान विश्व की एक प्रमुख सामुद्रिक शक्ति वाला देश बन गया।

**प्रश्न 15. 'नाइतो कोनन' जो एक लेखक था। वह क्यों प्रसिद्ध था? स्पष्ट कीजिए।**

**उत्तर- नाइतोकोनन-** जापानी विद्वान नाइतोकोनन ने चीन पर अनेक महत्वपूर्ण कार्य किये। इनके लेखों ने अन्य जापानी लेखकों को प्रेरणा दी। कोनन पत्रकार था। उसने लेखन में नवीन तकनीकी ज्ञान व पत्रकारिता के सुन्दर अनुभव का प्रयोग किया। 1907 ई. में कोनन के महत्वपूर्ण सहयोग से क्योतो विश्वविद्यालय में प्राच्य अध्ययन विभाग की स्थापना की।

कोनन ने शिनारॉन में इस बात पर ठोस बल दिया कि सुंग काल से चला आ रहा अभिजात वर्गीय नियंत्रण व केन्द्रीयकरण को गणतांत्रिक सरकार द्वारा ही खत्म किया जा सकता है। चीनी इतिहास में चीन को आधुनिक बनाने की क्षमता है ऐसा कोनन का विचार था।

**प्रश्न 16. कोरिया की कहानी पर संक्षिप्तक टिप्पणी लिखिए।**

**उत्तर-** उन्नीसवीं सदी के अंत में, कोरिया के जोसोन वंश (1392-1910) ने आंतरिक और सामाजिक संघर्ष का सामना किया और इसके साथ ही उसे चीन, जापान और पश्चिमी देशों का विदेशी दबाव भी सहना पड़ा। इन सबके बीच कोरिया ने अपनी सरकारी संरचनाओं, राजनयिक संबंधों, बुनियादी ढांचे एवं समाज के आधुनिकीकरण के लिए सुधार नीतियाँ लागू की। दशकों के राजनीतिक हस्तक्षेप के बाद, साम्राज्यवादी जापान ने 1910 में अपनी कॉलोनी के रूप में कोरिया पर जबरन कब्जा कर लिया, जिससे 500 वर्ष से अधिक समय से चले आ रहे जोसोन राजवंश का अंत हो गया, किंतु कोरियाई लोग जापानियों द्वारा किए जा रहे कोरियाई संस्कृति एवं नैतिक मूल्यों के दमन से काफी नाराज थे। आजादी के इच्छुक कोरियाई लोगों ने जापानी औपनिवेशिक शासन के खिलाफ प्रदर्शन किया, उन्होंने एक अस्थायी सरकार की स्थापना की और कैरो, याल्टा और पॉट्सडैम सम्मेलनों जैसी अंतर्राष्ट्रीय बैठकों में विदेशी नेताओं से अपील करने के लिए प्रतिनिधि मंडल भेजे।

जापानी औपनिवेशिक शासन 35 साल के बाद अगस्त 1945 में द्वितीय विश्व युद्ध में जापान की हार के साथ समाप्त हुआ, हालांकि यह कोरिया के भीतरी और बाहरी स्वतंत्रता कार्यकर्ताओं का लगातार प्रयास था, जो जापान की हार के बाद कोरिया की स्वतंत्रता सुनिश्चित कर पाया। मुक्ति के बाद कोरियाई उपद्वीप को अस्थायी रूप से विभाजित कर दिया गया। जिसमें उत्तरी क्षेत्र में सोवियत संघ दक्षिण क्षेत्र में यू.एन. द्वारा संचालन किया गया, किंतु दोनों ही क्षेत्र जापानी सेना को भंग करने के लिए परिश्रम करते रहे, हालांकि 1948 में उत्तर और दक्षिण में अलग-अलग सरकारें स्थापित होने के साथ यह विभाजन स्थायी रूप से स्थापित हो गया।

**प्रश्न 17. चीनी साम्यवादी दल का उदय किस प्रकार हुआ?**

**उत्तर- चीनी साम्यवादी दल का उदय-** 1937 में जब जापानियों ने चीन पर हमला किया तो कुओमीनतांग पीछे हट गया। इस लंबे और थकाने वाले युद्ध ने चीन को कमजोर कर दिया। 1945 और 1949 के दरमियान कीमतें 30 प्रतिशत प्रति महीने की रफ्तार से बढ़ीं। इससे आम आदमी की जिंदगी तबाह हो गई। ग्रामीण चीन में दो संकट थे: एक पर्यावरण संबंधी, जिसमें बंजर ज़मीन, वनों का नाश और बाढ़ शामिल थे। दूसरा, सामाजिक-आर्थिक जो विनाशकारी ज़मीन प्रथा, ऋण, आदिम प्रौद्योगिकी और निम्न स्तरीय संचार के कारण था।

चीन की साम्यवादी पार्टी की स्थापना 1921 में, रूसी क्रांति के कुछ समय बाद हुई थी। रूसी सफलता ने पूरी दुनिया पर ज़बर्दस्त प्रभाव डाला। लेनिन और ट्रॉट्स्की जैसे नेताओं ने मार्च 1918 में कॉमिंटर्न या तृतीय अंतर्राष्ट्रीय (Third International) का गठन किया जिससे विश्व स्तरीय सरकार बनाई जाए जो शोषण को खत्म कर सके। कॉमिंटर्न और सोवियत संघ ने दुनिया भर में साम्यवादी पार्टियों का समर्थन किया। उनकी परंपरागत मार्क्सवादी समझ थी कि क्रांति शहरी इलाकों में मज़दूर वर्गों के ज़रिये आयेगी। शुरू में विभिन्न देशों के लोग इससे बहुत आकर्षित हुए लेकिन जल्द ही यह सोवियत यूनियन के स्वार्थों का हथियार बन गया और 1943 में इसे खत्म कर दिया गया। माओ त्सेतुंग (1893-1976) ने, जो

@amarwah450

Subscribe YouTube channel - Amarwah unity

सी. सी. पी. के प्रमुख नेता के रूप में उभरे. क्रांति के कार्यक्रम को किसानों पर आधारित करते हुए एक अलग रास्ता चुना। उनकी सफलता से चीनी साम्यवादी पार्टी एक शक्तिशाली राजनीतिक ताकत बनी जिसने अंततः कुओमीनतांग पर जीत हासिल की।

**प्रश्न 18. चीन द्वारा आधुनिकीकरण के लिए अपनाए गए रास्तों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।**

**उत्तर-** चीन का आधुनिक इतिहास संप्रभुता की पुनर्प्राप्ति, विदेशी कब्ज़े के अपमान का अंत और समानता तथा विकास को संभव करने के सवालों के चारों ओर घूमता है। चीनी बहसों में तीन समूहों के नज़रिए झलकते हैं। कांग योवेल (1858-1927) या लियांग किचाउ (1873-1929) जैसे आरंभिक सुधारकों ने पश्चिम की चुनौतियों का सामना करने के लिए पारंपरिक विचारों को नये और अलग तरीके से इस्तेमाल करने की कोशिश की। दूसरे, गणतंत्र के पहले राष्ट्राध्यक्ष सन यात—सेन जैसे गणतांत्रिक क्रांतिकारी जापान और पश्चिम के विचारों से प्रभावित थे। तीसरे, चीन की कम्युनिस्ट पार्टी युगों-युगों की असमानताओं को खत्म करना और विदेशियों को खदेड़ देना चाहती थी।

आधुनिक चीन की शुरुआत सोलहवीं और सत्रहवीं सदी में पश्चिम के साथ उसका पहला सामना होने के समय से मानी जा सकती है; जबकि जेसुइट मिशनरियों ने खगोलविद्या और गणित जैसे पश्चिमी विज्ञानों को वहाँ पहुँचाया। इसका तात्कालिक असर तो सीमित था, पर इसने उन चीज़ों की शुरुआत कर दी, जिन्होंने उन्नीसवीं सदी में जाकर तेज़ गति पकड़ी, जब ब्रिटेन ने अफ़ीम के फ़ायदेमंद व्यापार को बढ़ाने के लिए सैन्य बलों का इस्तेमाल किया।

**प्रश्न 19. सन यात सेन की तीन सिद्धान्त क्या थे? स्पष्ट कीजिए।**

**उत्तर-** डॉ. सन यात-सेन ने अपने क्रान्तिकारी जीवन के प्रारम्भ से ही अपने राजनीतिक विचारों को तीन सिद्धान्तों के रूप में रख दिया था। ये सिद्धान्त निम्नलिखित थे-

**1. राष्ट्रीयता-** चीन में सदियों से जहाँ एक ओर सांस्कृतिक एकता तो मौजूद थी, वहीं दूसरी ओर राजनीतिक एकता का पूर्ण अभाव था। यह अभाव बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में भी विद्यमान था। जनता में स्थानीय तथा प्रान्तीय भावनाएँ शक्तिशाली थीं। यही कारण था कि विदेशी साम्राज्यवादी शक्तियाँ चीन में अपना प्रभाव स्थापित करने में सफल हो रही थीं। डॉ. सनयात सेन।

**2. राजनीतिक लोकतन्त्र-** डॉ. सन यात-सेन लोकतन्त्र के पक्के समर्थक थे। इसी कारण उन्होंने चीन में सदियों से चले आ रहे मंचू राजवंश को समाप्त करके राजवंश की प्राचीन परम्परा को समाप्त कर दिया था। उन्हें जनता की शक्ति में विश्वास था और यही कारण था कि वे लोकतन्त्र के समर्थक थे। उन्होंने अपना अधिकांश जीवन विदेशों के गणतन्त्रीय वातावरण में व्यतीत किया था और स्वयं वहाँ के विकास को देखा था। यही कारण था कि उन्होंने चीन में क्रान्ति करके गणतन्त्र की स्थापना को अपने जीवन का पवित्र लक्ष्य बना लिया था। 1924 ई. में लोकतन्त्र के विषय में उनके विचार बहुत अधिक मजबूत हो गए थे। उनका विचार था "सफल लोकतन्त्र में सरकार को शासन प्रणाली, कानून, कार्य, न्याय, परीक्षा तथा नियन्त्रण के पंच शक्ति विधान पर आधारित होनी चाहिए।' लोकतन्त्र की सफलता की अन्तिम चोटी पर पहुँचने के लिए सेन ने तीन बातों पर विशेष बल दिया था। सबसे पहले देश में सैनिक शक्ति के प्रभुत्व की स्थापना करके देश में पूरी शान्ति तथा व्यवस्था स्थापित की जाए। इसके बाद देश में राजनीतिक चेतना का प्रसार किया जाए और अन्त में वैधानिक तथा लोकतन्त्रीय सरकार का निर्माण करके देश अपने लक्ष्यों को प्राप्त करें।

**3. जनता की आजीविका-** सन यात-सेन ने मानव जीवन में भोजन की भारी आवश्यकता का अच्छी तरह से अनुभव कर लिया था और यही कारण था कि उन्होंने कृषक वर्ग के उत्थान की ओर अधिक ध्यान दिया। उनका मत था कि 'भूमि उसकी है जो उसे जोतता है। समाज के अन्य वर्गों की जीविका के प्रश्न का समाधान वे सामाजिक विकास के साथ करना चाहते थे। वे साम्यवादियों के समान भूमि के समान वितरण के सिद्धान्त के पक्ष में थे। इस समय उनकी नीति एक प्रबल साम्यवादी की न होकर एक समाज-सुधारक की नीति थी, परन्तु वे मार्क्स के भौतिकवाद के विरोधी थे और अच्छी तरह से यह अनुभव करते थे कि मार्क्स के सिद्धान्तों को चीन में लागू नहीं किया जा सकता है। सन यात—सेन के तीन सिद्धान्तों पर विचार करने के पश्चात् यह स्पष्ट होता है कि डॉ. सेन के सिद्धान्त मार्क्सवाद से बिल्कुल भिन्न थे। सेन के राष्ट्रीयता, लोकतन्त्र और जनता की जीविका के सिद्धान्तों में मार्क्स के वर्ग संघर्ष का कोई स्थान नहीं है। और न ही इन सिद्धान्तों में मार्क्स के समाजवादी अर्थतन्त्र की स्थापना के लिए कोई विशेष बल दिया गया है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि सन यात-सेन न तो मार्क्स की शुद्ध समाजवादी विचारधारा के समर्थक थे और न ही साम्यवादी नीति का अन्धानुकरण करने वाले थे। इस प्रकार सन यात-सेन को साम्यवाद का कट्टर समर्थक नहीं कहा जा सकता है। ■

@amarwan450

Amarwah unity
AU
@amarwah450
Amarwah Unity YouTube
SUBSCRIBED
15.9K subscribers • 250 videos
Stand with unity, an educational channel for the helping students & providing study materials

# Students Unity

public channel

## Description

Paid promotion available contact 📞📞
@Unity450_bot
Instagram https://instagram.com/amarwah450

Join our PDF Channel https://t.me/amarwah455

@amarwah450

Paid promotion available contact :-
@Unity450_bot

t.me/amarwah450
Invite Link

Notifications
On